॥ श्री रामः शरणं मम ॥
रामायण
श्री रामकिंकर विचार मिशन
श्रद्धा • भक्ति • विश्वास

सरित सागर

स्वामी मैथिलीशरण

रचना

स्वामी मैथिलीशरण

आईएसबीएन : 978-81-941291-1-0

प्रथम संस्करण

संवत् 2076, आषाढ़ पूर्णिमा, 16 जुलाई 2019

संपूर्ण सेवा

श्री पुरुषोत्तम माहेश्वरी

(दिल्ली)

संपूर्ण पुस्तक साज - सज्जा एवं संयोजन

श्री चंद्रहास शंखधार

(बरेली)

प्रकाशक एवं वितरक

शिल्पायन बुक्स

१६१७, उल्धनपुर, नवीन शाहदरा,

निकट शीतला माता मंदिर, शाहदरा, दिल्ली-110032

संपर्क : 8368310904

ई-मेल : shilpayanbooks1@gmmail.com

सरित सागर

निवेदन

कबि न होउँ नहिं चतुर कहाबउँ । मति अनुरूप राम गुन गावउँ ।।
कबि न होउँ नहिं बचन प्रबीनू । सकल कला सब बिद्या हीनू ।।

रामचरित मानस को तुलसीदास जी ने रचा ये लोक दृष्टि है और शंकर जी ने उसकी रचना की यह वेद दृष्टि है ।

सरित सागर मैंने रचा, यह लोक दृष्टि है पर वस्तुतः यह गुरुदेव की कृति है यह तत्त्व दृष्टि है, सत्य, तथ्य, सब यही है ।

अब ये आपके हाथ में है ये मेरे आनंद का विषय है । जिन - जिन हाथों में यह पुस्तक है उन सबने मुझे सींचा है, उनमें महाराज श्री हैं ।

रात दो बजे से, कभी प्रातः, कभी प्लेन में, कभी कार में जब गुरुदेव की कृपा-वायु का झोंका आया तो जिस दिशा से वह कृपा आई उस ओर की सुगंध ले आई । वायु और सुगन्ध सब गुरुदेव ही हैं ।

वे मुझसे और मैं उनसे संवाद करता हूँ । यह प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष है । गुरुदेव के साथ जो मेरा समय बीता, वह माने कविता थी और शेष जीवन उस कविता की व्याख्या है ।

गर्भ में पोषित बालक की तरह मेरा लेश मात्र कोई पुरुषार्थ नही है ।अभी सैकड़ों काव्य ऐसे और भी हैं जो बिखरे पड़े हैं, कहीं न कहीं मुझे स्वयं ही नहीं पता ।

श्री पुरुषोत्तम जी माहेश्वरी हमारे महाराज श्री के उन भक्तों में हैं जो पर्दे के पीछे रहकर अपनी भूमिका करते हैं और भावपूर्ण रूप में करते हैं । ऐसी अनेक सेवाएँ हैं जो होती हैं पर कर्ता नहीं दीखता है। वे यही कहते हैं कि मैं तो गुरुदेव की ही सेवा कर रहा हूँ ।

इसके प्रकाशन में मेरे परम प्रिय शिष्य चन्द्रहास शंखधार की भूमिका हनुमान जी की है । जिसके बिना रामलीला ही नहीं होती है । दिन रात लग कर सारी की सारी साज, सज्जा, संयोजन उन्हीं का है।

हमारे महाराज श्री के कृपापात्र श्री मनोज सराफ ने एक दिन फोन पर कहा कि भाई जी लोगों से कहिए कि आपके इस संकलन को काव्य न कहें ये तो सब स्तुतियाँ हैं । हृदय द्रवित हो गया उनकी यह भावना सुनकर ।

डा. जया सिंह बहुत ही भावपूर्ण काव्य लिखकर मुझे भेजती रहीं । काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के ज्योतिष विभागाध्यक्ष डा. गिरिजाशंकर जी शास्त्री, श्री विष्णु प्रकाश त्रिपाठी, कार्यकारी संपादक, दैनिक जागरण समूह, श्री राजनारायण मिश्र.(राजू भैया), दैनिक जागरण ने बहुत उत्साहित किया पुस्तक प्रकाशन के लिए ।

सबकी माँगलिक भावनाओं का परिणाम यह पुस्तक है ।

गुरुदेव की चरण रज
मैथिलीशरण
(किंकर नंदन)

समर्पण

दिल्ली में पूज्य श्री रामकिंकर जी महाराज के जितने भी प्रवचन हुए, मैंने उनको सुनकर गंगा स्नान का सुख लिया और धन्यता पाई। उनके प्रवचनों को मैं समर्पित था और मैं नित्य ही उनके प्रवचनों में अपनी धर्मपत्नी श्रीमती इन्दु माहेश्वरी और दोनों छोटी बेटियों, मानसी और प्रियंका को भी ले जाता था।

तुलसी की आत्मा और परमात्मा जिनमें एक साथ निवास करते थे, ऐसे थे श्री रामकिंकर जी महाराज। उनको सुनना एक उपलब्धि थी।

श्रद्धेय श्री मैथिलीशरण जी जिनको हम प्रारम्भ से ही "भाई जी" कह करके पुकारते आये हैं, इनका पूरा जीवन गुरु कृपा की सजीव व्याख्या है। मैंने अपने जीवन में ऐसी गुरु सेवा, गुरु भक्ति और निष्ठा किसी अन्य में नहीं देखी। उनकी सहजता, सरलता, और निखालसता किसी को भी आकर्षित कर देती है और वो उनके निकट आ जाता है।

भाई जी के प्रवचन और उनके काव्य की शैली अपनी निजी है। यह काव्य और प्रवचन दोनों ही, उनके गुरुदेव श्री रामकिंकर जी महाराज की कृपा के गोमुख से निकला और संगम करता हुआ अब भगवान के कृपा सागर में मिल गया है।

महाराजश्री के पंच महाभूत शरीर पूरा होने के पश्चात् मुझे अपने जीवन में कुछ अभाव सा लगने लगा था, तब घटनाक्रम कुछ ऐसा हुआ जब मुझे भाई जी पुनः मिल गये और हम लोग पुनः उनके बहुत निकट आते गये।

इस बीच मैं ऋषिकेश में उनके पास गया, जहाँ वे कविता लिख रहे थे, मैं उनकी कृतियों से अभिभूत हुआ और मैंने उनसे यह अनुरोध किया कि आपके इस काव्य ग्रंथ को मैं प्रकाशित करना चाहता हूँ। उन्होंने बिल्कुल सहज रूप से मेरी इस भावना को स्वीकार किया और उसका परिणाम यह हुआ कि यह पुस्तक आपके समक्ष प्रस्तुत है।

मैं इसको पूज्य श्री रामकिंकर जी महाराज की ही सेवा मान रहा हूँ। संभवतः यदि मैं यह सेवा उनकी करता तो शायद उन्हें संकोच होता पर श्रद्धेय मैथिलीशरण जी की इस अकल्पनीय कृति का प्रकाशन महाराजश्री के लिए अत्यधिक आनंददायी होगा और वे मुझे विशेष आशीर्वाद देंगे।

आशा है प्रेमी जन इसका पूरा लाभ उठायेंगे।

विनीत

पुरुषोत्तम माहेश्वरी

इंदु माहेश्वरी

।। श्री रामः शरणं मम ।।

परमपूज्य गुरुदेव श्री रामकिंकर जी महाराज

।। कृतज्ञता ।।

नभ नील ने नील अनंत दियो,जल सागर ने भी अनंत दियो,
सरिता ने पवित्र प्रवाह दियो पितु मातु ने लाड़ अनंत दियो,
धन धान्य सभी धरणी ने दियो जग में सबने सम्मान दियो,
सियराम सुप्रेम सुशील सनेह तुलसी मोहि मानस प्राण दियो !!

॥ अनुक्रम ॥

वेदन को सार भाग... 1
तुलसी की वाणी में... 2
द्वादश कला राम की... 3
तुलसी के छंदन में... 4
मातन को वात्सल्य सत्य... 5
तुलसी की कथा तुलसी की जथा... 6
जल न होता यदि सागर में... 7
तुलसी की कथा जस वेद जथा... 8
श्रीराम के उस भक्त की... 9
भगवंत कथा रसवंत जथा... 10
नहिं मानस है तुलसी की कृती... 11
आरति तुलसीदास की कीजै... 12
रामचरित तो नाम एक है... 13
बालकाण्ड है मूल... 14
दर्पण में मुख देखकर... 15
धर्म तरु के मूल हैं... 16
मायामय मारीच तब... 17
राम मिले हनुमान से... 18
सुन्दर सीताराम है... 19
वायु पुत्र सुन्दर सदन... 20
जनक लली सुन्दर शिखर... 21
अंगद चरण संत नीति है... 22
भरत प्रेम सागर उठेउ... 23
काकभुशुण्डि खगपतिहि सुनाई... 24
समा गया ब्रह्माण्ड अण्ड में... 25
अब मोहि हरि चरनन की पड़ी... 26
रजनी तनि पेख विलोक जरा... 27
किंकर के हनुमान ये... 28
प्राची दिशा दिवाकर जागे... 29
धर पग धरत... 30
चरण कमल नयनन उर लाई... 31
बारौ जनकलली के मुख पर... 32
तुलसी की जुहार लगी... 33
सिय ज्यों निकसी प्रियतम... 34
सिय को लिवाय जाते हो... 35
कुंद इंदु सम देह... 36
चित्रकूट की भूमि नहीं... 37
शार्दूल चर्म ललाट गंग... 38
नहिं अग्नि परीक्षा लीन्ह कभी... 39
हमरी सिय राम से प्रेम करें... 40
मैं हूँ एक अभियान... 41
सुन्दरता है मूल मध्य में... 42
हे राम राम नमामि... 43
चित्रकूट महँ बसत हैं... 44
शिव भयंकर शिव शंकर... 45
जादूगर जादू किया... 46
मात्र नहीं है... 47
कामद के चार मुख... 48
तिनक तिनक धिन... 49
जिनको न शूल कर में... 50
शिव विष्णु और ब्रह्मादि... 51
हे व्याप्त कृपा के व्याप्त रूप... 52
करुणाकरो करुणानिधान... 53
चिदाकाश आकाश शिवा के... 54
मंगलमय कल्याणमय गुरु मेरे दातार... 55
आरति श्री गुरुवर की - जय जय... 56
मैं अनंत की बाँहों में... 57
दीप शिखा बन उदित हुआ हूँ... 58
अंजन जिन दृग में लगा... 59
कभी कभी मैं खो जाता हूँ... 60
शिष्य शून्य मैं, संख्या गुरु हैं... 61
परा भाव जब निराकार था... 62
हे मेरे गुरुदेव अपने... 63
आसमां से आ के मुझसे... 64
शून्य दिखा आकाश शून्य में... 65
बोलना अब कुछ नहीं है... 66
चरण कमल में कुंद... 67
अंजन जिन दृग में लगा... 68
गुरु ऊर्ध्व और मूल्य हैं... 69
कभी कोई जीवन में आता... 70
दीपक में बाती न बढ़ाओ... 71
दास्ताँ मैंने सुनाई... 72
जगमगाते हैं सितारे... 73
मेरी यादें उन्हीं को... 74
हिम का जैसा नहीं... 75
देखता हूँ सब जगह मैं आपको... 76
गीत को मैं गुनगुनाता... 77
एक दिन मैंने स्वयं के... 78
हम हवा में उड़ रहे हैं... 79
परम शुभं, शुचि व्रतं... 80
गुरु संग मेरा हर दिन... 81
शरण जब पड़ा समाधि... 82
तुम संग सात रंग मोहि लागे... 83
हे मेरे गुरुदेव आकर... 84
गुरु थाल की जूठन... 85
मधुमास में मधुरूप में... 86
नेत्र कर लिए बंद... 87
हे मेरे प्राणों से प्यारे... 88
खोजते ही रह गये हम... 89
अभ्यंतर में ग्रन्थि... 90
हम चले थे जिस डगर पर... 91
रचना अब तू बंद कर... 92
ललित मधुर रस से भरे... 93
निकली कास आस की... 94
रे मन शरण राम की धर ले... 95
हे प्रभु! राखियो अब शरण... 96
कृपा तिजोरी मिल गई... 97
सो गया हूँ, मत जगाओ... 98
जो पलकें न होतीं... 99
शून्य भीति पर लिखता... 100
स्वर यहीं रह जायेंगे... 101
द्वैत हमें लगता है प्यारा... 102
जो नहिं करता दीखता... 103
आज मोहि अधरन की सुधि आई... 104
सिया जू मोरी करुणा... 105
दीप शिखा की ज्वाला... 106
हे!!! पतित पावन प्रभू... 107
मेरी स्वाँसें कहीं... 108

रे मन अब भज प्रभु चरणा... 109
हे प्राणनाथ रघुनाथ... 110
चलन चहत मन... 111
मैं ऐसा प्रतिबिम्ब... 112
कनक भवन के द्वार... 113
नाथ मैं अनाथ हूँ... 114
एक अनोखी शून्य धरा पर... 115
दीन हौं मैं खीन हौं... 116
चित्त की उस भीति पर... 117
मरुभूमि है वह चित्त ही... 118
हृदय पिघल कर जब... 119
कुंद कली सी सिया... 120
साधुन के संग बैठ के... 121
मेरे जीवन के मधुवन में... 122
जीवन में अमृत भर दूँगा... 123
हे हरि! तुम सम और कोउ नाहीं!... 124
आकाश को देखा जहाँ... 125
मो सम अधम अधम कोऊ नाहीं... 126
श्री राम के पद कमल की... 127
आँखें जब मेरी बरसें... 128
नील सरोरुह पीत... 129
आज अभी सपनों में... 130
रजनी की अंधियारी में... 131
हे नील कमल अब... 132
कालिन्दी तट के रज... 133
मंगल कलश लै सुभग... 134
रे मन भज अब पावन नाम... 135
भलो मेरो एकै अवध किशोर... 136
जब सारा जग सो जाता है... 137
सिय संग खेलै... 138
हम हृदय की भीतियों में... 139
यश धन गज धन रतन घन... 140
मन जिसमें नित रत रहता हो... 141
घोर अमावस भी आ जाये... 142
मोर पक्ष को सिर पर रखा... 143
निराकार हो गया... 144
वामांग दिया प्रभु ने सिय को... 145
हे गोवर्धन गिरिधारी... 146
जो त्रिशूल धरें... 147
संसार असार में... 148
हे धन्य धरा... 149
मैं कल्पना में घूमता... 150
अम्मा नित सोया करती थी... 151
बस जरा सा काम है... 151
चहक उठी हैं... 153
कभी कभी तो धूप छांव भी... 154
दीपक सा हो लक्ष्य कहीं भी... 155
जीवन प्रतिपल चलता जाता... 156
विजया दशमी तभी मोह... 157
तनिक कोई आ करके... 158
चंदा मामा कल जब आना... 159
जीवन तो ऐसा सपना है... 160
मैं तो हूँ सम में ही... 161
न तो मैं तब और था कुछ... 162
अर्जन का मन्तव्य विसर्जन... 163
जो भी समय मिला है तुमको... 164
अस्त शब्द जब हो जाये... 165
काल एक भूमि है... 166
जिसको अपना कहीं कोई... 167
रक्त किसलय के दलों में... 168
ज्ञान तो बस आज होगा... 169
तुम बख्त को कोसो नहीं... 170
मैं एक ऐसा गीत हूँ... 171
आज हमें कुछ दिखा भूमि में... 172
शूल्य भीति पर प्रेम तूलिका... 173
बादलों ने आज आकर... 174
माँ संभालों आज मुझको... 175
एक था वह काल ऐसा... 176
हम गीत मीत के ही लिखते... 177
हिरना दौड़ा जाये... 178
बाँधना यदि आज राखी... 179
बनती है दिन रात समस्या... 180
न तुमको देखा करता हूँ... 181
भूल जाओ अब बीती बातें... 182
भारत देश नहीं है केवल... 183
चिड़िया को दाना कोइ दे दे... 184
अम्मा चिड़िया आ गई... 185
स्पन्दन ऐसा होता... 186
बस काल होता एक... 187
!! जब कुहू कुहू... 188
नौ है अंकों का पूर्ण अंक... 189
है धन्य धरा इस भारत... 190
न हवाएँ रुकी... 191
स्तब्ध हूँ यह देख कर... 192
बूँद बूँद ही आँसू... 193
तृप्त होने को चलीं हैं... 194
दोष नहीं दो कभी किसी... 195
हम तुम्हारे आँसुओं की... 196
रसाल पात बीच से... 197
हमको तो बच्चे हैं प्यारे 198
श्वेत रंग है शांत 199
नदी निरन्तर चलती रहती... 200

।। वंदौ तुलसी के चरण - १ ।।

वेदन को सार भाग जग को उतार भार ।
मानस में भक्ति की सरिता बहाई है ।।
लोक और वेद को प्रीति और नीति को ।
स्वारथ परमारथ को मरम बतायो है ।।
श्रेय और प्रेय को ज्ञाता ज्ञान ज्ञेय को ।
शोध शोध मानस में मानस दिखायो है ।।
करमन के परम लक्ष्य ज्ञेय और ध्येय राम ।
ध्याता ध्यान ध्येय को भी तत्त्व सब बतायो है ।।
व्यास और नारद ने शेष अरु सारद ने ।
रामचरितमानस में गोता लगायो है ।।
धरती आकाश में तम में प्रकाश में ।
गुपुत प्रगट ज्ञान सब कुछ दिखायो है ।।
ज्ञान भक्ति कर्म और शरणागती को मार्ग ।
मानस में चार घाट करके बतायो है ।।
भूतल पताल पै न सात सात आवरण में ।
तुलसी की भावना को कोई पार पायो है ।।

।। वंदौ तुलसी के चरण - २ ।।

तुलसी की वाणी में स्वाद और मिठास ऐसी,
सुन सुन के दिन रात श्रवण अघात न ।
तुलसी की लेखनी में सागर सी गहराई ऐसी,
डूब डूब जात मन थाह कहीं पात न ।
तुलसी की भावना में हिम सी ऊँचाई ऐसी,
मन बुद्धि चित कछु पहुँच सकत न ।
तुलसी की आँखिन में गंग सी सफाई ऐसी,
सीयराम बिनु कछु और न लखात न ।
तुलसी की चरणन में गतिशीलता है ऐसी,
हनुमान बिना कोई चल न सकत न ।
तुलसी के हाथ की उदारता महान ऐसी,
राम बिना और कोई कर न सकत न ।
तुलसी के हिए की पावनता पवन जैसी,
करत फिरत सब दिखत काहू को न ।
तुलसी के सागर में रतन अनंत ऐसे,
किंकर के भाव बिनु समझ सकत न ।
तुलसी न होते दास मोसे कहाँ खोते और,
कूकर की भाँति दुई टूक कहूँ पाते न ।
किंकर के चरणन की बलि बलि जाऊँ भैय्या,
तुलसी बिन भोजन प्रसाद बना पाते न ।

।। वंदौ तुलसी के चरण - ३ ।।

द्वादश कला राम की और तुलसी के ग्रंथ द्वादश,
द्वादशी को पारण करत व्रती लोग हैं ।
पाँच ज्ञान इन्द्री हैं पाँच कर्म इन्द्री हैं,
एक मन प्रभू लगे एकादशी होत है ।
दशरथ को सत्य प्रेम राम को प्रकट कियो,
नौ निधि को धन्य कियो कौसला के सुत ने ।
सिद्धी भी आठ ही हैं आवरण भी सात ही,
छ: ही सम्पत्ति होत छ: ही विकार हैं ।
तुलसी के मानस में सब कुछ साकार है,
पंचतत्त्व महाभूत अग्नि भी तो पाँच होत ।
तत्त्वज्ञान चार चार वेदन ने ज्ञायो है,
तीन गुण तीन शूल तीन दुख पृथ्वी पे,
द्वैत होत जीवन में तुलसी बतायो है ।
एक अद्वैत राम द्वैत रूप माया को,
तीन तीन भैयन - विशिष्ट विस्तारो है ।
ज्ञानिन को ज्ञान एक भक्ती को सार एक,
राम नाम निर्गुण में रूप भी समायो है ।
प्रेम करो राम से नेम से संसार चले,
तुलसी ने मानस में सार ये बतायो है ।

।। वंदौ तुलसी के चरण - ४ ।।

तुलसी के छंदन में राम की मुसुकान भरी,
तुलसी के दोहन में बात सिद्धांत की ।
सोरठा हैं तुलसी के गति को संभालन के,
मति परिशुद्धी की औषधी बताई है ।
पुरइन सरीखी चौपाई मोको ऐसी लागी,
ब्रह्म जल दिखत न जग ही दिखात है ।
संतन की भक्तन की चर्चा सुहात ऐसी,
राम दरबार में सुगंध शोभा छाई है ।
संस्कृत श्लोकन की गरिमा दिखात ऐसे,
वेदन ने राम जी की महिमा बताई है ।
सात सोपान विश्राम तीस नौ नौ के,
तुलसी ने ब्रह्म की परिक्रमा कराई है ।
मोसे कूर कायर कुमति से अभागे को,
किंकर की किंकर से सेवा करवाई है ।।

।। वंदौ तुलसी के चरण - ५ ।।

मातन को वात्सल्य सत्य थी पिता की प्रीति,
भय्यन में प्रेम रूप चार दिखलाये हैं ।
अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष, सत्य, तप, दया, दान,
स्वारथ परमारथ को एक में मिलाए हैं ।
बहुअन में घर वर की कैसी मरजाद होत,
राजमहल-घर-वन में तुलसी दिखाये हैं ।
मित्रन में प्रीत विश्वास और नीति प्रीति,
मीत सुग्रीव से हनुमान करवाये हैं ।
पर हित को ध्यान राख अंगद से कहत बात,
दससीस रावण को हित ही कराये हैं ।
भाव और कुभाव में बैर भाव द्वेष से भी,
मार के निशाचरन को मुक्त ही कराए हैं ।
पार करन गंगा को पार करन सागर को,
भाव औ सुभाव प्रभु दोनों दिखाए हैं ।
देख के विभीषण की साधना औ भावना को,
भेजके हनुमान पास अपने बुलाए हैं ।
वेद औ पुराणन को संतन के मंथन को,
तुलसी ने घर घर में दीपक जलाए हैं ।
तुलसी की भावना पै बलि बलि शरण जात,
राम जी को राजा तो तुलसी बनाए हैं ।

।। वंदौ तुलसी के चरण - ६ ।।

तुलसी की कथा तुलसी की जथा को बता ही सका वो अनंत ही है ।
जो अनंत-अनंत की राम कथा सब संतन के भगवंत की है ।
नित केलि भुशुण्डि के साथ करें शिव हेरि धरैं हिय राम लला को ।
सिय के पिय की सबके हिय की तुलसी की कथा हनुमंत की है ।

।। वंदौ तुलसी के चरण - ७ ।।

जल न होता यदि सागर में सब मेघ बताओ क्या करते?
फल न होते यदि वृक्षों में तो मिठास बिना सब क्या करते?
नहिं वृक्ष कहीं पर न होते पक्षी भी घरौंदा कहाँ करते?
गंगाजल यदि न बहता थल में पानी को जल फिर क्यों कहते?
यदि माँ का प्यार नहीं मिलता तब प्यार को फिर हम क्या कहते?
प्रभु का अवतार नहीं होता विश्वास कहाँ किस पर करते?
यदि जनकलली ही न होतीं तो राम अवध किसको कहते?
आकाश कहीं यदि न होता तो अनंत कहो किसको कहते?
यदि गाय नहीं होती जग में बात्सल्य कहो किसको कहते?
यदि संत नहीं जग में होते जंगम प्रयाग किसको कहते?
गुरु जीवन में यदि न आते तब प्राणनाथ किसको कहते?
तुलसी का मानस न होता वेदों का सार किसे कहते?

तुलसी की कथा जस वेद जथा नहिं दंत कथा सत्संग यथा ।
किमवंति कथा न कथा न व्यथा यह गंग तरंग हरे विपदा ।
मुनिवृन्द सुयोग समाधि करें निरखंत लला की घटा सी छटा ।
सुखकंद नहीं मकरंद नहीं विचरंत मही महि होत जथा ।
सब ग्रन्थ अनंत भी अंत भऐ तुलसी जस शालिग्राम शिला ।
जप जोग समाधि किए न किए रघुनंदन दरस हमें न मिला ।
सब छाड़ सियापिय राम भजो अब अंत लसंत सदा विपदा ।
यदि राम नहीं तुलसी में मिले तो हजार बेगार करे फिरता ।
ये अनादि उमापति की रचना यह आदि महाकवि की छवि है ।
व्यासादि धरा पे भये जितने यह अनुभव है उनका अपना ।
गुरु साखि की राखि कहौं सब सों सब छाँड़ अभी अपना सपना ।
सब संत कहें तुलसी बिन तो बस पेट भरा न प्रसाद बना ।

।। वंदौ तुलसी के चरण - ९ ।।

श्रीराम के उस भक्त की करता हूँ मैं अब आरती ।
जिस भक्त की भक्ती पे तो हर संत की मति हारती ।
जिसके हृदय की भीति पर सियराम की बस आरती ।
जो नित करे यह आरती निर्मल हृदय कर डालती ।

सब आरतों की आरती भव पार यह कर डालती ।
हर लेत सबकी आरती जो नित उतारे आरती ।
यह भरत की है आरती भय्या लखन की आरती ।
सौमित्र के प्रति मौन की दशरथ कुँअर की आरती ।

जय मातु कौशल्या सुमित्रा कैकई की आरती ।
जय अंजनी के लाल की हनुमान की यह आरती ।
लक्ष्मण के प्राणों की प्रिया उर्मिला की यह आरती ।
माण्डवी श्रुतिकीरति विमल मति सीय की यह आरती ।

काशी रमण की आरती हर विघ्न को यह टालती ।
गणनाथ की यह आरती नारद मुनि की आरती ।
ये गरुड़ याज्ञवल्क्य की भुशुण्डि की यह आरती ।
शिवजी के हृदय सरोज के श्री राम की यह आरती ।

हे राम के किंकर प्रभू तुलसी की है यह आरती ।
हुलसी के तुलसीदास की सब पातकों से तारती ।
सब मातु की सब भ्रात की श्री अवध की यह आरती ।
थाली प्रसादी राम की तुलसी की है यह आरती ।

।। वंदौ तुलसी के चरण - १० ।।

भगवंत कथा रसवंत जथा सुख सागर गागर हैं तुलसी,
संसार व्यथा संसार जथा भव तारन आइ गये तुलसी ।
सब संत अनंत कहें जिनको सो अनंत वसंत बने तुलसी,
जिन्ह मानस सागर घोल दियो सो रसाल कमाल बने तुलसी ।
शिव शीश धरी जिस गंग तरंग विहंग पियें रसको तुलसी,
सब चातक कोकिल कीर चकोर अब हंस बने हमरे तुलसी ।
सब खार भरे भव सागर में अमृत भरवाए गये तुलसी,
हमरे हिए में हमरे जिए में जीवंत अनंत भये तुलसी,
किंकर चरणामृत पान करो अब शरण भए हम तौ तुलसी ।।

।। वंदौ तुलसी के चरण - ११ ।।

नहिं मानस है तुलसी की कृती नहिं और कछू तुलसी ने रचायो ।
नहिं दैत्यन को कोई मार सको हनुमान कहूँ न लंक जलायो ।
नहिं सागर सेतु बनायो कोई नहिं द्रोण से बूटी संजीवनि लायो ।
तुलसी कहैं राम गरीब निवाज जो चहैं सो करैं जो चहैं सो करायो ।

।। वंदौ तुलसी के चरण - १२ ।।

आरति तुलसिदास की कीजै, राम भक्ति में तन मन दीजै ।
वेद पुराण शास्त्र सम्मत मत, सार अंस को हिय धरि लीजै ।।१।।

तुलसिदास को गुरु करि लीजै,
फिर चहुँ दिसि सब मंगल कीजै ।
प्रेम अमिय को भरि भरि पीजै,
आनंदमय सब जीवन कीजै ।

तुलसी बिनु सब गरल पदारथ, सब अनरथ स्वारथ के दायक ।
राम भक्ति बिनु भार कहावत, परमारथ पथ के सब बाधक ।।२।।

तुलसिदास को गुरु करि लीजै,
फिर चहुँ दिसि सब मंगल कीजै ।
प्रेम अमिय को भरि भरि पीजै,
आनंदमय सब जीवन कीजै ।

प्रणव तत्त्व श्रीरामचन्द्र हैं, शिव जिनके प्रिय परम भक्त हैं ।
रामेश्वर प्रिय उमा मातु के, राम मंत्र गति मति के दायक ।।३।।

भरत लखन सी प्रीति करीजै,
बन मराल मानस रस पीजै ।
सत् चित् आनंदमय करि लीजै,
धन्य धन्य सब धन्य करीजै ।

शरण मैथिली को करि लीजै, किंकर को किंकर कर दीजै ।
आरति तुलसिदास की कीजै, राम भक्ति में तन मन दीजै ।
वेद पुराण शास्त्र सम्मत मत, सार अंस को हिए धरि लीजै ।।४।।

।। रामचरितमानस ।।

रामचरित तो नाम एक है मानव का मानस है इसमें ।
समाधान भरपूर भरा है अमृतमय सागर है इसमें ।
मूलभूत जीवन के सारे सूत्र रत्न हैं हीरे मोती ।
अमृत के इस सुख सागर में डूबो तो आ करके इसमें ।
रामचरित तो नाम एक है जीने का साधन है इसमें ।
अर्थ धर्म और काम मोक्ष को पाने का साधन है इसमें ।
उद्‌भव संगम सागर इसमें धर्म कर्म और वृत्ति हैं इसमें ।
राम नाम और राम रूप का दिव्य महासागर है इसमें ।

भरत, लखन और रिपुसूदन का मन भावन सावन है इसमें ।
हनूमान हनुमत और हनु की सीता सुत महिमा है इसमें ।
अर्थ धर्म और काम न चाहो, मोक्ष मुक्त रति का वर इसमें ।
मातु सुमित्रा कैकेई का भाव ज्ञान कर्म है इसमें ।
तुलसी का तो प्राण इसी में गुरुवर का सर्वस्व इसी में ।
शरण तेरे तो रोम रोम में करुणा की सरिता है इसमें ।

।। बालकाण्ड की महिमा ।।

बालकाण्ड है मूल महिमामय नाम-कथा की ।
महत्तत्व है गणनायक विद्या सारद की ।
यह उमा शम्भु संवाद भुशुण्डि के मानस सर की ।
याज्ञवल्क्य और भरद्वाज श्रोता वक्ता की ।
निर्गुण का है मूल सगुण है राम रूप में ।
तुलसी के घट में, शिव के हिए सागर की ।

सुत विषयिक के पुत्र प्रेम और धर्म नेम की ।
ज्ञान भक्ति और कर्म मातु हैं चार सुतन्ह की ।
वेद पिता और मातु सभी हैं ऋचा वेद की ।
अर्थ धर्म और काम मोक्ष चारों भइयन की ।
श्रद्धा दान योग भक्ति चारों वधुअन की ।
महिमा माया शक्ति जगत की सिय जननी की ।

लिया आज अवतार निरंजन प्रेम राम की ।
शील रूप हैं राम कृपामय गुण निधान की ।
गुरु कौशिक वशिष्ठ विदेह और परशुराम की ।
उमा सहित शिव कहत कथा नित सीयराम की ।
किंकर के हैं राम तुलसि के कृपापान की ।
शरण रटे नित रामसीय के अमिय प्राण की ।

अवध जनकपुर नर नारी के प्रेम प्राण की ।
मातु सुनयना के नयना और नयन राम की ।
शुक सारिका चल दिए संग में विरह धाम की ।
मातन्ह के सुख धाम राम और अवध धाम की ।
चार लला और चार लली हिए मिलान की ।
ऋषि पतनी तर गई सिधार गई पती धाम की ।

।। अयोध्याकाण्ड की महिमा ।।

दर्पण में मुख देखकर मुकुट किया सम भाव ।
गुरु समीप गवने तुरत राम होहिं जुबराज ।
मायामय मति मंथरा मातु मती बिलगाय ।
राम गये वन सिय सहित लखन लाल प्रिय भाए ।
मातु सुमित्रा ने दिया अखिल विश्व संदेश ।
सकल जगत का सार है राम रहें जिस देश ।

सिया प्राण हैं राम में राम भाव के रूप ।
जेहि विधि सबको सुख मिले सोई करें सुर भूप ।
केवट सा प्रिय न मिला, मिला प्रेम का सार ।
चरण धोए जलपान कर गंग उतारी पार ।
रघुनंदन करुणायतन बिहँसि चले उस पार ।
भरद्वाज मुनि के निकट गये त्रिवेणी धार ।

वन भुलाई सत्संग की महिमा मुनिहि सुनाई ।
नर नारी सब गाँव के धन्य धन्य सिर नाई ।
लखन रामसिय प्रीति लखि पूर्णकाम सुखधाम ।
बाल्मीकि रुख पाइ के चित्रकूट गये राम ।
कोल भील गज सिंह सब तजि हिंसा निष्काम ।
चित्रकूट महिमा भई विन्ध्य पुजायो राम ।

कामदगिरि सब करत हैं सबके पूरन काम ।
अर्थ धर्म और काम गति परदखिना जप नाम ।
भरत प्रेम सागर मिलो राम पयोधि अपार ।
चरण पादुका शीश धरि भरत लियो आधार ।
नित पूजत प्रभु के चरण प्रगट रामसिय मान ।
गुरु वशिष्ठ हिए से लगे भरत राम सम जान ।
भरत देह को नाम है प्रेम नेम को धाम ।
कहत कहत किंकर गये सियपिय के निज धाम ।।

।। अरण्यकाण्ड की महिमा - १ ।।

धर्म तरु के मूल हैं शिवजी परमानंद ।
वक्र चन्द्र सिर धरत हैं जलनिधि देत अनंद ।।
राम कथा और राम गुण हृदय देश तव होय ।
राम विमुख न हों कभी धर्मरती जब होय ।।
फटिक शिला पर राम ने किया सिया शृंगार ।
कुमति कुतर्क ने चोंच से किया जयंत प्रहार ।।
कोमल चरणन से तुरत निकला रुधिर प्रचंड ।
लेश मात्र श्रीराम ने दिया कुमति को दण्ड ।।
सिया मातु सी कहँ मिलें करुणामय पितु राम ।
ज्ञान दृष्टि दे फिर उसे किया संत सम्मान ।।
नारद से निज भक्त ने पठवा मेरे पास ।
प्राण हरूँ मैं यदि कहीं मिटे संत विश्वास ।।

अत्रि ऋषि के धाम पधारे । ऋषिवर चरण सरोज पखारे ।
अनुसूया निज हृदय लगायो । जनकलली को ज्ञान बताय ।।
सीय नाम महिमा बतलाई । नारि धर्म आदर्श बताई ।।
ब्रह्म राम और माया पीछे । लखनलाल वन चले लेवाई ।।
ऋषि मुनि की निज त्रास बुझाई । सबके हित की सुधि करवाई ।
ऋषि अगस्त और नाम सुतीक्षण । सीयराम संग भेंट कराई ।।
हृदय चतुर्भुज रूप दिखाकर । द्विभुज रूप महिमा दिखलाई ।
सरभंगहि निज धाम पठायो । भेद भगति प्रथमहिं लै आयो ।।
गीधराज से मीत बढ़ाई । मीत प्रीति की रीति सिखाई ।
अनुज लखन की जिज्ञासा वश । ज्ञान भक्ति माया बतलाई ।।
सूपनखा माया है देखो । सद् को असद् रूप दिखलाई ।
घनीभूत वैराग्य लखन से । रूप कुरूप तुरंत कराई ।।

।। अरण्यकाण्ड की महिमा - २ ।।

मायामय मारीच तब देख सीय को मोह ।
राम विरह की भूमिका सिय को भयो विमोह ।।
मायामय द्विज रूप धरि, रावण सिय बहकाए ।
प्रेम देख मारीच को, गति दई बने सहाए ।।

गीधराज को रूप दियो निज । रूप चतुर्भुज दिव्य दिखायो ।

पितु समान सम्मान दियो और । गीधराज को मान बढ़ायो ।।

शबरी को निज भगति सुनाई । जाति पाँति मिथ्या बतलाई ।

भगत भगति को मान बढ़ायो । भगति बिना सब व्यर्थ बतायो ।।

रामचरित सुंदर बिमल, तुलसी को है प्राण ।
शबरी को सुंदर कहत, भगति नात ही जान ।।

नारद मुनि को ज्ञान सिखायो । प्रेम हृदय को पुनः बतायो ।

तुम सम भक्त प्राण सुत मेरे । निज जन भक्त उनहिं बतलायो ।।

साधक के गुण सब बतलाए । नारद चरण धरे उर लाये ।

कृपाधाम सुखधाम राम हैं । दीनबन्धु ऋषि गये सिधारे ।।

दीपशिखा तो भगति है, सुंदर ज्ञान प्रकाश ।
जीव देखकर यदि चले, दिव्य अनंत प्रकाश ।।

।। किष्किन्धाकाण्ड की महिमा ।।

राम मिले हनुमान से कपिपति के बन दूत ।
कपि सुकण्ठ भे मित्र और आप राम के दूत ।।

स्वामी - सेवक से मिले बही नेत्र जल धार ।
सेवा निधि ने गह लिए शीलनिधी करतार ।।

रिष्यमूक पर्वत चढ़े पवनपुत्र हनुमान ।
पीठाधीश्वर बन गये हनु के श्री भगवान ।।

योगक्षेम सुग्रीव का किया कृपामय राम ।
कथा व्यथा पूरी सुनी करुणामय भगवान ।।

शरणागत के मान को राखि बालि के देश ।
तारा के मुख से दिया अपना निज संदेश ।।

बाली को निज धाम दे नृप सुकण्ठ को कीन्ह ।
बालितनय को लखन ने अभय दान तब दीन्ह ।।

जामबान हनुमान की पराशक्ति सुनवाए ।
राम काज की सुधि भई पर्वत रूप दिखाए ।।

स्वयंप्रभा उसको मिले भक्ति मार्ग जो जाए ।
संपाती न खा सके सीता को दर्शाए ।।

निज अनुभव है शरण का गीधहिं दिया सिखाए ।
भक्ति मार्ग में चल पड़ो पत्थर भी तर जाए ।।

शरण मैथिली सा पतित पार हुआ जब आए ।
को मोसा संसार में डूबे न तर जाए ।।

।। सुन्दरकाण्ड की महिमा - १ ।।

सुन्दर सीताराम हैं सुन्दर सब सुखधाम ।
सुन्दर हनुमत की कथा मुदरी सुन्दर राम ।।

सुन्दर है प्रभु की व्यथा प्रेम तत्त्व को सार ।
प्रेम तत्त्व और प्रीति को जाने सो भव पार ।।

सुन्दर प्रभु के नेत्र हैं भृकुटि दिव्य ललाम ।
सुन्दरतम् प्रभु के चरण हनूमान लियो थाम ।

चूड़ामणि सुन्दर परम पहनाई पिय राम ।
सीय मातु ने सुमिरि कर दई दास हनुमान ।।

सुंदरता लंका गई रावण मानी आप ।
लंक जली वन वाटिका मिटे पाप परिताप ।।

सुंदरता हनुमान की रामकथा समुझाए ।
सुंदर सीता मातु को धीरज दियो बँधाए ।।

।। सुन्दरकाण्ड की महिमा - २ ।।

वायु पुत्र सुंदर सदन बैठारे हिए राम ।
लोग कहें हनुमान गे स्वयं गये श्रीराम ।।

सुन्दर जलनिधि भावना कह्यो करो विश्राम ।
राम काज कीन्हें बिना कहाँ मोहि विश्राम ।।

सुंदर जल सुंदर जलधि सुंदर जलनिधि तीर ।
रामेश्वर स्थापना करी राम रघुबीर ।।

स्वयंप्रभा सुंदर गुफा संपाती की आँख ।
तरुवर सुन्दर के तरे सीता दीन्ह सुपास ।।

भवन एक सुंदर सदन नित्य राम को नाम ।
हनुमान पहुँचे तहाँ जहाँ विभीषण धाम ।।

सुंदर त्रिजटा की रती बिरत लंक से दूर ।
सुंदर सीता के चरण सेवत मान सबूर ।।

धन्य भाग्य हनुमान के किंकर बन के राम ।
मातु कह्यो सुंदर तनय धन्य धन्य हनुमान ।।

सुंदर वर हमको मिला शरण हुआ कृत कृत्य ।
किंकर बन के राम का पूर्ण हुए सब कृत्य ।।

सुंदर महिमा जो पढ़े राम करें सब काज ।
भवसागर तर वह सके चढ़के बिना जहाज ।।

।। लंकाकाण्ड की महिमा - १ ।।

जनक लली सुन्दर शिखर पिय सुबेल आसीन ।
नील वस्यो रावण स्वयं नित विकार आधीन ।।
सीय सुमिरि शशि को निरख कौन श्यामता आज ।
नाथ सुधाकर शिष्य तव ताते श्याम लखात ।।
बाण चल्यो प्रभु छोड़कर नारि ललामा पास ।
कुण्डल कट दससीस के छत्र मुकुट सब साफ ।।

विश्व अखिलमय रूप है श्रीरघुबीर प्रताप ।
चरण गहो तुम राम के सीय मातु जग तासु ।।
मोह रूप रावण सुन्यो निज प्रताप कह नारि ।
काल बिबस निज वासना समुझ न सको खरारि ।।

कृपा दूत हनुमान अरु बालि तनय समुझाए ।
निज प्रताप जिसको दिखा राम हृदय नहिं जायें ।।
साम-दाम अरु दण्ड सब रावण से कर भेद ।
सब किरीट आये शरण करुणामय पद टेक ।।
अंगद बालक जानकर प्रभु ने करेउ विनोद ।
चार मुकुट केहि विधि मिले कहु अंगद तुम शोध ।।

खर-दूषण अरु भट-सुभट परी लराई लंक ।
जो असंक रावण स्वयं सुनतहिं भयो ससंक ।।
कुंभकर्ण को वध भयऊ रोवहिं सब नर नारि ।
अहंकार मदमत्त नृप नहिं समझेउ बस रारि ।।
रति बिहीन प्रभु पद विमुख अहंकार को रूप ।
भ्रात तनय तनया सबय लै डूबो भव कूप ।।

।। लंकाकाण्ड की महिमा - २ ।।

अंगद चरण संत नीति है । राम चरण में दिव्य प्रीति है ।।
तनिक भाव में भेद न लायो । जदपि लंकपति बहु बिलगायो ।।

सीय मातु को दाँव पर दियो सभा बतलाए ।
गिरा अरथ सम एक हैं सीयराम समुझाए ।।

लंक अवध में भई लराई । सेन समेत बली करवाई ।
प्रिया एक नहिं सुनी भलाई। कृपा नीति नहिं तनिक सुहाई ।
लंका रण में देखि विभीषण । हित बस राम प्रीति अकुलाई ।
मेरे राम जीतिहैं कैसे । सखा विभीषण के विषमाई ।
धर्म तत्त्व सब राम बतायो । श्रवण प्रतीत भई हरषायो ।
बाण तीस से नहिं मर पायो । इकत्तीस से धरा धरायो ।
रावण अपने धाम पठायो । मैं तनया को ज्ञान सिखायो ।

शिव देवन दशरथ स्वयं स्तुति बहुविधि कीन्ह ।
भक्त मान अवधेश को ज्ञान अखण्ड वर दीन्ह ।।

सीय बुलाई अग्नि जलवाई । माया भस्म भई सिय आई ।।
पुष्पक प्रथम सीय बैठाई । पुनि प्रभु आप चढ़े रघुराई ।।

दण्डक बन सबसे मिले केवट भेंटेउ राम ।
गंग मातु पूजन कियो सब परिपूरण काम ।।

हनूमान को अवध पठायो । सूखत धान अमिय बरसायो ।।

प्राण मेरे भ्राता कहाँ प्राण कहहु किस ओर ।
प्राण बिना बिन प्राण को राखों कहँ किस ठौर ।।

नयनन से जल प्रेम बहायो । भरत प्रेम को सरित डुबायो ।
गुरु वशिष्ठ और तीन मातु को । उमड़ प्रेम बह-बह भर आयो ।

घंट मृदंग बजाय के बहुविधि नगर सजाई ।
धन्य घड़ी सब धन्य भए राम मलैंगे आइ ।।
ध्वज पताक तोरन लगे सुध बुध गई भुलाए ।
अभिमत पायो अवध ने प्राण नाथ को पाए ।।

।। उत्तरकाण्ड की महिमा - १ ।।

भरत प्रेम सागर उठेउ दहेउ सकल सब आस ।
कबहुँ प्राणसम रामसिय स्वीकारें निज दास ।।

राम बिरह की रटन लगाई । स्वयं दीनता सबहिं सुनाई ।
हनुमत् ने आकर समीप तब । रामकथामृत पान कराई ।
बिकल भये रामानुज भय्या । कहु कपि सुधि तुम मोहि कराई ।
देहुँ काह प्रिय तुमको अघ मैं । जीवन की मोहि आस धराई ।
उधर रामसिय गंग मातु से । भरत कुसल कामना बताई ।
राम राम अरु राम राम की । भरत स्वांस सम ध्वनि सी आई ।
पुष्पक केवट चलो करत सब । लंकापति सब विधि करवाई ।
गुरु प्रिय बंधु मातु लक्षमणानुज । पुरबासिन्ह की प्रिय सुधि आई ।

पुष्पक उतरेउ अवध में धाईं मातु सुत साथ ।
गुरु अनुशासन बिसर सब सरिता सी बह जात ।।

गति सबकी कर सुगति प्रिय केवट शबरी गीध ।
राम राज्य तब होत है बानर भे सब मीत ।।

चित्रकूट सा चित्त हो दण्डक मन अभिराम ।
बुद्धि अवध में राज्य हो राज्य करें श्रीराम ।।

।। उत्तरकाण्ड की महिमा - २ ।।

काकभुशुण्डि खगपतिहि सुनाई । रचि महेश प्रिय उमहि सुनाई ।।
याज्ञवल्क्य भरद्वाज सन । तुलसिदास निज गुरु से पाई ।।
किंकर ने तुलसी से पाई । निज रचना नहीं कही बताई ।।
बाल्मीकि तो आदि हैं शिव का काव्य अनादि ।
सब ऋषि मुनि विधि हर कहें नहिं कोऊ इसका आदि ।।
भक्ति ज्ञान का फल ही जानो । ज्ञान भक्ति का रस पहचानो ।।
भेद करो मत इसमें कोई । पूरक हैं नहिं संशय कोई ।।
भेद करे जो इसमें कोई । नहिं तारन का मारग कोई ।।
राम ज्ञान हैं भक्ति सिय लखन भाई बैराग्य ।
त्रिपुटी से ही होत है सहज ज्ञान सब साध्य ।।
धन्य भुशुण्डि धन्य सब पक्षी । पक्ष छोड़ निज भगतिहि पाई ।।
धन्य उमा और धन्य संत सब । रामकथा ही सुनी सुनाई ।।
धन्य नगर बासी भये धन्य विन्ध्य के लोग ।
धन्य ग्राम नारी सब दर्शन का संजोग ।।
सप्त प्रश्न मानस रोगों से । गुरु ने सहजहिं मुक्ति दिलाई ।।
चित्त रिक्त कर निज कर कमलनि । रामप्रेम मूरति धरबाई ।।
तुलसी जीवन सार हैं तुलसी जग आधार ।
ज्ञान भक्ति के सेतु हैं तुलसी सागर पार ।।
राम राम जपते रहो करो न आलस आज ।
सब बिगड़े बन जायेंगे जग के सगरे काज ।।
शरण देख विश्वास कर पतित अधम अज्ञान ।
तापर भी कृपा करी नहिं कोऊ राम समान ।।
रामचरित को जो पढ़े कुल समेत तर जाए ।
पाप ताप सब मिटत हैं मन अमृत बन जाए ।।
लखन भरत हनुमत सुनो सुनो शत्रुघन लाल ।
मेरी सुधि दिलवाइयो सीयराम सब काल ।।
शरण अधम यदि तर गया कीरति तुम्हरी होए ।
रामराज्य और राम की सब जग जय जय होए ।।

।। श्री राम स्तुति ।।

समा गया ब्रह्माण्ड अण्ड में, भाव भक्ति बंधन में बँधकर ।
परा बना बैखरी तोतली, बोली में सुन्दर सुन्दरतम ।
प्रिय से प्रिय तो वही, वही जो हिय में बसता मेरा प्रियतम ।
भाव भंगिमा दिखी, दिखी छवि आज सुरम्य और दिव्यतम ।
रंजन चरण रंजित भव भंजन, खंजन से हैं नेत्र भक्त के कलुष निकंदन ।
मोसे अघ के अघ गंजन हैं, धन्य धन्य कौशल्या नंदन ।
आदि शक्ति आधार आश्रय हो भक्त भक्ति के ।
रमा स्वामि, अज, आदिदेव शिव, सकल विश्व के सेवित ।
शरण पड़ा अब शरण हरो अब पाप ताप सब ।
व्यापक आदि अनादि मूल हो तुम भव भंजन ।

।। अनुभव ।।

अब मोहि हरि चरनन की पड़ी,
निरखत हौं दिन रैन चहूँ दिसि पल पल घड़ी घड़ी ।

जिन चरनन को ध्यान करत रत गुरु ने देह तजी ।
जनक लली ने प्राणन से प्रिय, हिए में शोध धरी ।

गुरु वशिष्ठ कौशिक दोऊ गुरु ने चरनन प्रीति करी ।
हनुमत हृदय चरण धरि लीन्हें कनकहि लंक जरी ।

ब्रह्म सुता पाषाणि अहिल्या रज सिरधारि तरी ।
भरत लखन रिपुसूदन कपि सुत चरनन आस धरी ।

शरण मैथिली आस छोड़ सबकी मति कुमति पड़ी ।
गुरु चरणन को ध्यान करे नित प्रभु सन प्रीति बढ़ी ।

।। दूल्हा राम की झांकी ।।

रजनी तनि पेख विलोक जरा सिय का वर कैसा सलोना है ।
नजरें न टिकें नजरें न डिगें किस लोक से आया खिलौना है ।
सिय को तो बुलाके जरा तो दिखा मन भावन तेरा पहुनवा है ।
रह जाये कहीं अब हिय जग में, बस चाह यही अरु कोउ न है ।
नयना इनके रतनारे हैं पहुना जग के ये न्यारे हैं ।
सिय के बड़ भाग पधारे हैं अरु भाग हमारे जागे हैं ।
प्रति अंग की शोभा भली इनकी ये अनंग हैं प्राण से प्यारे हैं ।
मन चाहत है उर लाए मिलूँ सब पुन्य प्रभाउ हमारे हैं ।

।। किंकर के हनुमान ।।

किंकर के हनुमान ये, दिनकर सरिस प्रकास ।
शंकर के अवतार ये, एक आस विश्वास ।।
शिवनायक के ईष्ट हैं, बस अभीष्ट हैं राम ।
शरण मैथिली आ पड़ा, निर्बल के हनुमान ।।
राम चरण में प्रीति हो, हरण ताप अज्ञान ।
श्री गुरु चरण सरोज रज, करे नाश अभिमान ।।
गुरु चरणन में नित रहो, रामचरित हो पास ।
प्रबल अविद्या क्या करे, रहें सीय सुत साथ ।।
मोको संबल एक है, और एक आधार ।
नाम राम को कल्पतरु, सबको पालन हार ।।
तुलसी को नरहरि मिले, किंकर को हनुमान ।
मोसे किंकर को मिले, किंकर राम समान ।।

।। मंगलकामना ।।

प्राची दिशा दिवाकर जागे, साथ तुम्हारा जागे भाग्य ।
राम राम कह देना प्यारे, चहुँ दिसि मंगल हो संभाव्य ।
राम नाम को सुनकर मैं भी, याद करूँगा मैं कल आज,
वर्ष तुम्हारा मंगलमय हो, मेरा है तुमको सद्भाव ।
भूल पुराने को अब जाओ, सोये भूत को नहीं जगाओ,
सूर्य अस्त है भूतकाल का, कदम बढ़ाओ चलते जाओ ।
नित्य सुधाकर घटता बढ़ता, चक्र कभी है न ये रुकता ।
उदय अस्त तो प्रति दिन होते, ये तो सदा एक रस रहते ।
तुम नित आगे बढ़ते जाओ, रस में डूबो और डुबाओ ।
सीताराम चरण गह लो तुम, जग जायेंगे सोते भाग्य ।।

।। बाल लीला ।।

धर पग धरत, कर सर धरत,
मोहि मन करत, नहिं कछु चहत,
दंत दुति दिखत, लटकनी हिलत,
कटि पट दिखत, मोर मन हरत,
पकड़ नहिं सकत, हिलत अरु झुलत,
श्रवण ज्यों सुनत, अमिय हिय भरत,
किलकिलात हँसत, सबको मन ठगत,
लीला ज्यों करत, मातु मन हरत,
मातु गोद मोद करत, थिरक थिरक छट पट छट,
शरण नयन शयन करत,
नयनन में मोद भरत,
पलकन पट बंद करत,
अंग अंग मोहि दिखत,
नट खट की खट पट,
शरण कहै कर झटपट,
न विलम्ब चरण पकड़,
बीतत है काल समुझ,
मुठिका की रज भर, पल पल ज्यों सरकत ।

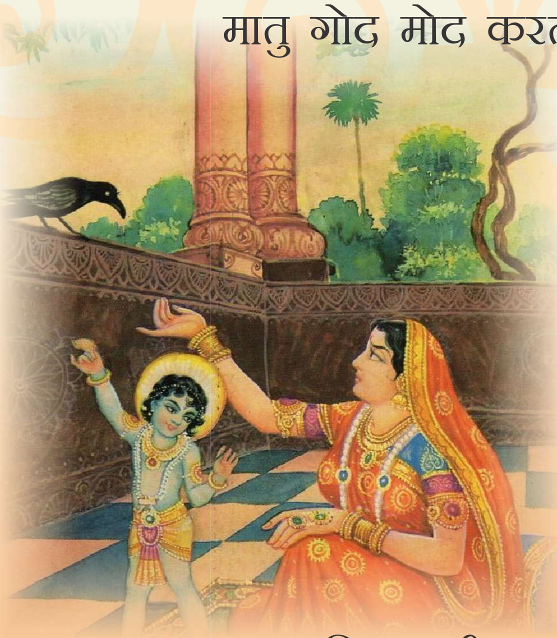

।। राम लला की सुन्दरता ।।

चरण कमल नयनन उर लाई,
घन सम देह पीत पीताम्बर नयनन में दुति की तरुनाई ।

श्रवणन में कुण्डल लटकत जिमि तरु रसाल की ऋतु गहराई ।
सिर ललाट की शोभा ऐसी जलनिधि की मरू भूमि सुहाई ।।

होंठ निकट जब दूर होत हैं प्रिया पीय की प्रीति दिखाई ।
रसना निकट रहत मुख ऐसे भक्तन के मन की ललचाई ।।

दंत पंक्ति जब हँसत लसत है निशा भई तारन समुदाई ।
ध्रुव सम घ्राण रत्न सी सोहे जनु शशि की मुख करत बड़ाई ।।

मेरे राम लला कब मिलिहौ कौशल्या भावना बनाई ।
शरण प्राण अब चलन चहत हैं जनु पिय की पिय से प्रियताई ।।

।। श्री किशोरी जी की महिमा ।।

बारौं जनकलली के मुख पर.
जिस मुख पर रघुबीर वीर से हार गये बिन सेन दिखाई ।

बारौं जनकलली के घर को सुंदर सदन रहे रघुराई ।
बारौं जनकलली के पुर को लखन समेत फिरे रघुराई ।

धन्य धन्य पुरुषारथ श्री को वाम हाथ ले धनुष उठाई ।
का कहुँ परब्रह्म रघुवर ने दोऊ कर कमलन कृपा दिखाई ।

जनकलली मुख शरद पूर्णिमा को कहि सकई नेक प्रभुताई ।
कोटि कोटि ब्रह्माण्ड सूर्य ने निरख निरख शीतलता पाई ।

जनक लली के कर कमलन की को रसना कर सके बड़ाई ।
गुरु पूजा के सुमन हाथ में देखत ही सुध-बुध बिसराई ।

धन्य मैथिली के चरणन की पग न धरी एक नगर निकाई ।
सीय वाटिका के सुमनन को चुन चुन लिए आप रघुराई ।

।। वन मार्ग की भावना ।।

तुलसी की जुहार लगी मन में तन खोई गयो मन सोच रहा है ।
पग कोमल भूमि कठोर करील सिय की हिए की मन सोच रहा है ।
बिछ जाते हमारे ही प्राण कहीं लग जाते सिया संग अंग से जाते ।
रघुवीर को नेह विलोकत ही अब प्राण धरा पे पड़े न समाते ।

पिय के इन नयनन सयनन की सुचि शीतल प्रेम फुहार पड़ी है ।
पग भूमि पड़े इससे पहले पिय के नित नेह की राह बनी है ।
वन की वनता तो लगी ममता सिय जान रही नहिं एक कही है ।
सिय क्यों न करे और कौन कहै मिथिलेश लली मेरी प्रेममयी है ।

।। वन मार्ग में सीता की भावना ।।

सिय ज्यों निकसीं प्रियतम के संग वन कैसे चलें मन सोचति हैं,
थक सी रहिं चल न सकीं पग द्वै फिर देखति हैं चलनों कित है ।
फिरके मुड़के जब राघव ने सिय की यह नेक दशा देखी,
सहलावत कोमल पावन को सिय पीय के पीर की सोंचति हैं ।

कर थाम लियो न दियो फिर से प्रभु के पग को उर पै सिय लाईं,
तुम सोचत हो हमरे हिय की हमरे कछु नेक दया नहिं आई ।
हमरे तुम्हरे द्वै प्राण कहाँ पिरात वहाँ दुख होत है मेरे,
पिय आये बसो हमरे हिय में सिय के पग में फिर पीर कहो कित है ।

।। श्री सीता जी की विदाई ।।

सिय को लिवाय जाते हो कैसे जियेंगे हम ।
अमृत चुरा के जाते हो मृत हो रहेंगे हम ।

सुगना सुगी के साथ में सीता को खेलते ।
महलों घरों और बाग में सोभा बिखेरते ।
प्राणों को ले के जाते हो कैसे जियेंगे हम ।
सिय को लिवाय जाते हो कैसे जियेंगे हम ।

जब आ गये थे आप यहाँ गुरु देव साथ में ।
गुरु पूजने को फूल भरा दोना था हाथ में ।
शोभा सुगंध तो चली क्या करेंगे हम ।
सिय को लिवाय जाते हो कैसे जियेंगे हम ।

सिय के हृदय सरोवरों में फूल खिल गये ।
गौरी को पूजने गईं आशीष मिल गये ।
धरती तो अब बची नहीं कैसे रहेंगे हम ।
प्राणों का सीय के बिना क्या करेंगे हम ।

सिय को लिवाय जाते हो कैसे जियेंगे हम ।
अमृत चुरा के जाते हो मृत हो रहेंगे हम ।

।। उमा रमण ।।

कुंद इंदु सम देह शीश पर गंग विराजे,
भाल विशाल कपाल इंदु भी शोभा पावे,
दिव्य ललाट त्रिपुण्ड - बीच में नेत्र दिखत है,
श्वेत देह में गोद उमा बैठी हरसावें ।।

वाम चरण आसन बना उमा बैठ नित संग ।
देखन में तो द्वैत हैं मिले रहत नित अंग ।।

कर से कर को पकड़ के कर में कर को डार ।
कर से माला जपत हैं सबका कर उद्धार ।।

शिव के हिय में राम हैं उमा हृदय शिव राम ।
नहिं पतिप्रिय कोऊ उमा सम रहें सदा निष्काम ।।

मातु पिता को देखकर किंकर हिय हुलसात ।
शंकर में किंकर दिखे तुम त्रिभुवन गुरुतात् ।।

दिव्य शिखर कैलाश पर शेखर के हम संग ।
शरण भये अब क्या फिकर नित विदेह को संग ।।

।। चित्रकूट महिमा ।।

चित्रकूट की भूमि नहीं धरती न केवल,
धान्य ही नहीं देती है सबको वह केवल,
हृदय सींचती मंदाकिनी, बसते उर रघुवर,
सीय मातु भी मातु नहीं केवल लव कुश की,
भक्तों की है प्राण वायु यहाँ की धरती,
नित्य बिहार करें सियवर सिय के संग हर पल,
भरत लखन के चरण धूल से यह वह निर्मल,
भरत राम के प्रेम मिलन सी यह दिखती है,
जनक सुनयना सीय प्रेम सरिता की जैसी,
खेवनहार बहे, बहे केवट कौशिक भी,
रामराज्य की पृष्ठ भूमि है विन्ध्य भूमि की,
रामकथा के रूप दिव्य भावों की माता,
किंकर की साधना भूमि तो मात्र यही है ।

।। शिव स्तुति ।।

शार्दूल चर्म ललाट गंग त्रिशूल त्रिपुण्ड त्रिनेत्र हैं ।
त्रिदल लेत त्रयशूल मेट भूधरसुता को अंक लेत ।
डमरूधर वेद रचत डिम डिम डिम नृत्य करत ।
सिर में कर जटाजूट कर त्रिशूल काशीधर ।
नित नवीन रास करत विविध विधि चित्त हरत ।
उमाकांत उमारमण उमा में हि नित लय करत ।
राम-मय, मैं स्वरूप, मैं को न तनिक धरत ।
राम राम राम की उमंग में हैं चित्त धरत ।
त्रिकूटधीश जय मुनीश त्रिपुरादि समन जय उमेश ।
दंत पंक्ति विलसत हैं मुक्त हस्त दान करत ।
निरखत हैं शिवा रूप खिलखिलात देख देख ।
राम लला ठुमकत हैं शिव को अनुराग देख ।
कटि में शार्दूल चर्म नंदी को भाग देख ।
शरण खूब हुलसत है किंकर संग आप देख ।

।। सीता की अग्नि परीक्षा ।।

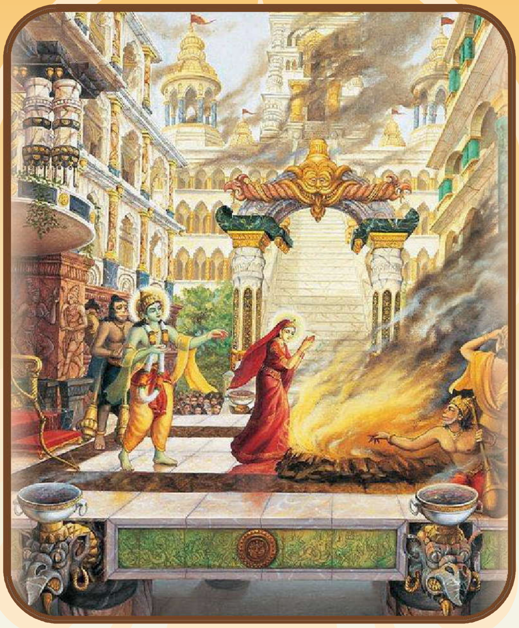

नहिं अग्नि परीक्षा लीन्ह कभी ।
नहिं देश निकाला सिया को कभी ।।
माया को जलाके सिया प्रगटीं ।
सोने की कली मिथिलेश लली ।।
निकले जन के सब पाप तभी ।
निकलीं सिय मातु तभीं जो भली ।।
दोऊ ज्ञान बिराग तभी प्रगटे ।

।। सावन झूला ।।

हमरी सिय राम से प्रेम करें, नित झूलन झूल बिहार करें ।
नयना-नयना नित नेह बढ़े, गलबहियां डार अनंद करें ।
पटका-चुनरी मिलके जुलके, नित रंग बिरंग मिलें उरझें ।
ये किरीट झुको सिय के मुख पे, मिथिलेश लली सकुचायें धरैं ।

झुक के डलियाँ नित चूमत हैं, पटरानी सयानी के चरणन को ।
सिय के प्रतिअंगन में पिय हैं, प्रति अंग निहारत है सिय को ।
हिय से हिय को हुलसाये मिलें, जल और तरंग विहार करैं ।
धन्य भाग लली मिथिलेश लली, अब शरण को धन्य करैं जो चहैं ।

।। ॐ ।।

मैं हूँ एक अभियान, लक्ष्य मेरा सीधा है ।
काल चक्र है गोल, कभी न हिलता डुलता ।
न कोई अभिमान, यान मेरा सीधा है ।
शून्य भीति है मूल, शून्य ही मध्य भाग है ।
शून्य अंत है दिखा, लिखा बस क्रिया कलाप है ।
शून्य तूलिका भीति, शून्य से शून्य लिखा है ।
निराकार साकार सभी पर ॐ लिखा है ।
इसी ॐ से सबमें, सबका धर्म बना है ।
यही मेरा अभियान, लक्ष्य मेरा सीधा है ।
जिसको जितना दिखा, देखा अपनाया ।
बस सबका अभिमान, शून्य पर टिका हुआ है ।
नीचे, ऊपर, बायें, दायें, टेढ़ा और सीधा,
सारा विश्व प्रपंच शून्य से प्रकट हुआ है ।
नाम रूप और धाम कर्म सब भरा पड़ा है,
मति की गति तो देख सभी का वही सगा है ।
ये मेरा अभियान लक्ष्य मेरा सीधा है,
नादस्वर और लोक वेद का रूप यही है ।
गीत और संगीत आरोह अवरोह रचा है,
मैं हूँ एक अभियान, लक्ष्य मेरा सीधा है ।
एक शून्य ओंकार सभी ने कहा सुना है ।

।। अनुभव ।।

सुन्दरता है मूल मध्य में सुन्दरतम् शिखर भाग है,
सुन्दर भाल कपोल अधर सुन्दर रतनारे,
श्रवण दिव्य हैं नेत्र क्षेत्र क्षेत्रज्ञ एक है ।
भौंह दिखत है नेत्र दीप की छवि हो जैसी,
अरु सुकण्ठ हैं शंख नाद फूंकत है जैसी ।
मधुरस से हैं तृप्त अधर मधुराधिपति के,
वक्षस्थल पर चिन्ह भक्त के हिय दरसत हैं ।
नाभि केन्द्र में अति गंभीर सोभा है ऐसी,
भाव केन्द्र हो प्रेम प्रेमी प्रेमास्पद की जैसी ।
आदि अंत से धीर चरण स्थित हों जैसे,
इच्छा कृपा मिलित हों भाव पूरक हों जैसे ।
मेटत भक्त त्रिताप शरण के पाप हों जैसे,
पिया सिया के आप जलधि करुणा के जैसे ।
हृदय लगो भव ताप मिटें भक्तन के जैसे ।
शरण मैथिली आप सिया के पिय हो कैसे ?

।। प्रभु मैथिलीश्वर त्वं स्वयं ।।

हे राम राम नमामि राम नमामि हे करुणायनं ।

हे पूर्ण काम कृपालु कोमल दिव्य रूप सुधाकरं ।

हे जनक तनया प्राण प्रिय अभिराम त्वं सुख दायकं ।

हे राम रूप अनूप सुंदर व्यापकं धरणीधरं ।

हे वेद शास्त्र पुराण स्मृतिमय केन्द्र मध्यस्थापनम् ।

तव नाम रूप अनूप लीला धाम अवध निवासनं ।

हे चित्रकूट निवासनं धरणीसुता सुख दायकं ।

सिय हृदय प्राणस्वरूप त्वं वैराग्यरागनिवृत्तिकम् ।

हे जगत कारण कारकं भव भव विभव करुणाकरं ।

हे शिव पराभव कारकं हे राम तुम रामेश्वरम् ।

हे भरत प्रिय सौमित्र हनुमत कौशलेश वरम सुतम् ।

हे शांति दायक शरण के प्रभु मैथिलीश्वर त्वं स्वयं ।

।। चित्रकूट की महिमा ।।

चित्रकूट महँ बसत हैं गुरु भगवान के संग ।
नित्य सुलभ जहँ रहत है संत संग सत्संग ।।

कामद गिरि पर्वत नहीं सीयराम को रूप ।
रंक नहीं कोई यहाँ राम रूप और भूप ।।

मोरे जैसे रंक को शरण दई जिन राम ।
अब क्यों कोई अनाथ हो राम हमारे नाथ ।

चित्रकूट मणि रत्न है हृदय धरो मुख माहिं ।
जहाँ रहे शोभा करे नयन हृदय मति माहिं ।।

।। शिव की स्तुति ।।

शिव भयंकर शिव शंकर आनंदकर कल्याण कर,
चन्द्राकर रत्नाकर दिवाकर सुधाकर सेवित शंकर,
तुम चिद्स्वरूप आकाशाश्रय आकाश रूप आश्रय,
तुम सत् तुम चित् तुम आनंद तुम आत्मानंद शंकर ।

जागृत स्वप्न सुशुप्ति के आश्रय हे ! तुरीय शंकर,
अंतर अभ्यंतर के अंतर अंतस्थ व्याप्त हे शिव शंकर,
हे शब्द तत्त्व आकाश रूप तुम नादस्वरुप शंकर,
त्रिगुणात्मक सृष्टि तो तुम कर्ता हे रारी त्रिपुरारी ।

हे द्वादश एकादश तुम ही हे दशम शीश धारी,
हे नवम अष्ट तुम सप्त दिवस, तुम षडविकार रारी,
हे पंच तत्त्व चारों युग में शिव महिमा उजियारी,
हे त्रिगुण द्वैत अद्वैत रूप तुम सृष्टि मूल धारी ।

तुम हो निमेष तुम शेष रूप तुमही प्रलयंकारी,
तुम लय स्वरुप तुम सृष्टि तत्त्व तुम बीज रूप धारी,
तुम राम कृष्ण के हृदय तत्त्व मानस रचनाकारी,
हे शिवनायक सुत के अधार मैं शरण कृपाकारी ।

।। अनुभव ।।

जादूगर जादू किया जादू बिना दिखाय,
बिन रस्सी जाला बिछा हमको लिया फँसाय,
हमको लिया फँसाए फँस गये खुद भी ऐसे,
खोज रहे हैं राह जायें अब जैसे तैसे ।

टोना टुटका कर दिया नीला रंग लगाए,
जनक लली संग बैठ के हमको लिया लुभाए,
हमसा उनको ना मिला उनसा हमको नाहिं,
ज्यों ज्यों खोलैं गाँठ को त्यों त्यों उरझत जाहिं ।

हमको पकड़ा आपने पकड़ गये हो आप,
पाप श्राप सब कट गये और हटे संताप,
निरखनि बोलनि की कला दिखी न काहू ठौर,
ज्यों होठन को खोल दें को सुनिहै कुछ और ।

लोनी आँखें भौंह भी लोन लगावत जाय,
नजर लगे न गाल पै लोनो मोहिं लखाय,
मुकुट चंद्रिका सोह ज्यों हिमगिरि स्वर्ण दिखात,
सीय सरोवर बीच में ब्रह्म कमल खिल जात ।

सिय मन राम दरस अस लागा,
जिमि चन्द्रिका चन्द्र सम आभा,
साथ मैथिली के सजे चरण शरण हूँ आज,
नाथ उधारो आज तो नाम गरीब नेबाज ।

।। अयोध्या स्तुति ।।

मात्र नहीं है धरा राम का चरण पड़ा है,
अखिल विश्व के पिता राम का जन्म हुआ है,
जो करता है अखिल विश्व का पूरक पोषण,
सम्पूर्ण समर्पण रूप भरत ने तप यहीं किया है,
पूरक बन श्रीराम प्रभु के जीवन साथी,
लखन लाल की सेवा का एक वृक्ष लगा है,
नाम शत्रुघन अनुज मूक वाणी के साधक,
रिपुसूदन वन बिना शस्त्र के युद्ध किया है,
इसी धरा पर मेरे प्राणों के सम्पादक,
रामभक्त गुरुदेव दिव्य विग्रह रखा है,
फफक फफक कर रो देता हूँ कभी कभी मैं,
नित्य सालता रहता हिय में घाव हरा है,
देखे मेरी राह दाह नहिं कहे किसी से,
जो है सत्य स्वरूप सत्य नहिं बोल रहा है,
राम शील का रूप किंकर क्यों न हो वैसा,
अवध नहीं यह धरा राम का शील खड़ा है ।

।। चित्रकूट कामदगिरि स्तुति ।।

कामद के चार मुख अर्थ धर्म काम मोक्ष
चारों मुख राम चरण प्रीति भर देत हैं ।
कामद के चार मुख सत्य तप दया दान,
चारों मुख धर्ममय जीवन कर देत हैं ।
कामद के चार मुख चारों दिशा में सोहैं,
दिशा और विदिशा को भ्रम हर लेत हैं ।
उद्भव में विधि रूप पालन में विष्णु रूप,
विश्व को संहार शिव बन कर देत हैं ।
भव में कृपा को रूप विभव में कृपा स्वरूप,
सदा शिव बन कल्याण कर देत हैं ।
भाव सब भक्तन के कोल भील संतन के,
जाकी जैसी कामना सब पूरी कर देत हैं ।
राम रूप किंकर के दिनकर हो विश्व रूप,
विन्ध्य को भी आप विश्व पूजित कर देत हैं ।

मदारी रूप में शिव का नटराज नृत्य देखकर पार्वती की भावस्थिति

तिनक तिनक धिन तिनक तिनक धिन तिनक तिनक बाजे,
गल मुण्डमाल साजे-उर में कराल साजे - सब उमा हृदय भावे ।
धन्य धन्य हो धन्य शिवा हुई त्रिभुवनपति आये,
रोम रोम जग गये स्वप्न सब सोत उठे जागे ।
ओर छोर नहिं दिखे गगन धर अतल सुतल लागे,
विश्व सकल ब्रह्माण्ड अण्ड सब रोम रोम लागे ।

१. अइउण्, २. ऋलृक, ३. ऐऔङ्, ४. ऐऔच्, ५. हयवरट्,
६. लण्, ७. ञमडंणनम्, ८. झभञ्, ९. घढधष्, १०. जबगडदश्,
११. खफछठथचटतव्, १२. कपय्, १३. शषसर्, १४. हल् ।

उमा उमा कह जात शब्द सब वेद ऋचा लागे,
नर नारी सब चकित मदारी प्रेम राग गावे ।
डमरु त्रिशूल जटा सब थिरकत लहलहात साजे,
चरण पड़त धरणी ने उर पर धरनि धन्य लागे ।
तिनक तिनक धिन तिनक तिनक धिन तिनक तिनक बाजे,
गल मुण्डमाल साजे-उर में कराल साजे - सब उमा हृदय भावे ।

घन घनात नभ में घन भरि भरि भीजन सब लागे,
उपल लगत कोमल तन मन सब सुमन पत्र लागे ।
पार्वती शिव देखि देखि दुइ एक रूप लागे,
उमारमण से जाइ मैथिलीशरण कृपा चाहे ।

।। शिव स्तुति ।।

जिनको न शूल कर में त्रिशूल शीतलता गंगाधर साजे,
मुरलीधर के अधरानन की छवि जमुन पुलिन पर नित साजे ।
रामामृत हृदय धरे नित जो और नीलकण्ठ विष को धारे,
अनुकूल कूल हे कृपाकूल भक्तन के शूल सबरे भाजे ।

हे विषधर धर कर भी शंकर कल्याणरूप मोहि मन भावे,
हे उमारमण हे राम रमण आनंद करण सब विधि छाजे ।
तुम उद्‌भव में विधि के स्वरूप तुम विभव रूप विष्णु के हो,
तुम लीन पराभव में रहते संहार तुम्हारा स्वस्वरूप ।

हे अन्नरूप - शरीर - तुम घनीभूत मनरूप राम में रहते हो,
विज्ञान तुम्हारा दिव्य रूप आनंदरूप तुम लगते हो ।

ध्यानस्थ राम में रहकर के उदरस्थ गरल को करते हो,
मैथिलीशरण तब शरण शरण हो तुम ही मेरे कारण-करण,
विषतो अब पिला चुके मुझको तुम त्रिभुवन गुरु आनंदकरण ।

नित रमण करूँ गुरु रज कण में हिय में सिर में नित नयनन में,
आनंदकोष को मैं पाऊँ कल्याण नाम संकट हरण ।

।। श्रीराम स्तुति ।।

शिव विष्णु और ब्रह्मादि सेव्य हे राम - सीय के हृदय देश,
हनुमंत सरोवर के नीरज धीरज तुम जनक सुता सम हो ।
सुख शांति और आनंद रूप नर रूप भूप तुम अवध देश,
साधना भरत की तुम ही हो तुम लखन दण्ड के दिव्य केतु ।
शत्रुघ्न मौन की तुम भाषा तुम कर्णधार केवट के हो,
न रूप तुम्हारा नाम कोई सब रूप अनूप सियावर हो ।
दासानुदास मैं किंकर का तुम दिनकर तम के नाशक हो,
अब शरण मैथिलीशरण पड़ा तुम ही तारक उद्धारक हो ।

।। कैलाशपति स्तुति ।।

हे व्याप्त कृपा के व्याप्त रूप, व्यापकता तेरा है स्वरुप,
तुम हो अखण्ड मैं खण्ड खण्ड, महिमा तेरी ऐसी प्रचण्ड,
हे अविनाशी हे अविकारी, मेरे प्रतिपल के तुम साथी ।

गो गोचर मन के तुम स्वामी, नमामि नमामि अन्तर्यामी,
तुम लय में संध्या के सूरज, दिग्दर्शन पूरब में उद्भव,
प्रति स्वाँस प्राण के तुम रक्षक, भक्षक मेरे संतापों के ।

हे शिव, हे शिव, हे शिव, तुम उमारमण,
अग जग विचरण हे निस्तारण कर में त्रिशूल,
नटराज नृत्य अब करें देख दस दिसि न्यारी,
डम डम डमरू अब बाज रहा गल कराल साजे,
सब भूत पिशाच शिवजी के साथ,
नर मुण्डमाल सिर अर्ध चन्द्र मस्तक त्रिपुण्ड सोहे विशाल,

हे चिदाकाश आकाशाश्रय आश्रय तुम्हारा व्याप्त व्योम,
घट मठ में परम रूप तेरा, कल्याण रूप हे शिव स्वरुप,
जब देह स्वार्थमय नहीं रहा तुम चिताभस्म बन मिल जाते,
हे गंग धरण भव हो उमंग भजते राम हे रामालय,
तुम हरो हरण संताप हरण, संकट मोचन कर शरण वरण,
नमन् नमन् तुमको नमन् ।

।। श्री राम स्तुति ।।

करुणाकरो करुणानिधान सुजान श्रीरघुनायकं ।
तुम पतित पावन करण कारण रावणारिनिवारणं ।
हे श्याम हे नीलाद्रि अयन कर सरोरुह लोचनं ।
श्री सहित रिपुसूदन लखन भरताति आनंददायकं ।
गुरु रूप धर संकट विमोचन योग कर धरणीधरं ।
हे पतित पावन जन उधारण मातु शोकनिवारणं ।
हे तात मातु सहृद सुजन जन भक्त हृदय निवासनं ।
हे हनुमदादि सुकंठ अंगद प्रेम हद विस्तारणं ।
हे तुलसिदास हृदय निवास समस्त दुःख विमोचनं ।
हे शरण के सर्वस्व राघव जयति जय सीतापतिं ।
जानकीपति श्रीपति जगतपति विश्व वंदितनंदनं ।
तमरूप मम हिय बसहु प्रभु मणिरूप दिव्य दिवाकरं ।

।। चिदाकाशमाकाश ।।

चिदाकाश आकाश शिवा के शिव का तन है,
राम-राम नित राम-राम में जिनका मन है ।
शिव अकाम निष्काम धाम सबके प्रियतम हैं,
देते हैं धन धाम परन्तु लगते निर्धन हैं।
हिमगिरि वृशभ दिव्य शिखर कैलाश रतन हैं,
भक्तन के त्रैताप पाप अरु भव मोचन हैं ।
भव में भव के रूप पराभव कार्य तुम्हारा,
राम रूप में विभव कृपामय राम रतन हैं ।
द्वादश एकादश दश नवरस अष्ट सप्त हैं,
षष्ठ पंच हैं दिव्य चतुर्दिक आप त्रिगुण हैं ।
सगुण रूप में द्वैत शिवा-शिव एक अंग हैं,
अर्ध नारि नारीश्वर मानो ज्ञान भक्ति हैं ।
शक्तिमान हैं स्वयं उमापति उमा शक्ति हैं,
अग्नि जलधि अरु पवन धरनि के धरनीधर हैं ।
गगन रूप आकाश व्योम लगते अनंत हैं,
किंकर नंदन शरण रहत नहिं कछु बंधन है ।

।। किंकर हनुमान ।।

मंगलमय कल्याणमय गुरु मेरे दातार ।
वे मेरे करतार हैं निराकार साकार ।।
किंकर कुटी छवाय के किंकर दरस दिखाए,
सिंदूरी हनु लाए के नातों दियो मिलाए ।।

नित तेरा मंगल करें निज तेरे आनंद ।
सीता सुत रक्षा करें नित नित नव आनंद ।।
क्षण में हिए में आइ के पल में कियो अनंद ।
हम सबके आनंद हैं रामभक्ति दें संग ।।

किंकर के हनुमान हैं किंकर इनको नाम ।
किंकर को दिनकर करें राम भक्त हनुमान ।।
श्रीरामः शरणं मम मंत्र भक्त को देत ।
अष्टसिद्धि यह मंत्र है अभिमत फल सब देत ।।

शरणमैथिली कहत है सुनो तात मन लाए ।
किंकर को संग राखियो तन धन सम्पति सब पाए ।।
मंगलमय हनुमान को भजन राम को भाए ।
अभय दान तिनको मिले कामद देई मिलाए ।।

गुरु के गुरु हनुमत् गुरु, चहुँ दिसि जय जयकार ।
राम भजन सब मिल करों, सबका बेड़ा पार ।।
चरणन में इनके लगो तनिकौ संशय नाहिं ।
मोसे कायर पूत को तोसे को क्यों नाहिं ।।

राम भजन जिनको भजन भजन करो चित लाए ।
अरथ धरम कामादि सब भगति गति सब पाए ।।
बड़भागी हनुमान हैं बड़भागी सब कोए ।
चित्रकूट किंकर कुटी कामद हैं चहुँ ओर ।।

आवत ही नयनन दिखें जात हृदय में साथ ।
किंकर के हनुमान को सदा भजो प्रिय तात ।।
परिदखिना मन से करो नित्य राम हिए लाए ।
पल पल तेरे साथ हैं शरण राम की पाए ।।

।। श्री रामः शरणं मम ।।

।। गुरुदेव की आरती ।।

आरति श्री गुरुवर की - जय जय
आरति श्री गुरुवर की - जय जय
आरति श्री गुरुवर की - जय जय

प्राणनाथ हे नाथ दयामय, भूरिभाग करुणाकर प्रभु की......
आरति श्री गुरुवर की - जय जय......

वेद पुराण शास्त्र सम्मत मत, तुलसिदास के भाव तत्त्व सब
भक्ति ज्ञान और जीवन धन की......
आरति श्री गुरुवर की - जय जय......

प्रभु के भील उदार रूप तुम, पंच ज्ञान और पंच कर्म तुम
भाुद्ध बोधमय निर्मल मन की.....
आरति श्री गुरुवर की - जय जय......

रामायण मय रूप तुम्हारा, गंग तरंग सरिस जल धारा
रामसिंधु में प्रेम मिलन की.....
आरति श्री गुरुवर की - जय जय......

शरणागत के पालन हारे, तन मन धन सबहीं हो हमारे
आरति मंगलमय गुरुवर की
आरति श्री गुरुवर की - जय जय......

सगुण रूप में अगुण मूल तुम, आदि मध्य और अंत रूप तुम
प्रनवउँ विनवौं विधि हरि हर की
आरति श्री गुरुवर की - जय जय......

प्राणनाथ हे नाथ दयामय, भूरिभाग करुणाकर प्रभु की
आरति श्री गुरुवर की - जय जय......

सरित सागर

।। कृपा धाम ।।

मैं अनंत की बाँहों में अब समा गया हूँ ।
हूँ तुम्हारे पास में मै कहाँ गया हूँ ।
जब दिखा करता था तब मैं एक था ।
अब अनेकों रूप धर कर आ गया हूँ ।
माँ मेरी गंगा ही थी माँ मेरी गंगा ही है ।
अब समुन्दर को जरा मैं पा गया हूँ ।
बोलता मैं जब कभी था, अर्थ तो सीमित ही होते ।
भाब्द बन आकाश में अब. मूल को मैं पा गया हूँ ।
न गुरु था शिष्य था मैं. ज्ञान न अज्ञान था मैं ।
व्यक्त था अव्यक्त हूँ मैं तत्त्वमय अब हो गया हूँ ।
नींद गहरी आ गई थी अब जरा सा सो गया हूँ ।
तुम न समझो छोड़ कर तुमको कहीं मैं खो गया हूँ ।
राम माता और पिता हैं राम ही गुरु-रुप में थे ।
उस कृपा के धाम में तुमको भी लेकर आ गया हूँ ।

।। अनुभव ।।

दीप शिखा बन उदित हुआ हूँ उपादान न कोई मेरा,
मैं तो स्वयं प्रकाशित ही हूँ दिव्य प्रकाशक गुरु है मेरा ।
तम का शमन हो गया अब तो नहीं कोई है तेरा मेरा,
मेरा राम रमे अब मुझमें सबसे नाता वह है मेरा ।
अंधकार का मैं कृतज्ञ हूँ स्वीकारो प्रणाम तुम मेरा,
न होते तुम क्या होता तब मुझको मिलता कहाँ सवेरा ।
निशा अमावस की हो ऐसी न मैं ढूँढ़ सकूँ कोई डेरा,
स्वयं प्रकाशक राम भक्ति का हो जाये चहुँ ओर सवेरा ।
तिरस्कार तुम और करो अब न ही तिरस्कार है मेरा,
जिसने स्वीकारा है सबको पर है कौन - कौन है मेरा ।
कृपा दिवाकर जब निकलेगा पूनम का सा चाँद दिखेगा,
तत्त्व ज्ञान तब हो जायेगा कोई नहीं है तेरा मेरा ।

।। गुरु की महिमा ।।

अंजन जिन दृग में लगा, लखा निरंजन ताहि ।
अंजन रज गुरु की कृपा, कृपा बिना को पाहि ।
सुना सुना सब सून है, लिखा दिखा सब सून ।
राम कृपा में सब लखा, बिना गुरु सब सून ।
दुइ टूकन को झाँकता, मधुर शब्द सुन जाइ ।
मानस सागर मिल गया, अब केहि खोजन जाइ ।
गुरु सा प्रेमी कौन है, गुरु सा ज्ञानी कौन ।
पिता गुरु सा कौन है, मातु गुरु सम कौन ।
गोद दई कंधा दिया, सिर पर लिया बिठाय ।
बार बार बलि जाऊँ मैं, रोम रोम गुरु पाय ।
अरथ धरम कामादि सब, गति सों मोक्ष कराय ।
कृपा दृष्टि जब से पड़ी, नयनन राम लखाए ।
एहि तन से प्रभु भी मिले, श्रेय प्रेय सब तात ।
साधन तो तन ही बना, मातु पिता गुरु नात ।
गुरु ही मेरी साधना, गुरु ही साधन सार ।
राम एक आधार है, गुरु बिन कौन अधार ।

।। अनुभव ।।

कभी कभी मैं खो जाता हूँ अपने में अपनों से मिलकर ।
कभी कभी मैं जग जाता हूँ अपनों से सपनों में मिलकर ।
खो जाना लगता है अच्छा मिलने की तुलना तू न कर ।
यादों में मैं खो जाता हूँ गुरुवर के चरणों से लगकर ।
भर देता मैं सागर इतना बादल भी थक जाता लेकर ।
जब वियोग का अनुभव होता बादल अमृत सा बरसाते ।
रामकथामृत सा बरसाते उऋृण नहीं होते वे देकर ।
प्राणों में तुम बसते रहना स्वांसों मे तुम चलते रहना ।
नहीं पहुँचना चाहा मैंने इसी लिए मैं सो जाता हूँ ।
याद नहीं करता मैं कुछ भी यादों मे मैं खो जाता हूँ ।
कड़वा तीखा जो भी मिलता रोज उसे मैं पी जाता हूँ ।

।। शून्य - अनुभव ।।

शिष्य शून्य मैं, संख्या गुरु हैं, उनसे जुड़कर बड़ा हुआ हूँ ।
शून्य ज्ञान मैं, ज्ञान गुरु हैं, उनसे पढ़कर खड़ा हुआ हूँ ।
शून्य आदि है, शून्य अंत है, मध्य अहं का भाव बना हूँ ।
शून्य मध्य को भी कर दो तुम, शरण तुम्हारे पड़ा हुआ हूँ ।
शून्य मति है, शून्य गति है, शून्य भावना का सागर है ।
आप मेरी अनुभूति भूति हो, आप मेरे गागर और सागर ।
शून्य गगन और शून्य भीति है, शून्य शब्द और शून्य प्रकृति है ।
उसी शून्यता के अनुभव को, प्रतिपल अब मैं तड़प रहा हूँ ।
हे अनंत, हे अप्रमेय तुम, बिरज अनीह अरूप रूप हो ।
प्राणों में तुम प्राण हमारे, अनहद सा स्वर गूँज रहा हूँ ।

।। प्राण स्वरूप - अरूप गुरुदेव के प्रति भाव सुमन ।।

परा भाव जब निराकार था तब भी तुम ही भाव रूप थे ।
रुप हुआ पश्यन्ति मध्यमा दिव्य रूप में तुमको देखा ।
मात पिता के रुप स्वयं तत् परम रूप तो तुम थे मेरे ।
रुप बैखरी हुआ तनिक सा मैं सेवक स्वामी तुम मेरे ।
आदि मध्य और अंत मिलाकर पुन: बीज प्रगटे सब तेरे ।
देते छाया और सुगंध सब फल का रस सब दिव्य घनेरे ।
हे मेरे प्राणों के स्वामी घट घट तेरे रैन बसेरे ।
मेरा जन्म नहीं था तब भी मेरा रूप नहीं सब तेरे ।
पुत्र रूप में पिता जन्मता परम पिता बहुरूप घनेरे ।
परा, पिता, भगवंत कहें या बीज रूप भी फल भी तेरे ।
अपने को ही देख देख तुझमें रमता बसता रहता हूँ ।
आश्रय मैं हूँ तुम हो मेरे, द्वैत कहाँ क्या मेरे तेरे ।
लेन देन चलता रहता है, स्वामी तुम हो किंकर मेरे ।
नाम तुम्हारा बस किंकर है मैं किंकर तुम स्वामी मेरे ।

।। गुरुदेव से निवेदन ।।

हे मेरे गुरुदेव अपने श्री चरण में लीजिए ।
सुस्पर्श पराग अनुराग का, अब वर हमें दे दीजिए ।
चरणों को छूकर आपके, कृत्य कृत्य मैं हो जाऊंगा ।
मकरंद अपने उस चरण का, दास को अब दीजिए ।
प्रति रोम में जिसके रहें, सियराम नित नित नये ।
उस देह का स्पर्श प्रभु, हमको जरा सा दीजिए ।
आँसू की सरिता में बहा, सागर में मिलना चाहता ।
इस चाह को हे नाथ मेरी, आप पूरी कीजिए ।
नयनों में जिसके प्यार है, अनुराग कर कमलों में है ।
उस कर कमल को नेक मेरे, शीष पर रख दीजिए ।
देहली पे मेरे प्राण हैं, संसार बाहर है खड़ा ।
झट कर बढ़ाकर खींचकर, अब गोद में ले लीजिए ।
सोचो तो मेरे प्राण तुम, अब शरण मैं किसकी गहूँ ।
तब नाम की है लाज प्रभु, हम पर कृपा अब कीजिए ।

।। अनुभव ।।

आसमां से आ के मुझसे, फिर किसी ने कुछ कहा है ।
अण्ड मैं अब एक ही, स्वर गूँज सा हिय में रहा है ।
बूँद में सागर वही था, बीज में भी वृक्ष था वो ।
न मुझे सोने वो देता, न ही जगने दे रहा है ।

नाद सा वो गूँजता है, तत्त्व सा वो भासता है ।
हर पलों की याद में वो, अर्थ सा कुछ दीखता है ।
कौन है किसको सुनाऊँ, नित्य लीला को दिखाऊँ ।
घट में मठ सा भासता, आकाश सा वो देखता है ।

रंग सातों एक ही हैं, स्वर भी सातों एक ही हैं ।
दिव्य सप्तावर्ण के उस पार वह अब दीखता है ।
अब कहीं खो जाऊंगा मैं, लौटकर न आऊंगा मैं ।
भक्ति का फल मुक्ति सा वो, देह में ही दीखता है ।

वह जो व्यापक नित्य है, अनित्त्य तो अनित्त्य ही है ।
इस धरा पर वह मिला था, मंच सा सब दीखता है ।
हे मेरे गुरुदेव प्यारे, सत्त्व ही है रूप तेरा ।
नित्य को तूने दिखाया, अब न कुछ भी सूझता है ।

।। अनुभव ।।

शून्य दिखा आकाश शून्य में, शब्द कोश ही भरा हुआ है ।
जो है निर्गुण ब्रह्म, सगुण बन राम रूप में प्रगट हुआ है ।
तरुवर है साकार बीज एक निराकार ही छिपा हुआ है ।
जो होता बहुबचन द्वि-बचन एक बचन भी वह होता है ।
ब्रह्म साथ माया को लेकर, द्वैत विशिष्ट तब ही होता है ।
जाति पाँति और ऊँच नीच, बस भेद अभेद का ही होता है ।
सबमें बस एक राम, सृष्टि में वही रूप अनेक धरता है ।
ऐसा वह निष्पक्ष, पक्षधर सबको अपना ही लगता है ।
सात दिनों में जन्म, मरण भी उन्हीं सात में कर देता है ।
न कर्ता निर्माण, नहीं संहार कहीं पर वह करता है ।
स्वयं अकर्ता बना कार्य सब, सृष्टि मात्र का वह करता है ।
प्राण एक ही होता सब में, इसी लिए प्राणी होता है ।
भाषा का है भेद, भेद व्यवहार मात्र का ही होता है ।
सबमें रमता राम, दु:ख सुख जीव मात्र को ही होता है ।
गुरू दिया यह ज्ञान, शरण तोता बनकर रटता रहता है ।
तीन काल में राम सत्य है, राम राम कहता फिरता है ।

।। अनुभव ।।

बोलना अब कुछ नहीं है, आसमां अब मिल गया है ।
तैरना भी अब नहीं है, डूबना अब आ गया है ।
माँगना भी कुछ नहीं, ईशान से मैं मिल चुका हूँ ।
उदय की इच्छा नहीं, लीन मैं अब हो चुका हूँ ।

देखना भी कुछ नहीं है, मूँद आँखें मैं चुका हूँ ।
न कोई मंजिल है बाकी, न हि कुछ करना है बाकी ।
धन्यता कृतकृत्यता को, आज मैं फिर पा गया हूँ ।
नाद स्वर जब सुन लिया, अब और क्या सुनना है बाकी ।

राम के गुणगान फिर भी, मैं निरन्तर गा रहा हूँ ।
चर्म का स्पर्श देखा, धर्म उसका भी निभाया ।
राम के स्पर्श का मैं, नित्य सुख अब पा रहा हूँ ।
मानना कोई न हमको, जानना कोई न हमको ।
नित्य सँकरी सी गली से, मैं गुजरता जा रहा हूँ ।

राम की जूठन प्रसादी, और वाणी की प्रसादी ।
संत मुख से नित्य सुनकर, रसना से फिर दोहरा रहा हूँ ।
रस नहीं लेना है बाकी, गुरु प्रसादी पा चुका हूँ ।
मुख कमल मकरन्द को, मधुकर बना मैं पा रहा हूँ ।

बोलता मैं नित्य दिखता, पूजता भी नित्य दिखता ।
कर्म तो सब नित्य करता, कर्म कुछ भी मैं न करता ।
अनंतता असीमता में, मैं समाता जा रहा हूँ ।
कोई पूछे कौन हो तुम, मौन होकर बोलता हूँ ।
गुरु कृपा और दिव्य यश की, ध्वजा को फहरा रहा हूँ ।

।। गुरुदेव - श्री विग्रह वर्णन ।।

चरण कमल में कुंद इंदु की आभा जैसे,
गौर वर्ण के चरण तीर्थ पगडंडी जैसे,
कटि और उदर विशाल मंदराचल के जैसे,
नाभि गंभीर की भँवर हृदय तिरवेनी जैसे,
सुगठित कंध शौर्य और धैर्य की मूरति जैसे,
कंठ स्वर्णमय दिखे लक्ष्य साधक का जैसे,
एक कर्ण नित प्रतिपल सद् को रख लेता है,
एक कर्ण प्रतिपल असद् को त्यागे जैसे,
एक नेत्र है ज्ञानकाण्ड श्रुति शोभा जैसे,
एक प्रबल वैराग्य नेत्र हो हनुमत जैसे,
राम भक्ति के अयन नासिका सूंघे ऐसे,
सुचि सुगंध सियराम रूप की लेते जैसे,
मस्तक है सुस्पष्ट कृपा के भाजन जैसे,
जिसका ऐसा भाग्य चरित हो मानस जैसे,
मुख से जिसके रामचरित मानस की सरिता,
कल कल बहे निरंतर गंग की सी धारा जैसे ।।

।। गुरु की महिमा ।।

अंजन जिन दृग में लगा, लखा निरंजन ताहि ।
अंजन रज गुरु की कृपा, कृपा बिना को पाइ ।
सुना सुना सब सून है, लिखा दिखा सब सून ।
राम कृपा में सब लखा, बिना गुरु सब सून ।
दुइ टूकन को झाँकता, मधुर शब्द सुन जाइ ।
मानस सागर मिल गया, अब केहि खोजन जाइ ।
गुरु-सा प्रेमी कौन है, गुरु-सा ज्ञानी कौन ।
पिता गुरु-सा कौन है, मातु गुरु सम कौन ।
गोद दई कंधा दिया, सिर पर लिया बिठाय ।
बार बार बलि जाऊँ मैं, रोम रोम गुरु पाय ।
अरथ धरम कामादि सब, गति सो मोक्ष कराय ।
कृपा दृष्टि जब से पड़ी, नयनन राम लखाए ।
एहि तन से प्रभु भी मिले, श्रेय प्रेय सब तात ।
साधन तो तन ही बना, मातु पिता गुरु नात ।
गुरु ही मेरी साधना, गुरु ही साधन सार ।
राम एक आधार है, गुरु बिन कौन अधार ।

।। गुरु नाम संकीर्तन ।।

गुरु ऊर्ध्व और मूल है, गुरु मध्य साकार ।
गुठली छिलका कुछ नहीं, गुरु ही रस का सार ।।
गुरु द्वैत अद्वैत है, गुरु ही द्वैताद्वैत ।
गुरु विशिष्टाद्वैत है, रहे अगुण निज रुप ।।

गुरु ही साधन का है मूल, कभी नहीं होता प्रतिकूल ।
गुरु कृपा ही है साकार, कृपा बिना सब है निस्सार ।
गुरु पद कमल धरा सम होते, क्षमा कृपा अरु सब कुछ देते ।
गुरु कर कमल शीश धर देते, शरण पड़े को हिय धर लेते ।
गुरु का हृदय भवन है प्रभु का, हनुमत जहाँ सदा ही रहते ।
गुरु के नेत्र दया करुणामय, कृपा अश्रु हैं निसि दिन बहते ।
गुरु का सुख भक्तों का सुख है, गुरु का दुख भक्तों का दुख है ।
गुरु नित प्रतिपल हरि गुन सुनते, सुचि सुबास प्रसाद की लेते ।
गुरु का सर कैलाश गिरि है, गंग तरंग कथा की देते ।

गुरु के प्रति-प्रति रोम में, रामकथा सी गंग ।
श्रीरामः शरणं मम, जपो मंत्र सत्संग ।।
गुरु राम पंचायतन, गुरु है साधन सार ।
शरण मैथिली दास का, और नहीं आधार ।।
श्रीमन्नारायण नारायण नारायण ।
श्रीराम जय राम जय जय राम ।।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे ।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ।।

।। अनुभव ।।

कभी कोई जीवन में आता, जीवन बनकर रह जाता है,
राहों में भी कोई मिले तो, मंजिल-सा वह हो जाता है ।

आँखों से यदि दिख जाये तो, नयनों का फल मिल जाता है,
अयन बीचि में फिरता है वह, सागर-सा लहरा जाता है ।

हाथ उसे छूने को बढ़ते, नयन मार्ग से आ जाता है,
प्रतिपल प्रतिक्षण रोम-रोम में, अनुभव अपना करवाता है ।

वाणी भाषा तो मेरी है, भाव रूप में आ जाता है,
शब्द अर्थ तो मेरे होते, तत्त्व कान में बतलाता है ।

राह वही है बाँह वही है, नयनों को बरसा जाता है,
हृदय हिलोरे लेता रहता, झूला मुझे झुला जाता है ।

चमत्कार है नहीं कोई यह, वशीकरण का मंत्र नहीं है,
किंकर के जीवन में आकर किंकर-सा वह बन जाता है ।

।। अनुभव ।।

दीपक में बाती न बढ़ाओ, ऊषा ने अब किया सवेरा ।
कृपा दिवाकर उदित हो गया, अब न वासना का तम घेरा ।
इच्छाओं के कीट पतंगे, दीपशिखा में भस्म हो गये ।
गुरु चरणों में चलना है अब, तनिक नहीं माया का घेरा ।
जिसने जितना दिया कृतज्ञ हूँ, सबको भी कुछ देना होगा ।
जो है मिला मुझे जो अब तक, और किसे क्या लेना होगा ।
धन्य धन्य हो गये धरा पर, धन्य सभी को करना होगा ।
सब साधन हो गये सफल, अब चित्रकूट में हुआ बसेरा ।
हृदय महल बन गया द्वार पर, हनुमत ने कर दिया बसेरा ।
रामराज्य बन गया विन्ध्यवन, गुरु कर कमल शीश पर फेरा ।
आओ जरा हृदय लग जाओ, नहीं बचा बंधन और घेरा ।
नील गगन जो राम नील सम, तरु विहंग अब करें बसेरा ।
नील बसन है जनक लली पर, मनहु राम सिय मिलन घनेरा ।
मंदाकिनी धार चरनन की, शरण सलिल सम मन अब मेरा ।

।। अनुभव ।।

दास्ताँ मैंने सुनाई, आप बीती जब जहाँ को,
जो जतन करके मिले थे, वे भी जाके सो गये ।

आपको जब से मिला हूँ, देखकर ऐसा लगा है,
अब तो सूरज चांद तारे, सारे अपने हो गये ।

याद न थे जो इरादे, गुनगुनाते थे कभी वे,
एक दम नजदीक आकर, वे बगल में सो गये ।

अब भरोसा आ गया है, खो तो कुछ भी न गया है,
दीखते जो दिन में न थे, वे भी अपने हो गये ।

न तो पहले ही कभी था, न तो आगे भी जो होगा,
आज वे ऐसे मिले, पूनम के चंदा हो गये ।

।। अनुभव ।।

जगमगाते हैं सितारे जब निशा का राज्य होता ।
भावनाएँ लहलहातीं जब भरा धन धान्य होता ।
नव वधू की भावनाएँ तब गगन को चूमती हैं ।
वर वधू को जब जमीं पे प्रेम का अहसास होता ।

जब दिवाकर दीखता है तब निशा का नाश होता ।
तब अनोखा सा हृदय में ज्ञान का आभास होता ।
हाथ बढ़ते हैं किसी की ओर जब वह देखता है ।
नि:शरीरी भावना में वासना का नाश होता ।

तन में नहीं, धन में नहीं, मन में न उसका बास होता ।
बास तो सबमें है उसका हर समय और हर जहाँ पर ।
हम तुम्हारे थे - तुम्हारे हैं - तुम्हारे ही रहेंगे ।
काश सुनने का कहीं थोड़ा सा भी अवकाश होता ।

बढ़ चले अब तो कदम न दिन में ना ही रात सोता ।
गुरु कृपा ही तो कृपा है रात दिन अहसास होता ।
हम तो तुमको भी मिलाते प्यार के उस आसमाँ से ।
भावना के पंख में थोड़ा सा साहस और होता ।

।। गुरु की चर्चा ।।

मेरी यादें उन्हीं को सदा आयेंगी,
आँखें भर करके नदियाँ सी बन जायेंगी ।
सोते और जागते चलते और भागते,
वे सदा ही हमें अपने में पायेंगी ।
राम की वह कथा सीय का वह भजन,
गुनगुनायेंगी और खुद ही चुप जायेंगी ।

ये वो यादें नहीं जो व्यथा दें कभी,
वे तो आयेंगी और दिल में बस जायेंगी ।
वे दिखेंगी सदा और चलेंगी सदा,
बोल कर मौन रहना सिखा जायेंगी ।

गुरु चर्चा में तो प्रभु का ही साथ था,
मौन होकर समाधी में लग जायेंगी ।
मुख में हो राम का नाम वादा मेरा,
राम सागर में ये तुमको ले जायेंगी ।

।। अनुभव ।।

हिम का जैसा नहीं कोई शुभ्र मस्तक सा,
न ही जल है कहीं गंग की शुचिता जैसा ।
नील रूप जलनिधि नहीं अनंतता जैसा,
प्रकृति पुरुष का सृजन प्रकृति के सुन्दर जैसा ।
सुतल अतल तल वितल भूमि पर और कहीं भी,
राम सरीखा रूप शील सियवर का जैसा ।
नहीं मधुरता दिखी कृष्ण की मुरली जैसी,
शील समर्पण कहीं भरत भय्या का जैसा ।
न ऐसा साहित्य कवित्त नहिं भाषा ऐसी,
एक राम का चरित - तुलसी के मानस जैसा ।
नर-नारी सब मिले भावना सुन्दर सबकी,
हिय में न रह सका राम के किंकर जैसा ।

।। अनुभव ।।

देखता हूँ सब जगह मैं आपको,
आपकी कृपा दिखी या आप ही खुद ही दिखे,
खोजता था रात में दिन रूप में वे खुद दिखे ।
इस विश्व को किस विश्व में मैं अब छिपा लूँ,
मैं न खोजूँ आपको मैं आपको सीमा बना लूँ ।
आपकी खूबी को मैं जीने का एक जरिया बना लूँ,
बस आप ही महसूस हों अहसास को जीवन बना लूँ ।
आपके स्पर्श को मैं हूँ अभी भूला नहीं,
सबमें दिखें बस आप अब बस ये नजरिया ही बना लूँ ।
मैं आपका होकर रहूँ या आप ही मुझमें रहें,
जीवन की धारा का जहां मैं आपको बस अब बना लूँ ।

।। अनुभव ।।

गीत को मैं गुनगुनाता, मीत को मैं याद करता,
जीवनी के तार से मैं लय मिलाना चाहता हूँ ।
लय विलय हो पूर्व इसके, युग प्रलय हो पूर्व इसके,
भावना की ताल पर मैं नृत्य करना चाहता हूँ ।

स्वर सुनाई दे रहा है, ताल का है ज्ञान पूरा,
खो के देखूँ फिर स्वयं को खोजना मैं चाहता हूँ ।
लय की सरिता में स्वयं अब, मैं नहाना चाहता हूँ,
मीत को मैं गीत अपने खुद सुनाना चाहता हूँ ।

राग हो या रागिनी हो, रात सारी जागनी हो,
मैं गगन के सामने उन्मुक्त होना चाहता हूँ ।
पूर्णिमा का चन्द्रमा हो, मीत हो तारों के जैसे,
बादलों की बाधता को मैं हटाना चाहता हूँ ।

भर के मन, भर के नयन से, मैं रहूँ पूरे चयन से,
अब तो मैं अनहद के स्वर में डूब जाना चाहता हूँ ।
कुछ पलों की जिंदगी है, कुछ पलों की राह बाकी,
गुरु शरण में अब समय को मैं बिताना चाहता हूँ ।।

।। गुरु कृपा स्मरण ।।

एक दिन मैंने स्वयं के भाग्य को खुद ही पढ़ा था ।
श्वेत तो वो था मगर कुछ भी तो उस पे न लिखा था ।
न पता कैसे वो कागज उड़ गया और खो गया था ।
करुण सागर के चरण से उड़ के जाकर लग गया था ।

क्या समय की बात थी या विगत संयोग ही था ।
पास जिसके थी कलम कागज उसी का खो गया था ।
झुक के कागज जो उठाया हाथ उसके मैं पड़ा था ।
अब कलम मेरी चली और हाथ उसका लिख रहा था ।

न सुना, देखा कभी, न हि अनुभव ही किया था ।
सुगंध तो मुझको मिली पर वायु का झोंका चला था ।
दीखता जो आज है वह कल्पना थी न कभी ।
वाण तो सबको दिखा पर धनुष गुरु के हाथ था ।

बैठता तो खर पे था गज पे तो बैठा ही दिया अब ।
रज्जु तुम्हारे हाथ में तुमने जो समझा सो किया ।
मैथिली का हूँ शरण अब हूँ शरण मैं आपकी ।
अब नाम है बस आपका तो डर मुझे किस बात का ।

।। अनुभव ।।

हम हवा में उड़ रहे हैं पैर न पड़ते जमीं पे,
पर जमीं की अहमियत को हम सदा से हैं समझते ।

उड़ चलें हम जब जहाँ भी. मंजिलें कितनी हों ऊँची,
पर कृपा की भूमि से उड़ना - उतरना हैं समझते ।

मूल में भी एक ही था और शिखर में एक होगा,
न घटाना जोड़ना ही हम गणित हैं कुछ समझते ।

सृष्टि में हैं अंक सारे शून्य है किसको है भाता,
हम गुणा और भाग करके शून्य को ही हल समझते ।

एक ही आधार है बस एक ही सम्बन्ध मेरा,
गुरु कृपा बिन धिग समय को व्यर्थ ही हम हैं समझते ।

।। गुरु स्तवन ।।

परम शुभं, शुचि व्रतं, सुविज्ञ भक्ति दायकं ।।
स्वभाव भाव निर्मलं स्वरूप रूपमस्थितं ।।
न ज्ञान मान का अहं अखण्ड ज्ञान दायकं ।।
अपार, सार, दिव्ययं, सुनिर्मलं, शुचि व्रतं ।।
न मोह न विमोहनं विचार सार दायकं ।।
अमोघ, भक्त तारणं, स्वभक्त पाप मोचनं ।।
नितांत शांत दर्शनं निरंतरं सुव्यापकं ।।
त्रिकूट मोह मर्दनं स्फटिकशिला सुदर्शनं ।।
अखाड्य खाड्य खंडनं न खंडनं न मंडनं ।।
अपूर्व पूर्ण दर्शनं स्वयं शिवं सुचाव्ययम् ।।
अखण्ड व्योम शब्दकं सुगंन्ध धैर्य धारणं ।।
सुचारु जीवनं सदा अपार पाप मोचनं ।।
स्वभक्त भाव रक्षकं सदा शुभं च कोमलम् ।।
विदेह देहि में प्रभुं सुसुन्दरं स्वयं विभुं ।।
असंग संग राममय निरीह विज्ञ पूज्य त्वं ।।
अनाथ नाथ दिव्ययं विशुद्ध मैथिली पतिं ।।

।। गुरु स्तवन ।।

गुरु संग मेरा हर दिन सावन गुरु बिन रेगिस्तान ।
गुरु का प्यार नहीं जिस हिए में ताकर हिए पाषान ।।

गुरु में गंगा की पावनता निर्मल करुणाधार ।
शरण डूब जा जाकर अब तू तेरा एक अधार ।।

आँख देख कर मैं खिल जाऊँ सूरज किरण प्रकाश ।
गुरु के सोते मैं मुंद जाऊँ ज्यों पड़ कमल तुषार ।।

हे गुरुबर मुझको अब ले लो भँवर पड़ा जग माहिं ।
तुमसा पालन हार कौन है तुम बिन क्या संसार ।।

सार और संसार तुम्हीं हो मेरी आंसुन धार ।
डूब जाऊँ मैं इसी धार में कर दो बेड़ा पार ।।

यदि अबकी मैं चूक गया प्रभु नहिं मेरा निस्तार ।
पाप कौन सा ऐसा मेरा जो तुम पर हो भार ।।

पाला और संभाला तुमने रखा और पढ़ाया ।
अक्षर ज्ञान नहीं था मुझमें ज्ञानी मैं कहलाया ।।

जब तुम सब कुछ कर सकते हो फिर क्यों मुझे हटाया ।
निसदिन करता था मैं सेवा अपना कौन पराया ।।

गोद उठालो प्रभु अब मुझको किसको हृदय लगाऊँ ।
जो दे सके मुझे पावनता तुझे छोड़ कित जाऊँ ।।

।। गुरुदेव की समाधि पर अनुभव ।।

शरण जब पड़ा समाधि में गुरु की जाकर,
प्रेम भर आया और समाधि भी टूट गई ।
हिय से लगाया और पास बैठाय लिया,
कुशल नहीं पूछी समाधी फिर लग गई ।
मेरे तो प्राण और प्राण के अधार आप,
बात कुछ बची नहीं है सब तितर और बितर गई ।
लौट जब आया गंगा के किनारे आज,
प्रेम और मिताई सब चरणन में छूट गई ।।

हाय हाय प्राण अब रूप फिर दिखाय दिया,
रूप न दिखाया फिर प्राण ही निकाला है ।
लौटकर आया क्यों धरा ने धरा न क्यों,
सार और असार सब फिर से दिखाया है ।
प्राण प्रिय बहिना और करुणानिधान राम,
आत जात हार देत फिर से जिताया है ।
गुरु कहूँ राम कहूँ किशोरी का पिया कहूँ,
जागत में सपना दिखाऐ के जगाया है ।

।। अनुभव ।।

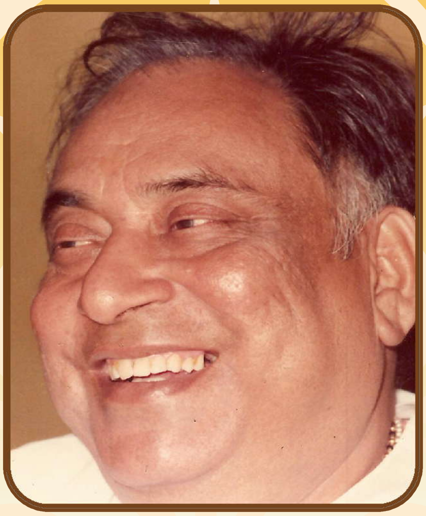

तुम संग सातरंग मोहि लागे ।
तुम बिन रंग लगत अंधियारे बंद कमल ज्यों भाले ।।१।।

तीरथ सब कहूँ लाग रहे थे दरस परस सब लागे ।
मूरत नहीं कहूँ मैं देखी निरखत से प्रभु लागे ।।२।।

चरणन में शीतलता पेखी नयनन में ध्रुव तारे ।
श्रवणन में हरि कथा रूप में नित नये अरथ निखारे ।।३।।

सात स्वरों और सात आवरण अनुराग राग में गाये ।
नहिं कोई स्वर वर्जित अपनाये भाव अनेक सुनाए ।।४।।

सात दिनन में काल तत्त्व के दर्शन दिये कराय ।
जो नहिं कहूँ सुने नहिं देखे, देखे सुने बताय ।।५।।

हे मेरे गुरुवर बसंत सम भाव रंग नहलाए ।
तुम बिन शरद चन्द्र तापत है दर्शन नहीं सुहाए ।।६।।

।। गुरुदेव से प्रार्थना ।।

हे मेरे गुरुदेव आकर बास मुझमें कीजिए,
गर भटक जाऊँ कहीं मुझको पकड़ अब लीजिए ।

संत वाणी में सुना गुरु रूप में भगवान हैं,
आप आकर के स्वयं वाणी को सच्चा कीजिए ।

न पकड़ पाया जरा संसार की गति को भला,
अब मेरी गति को बना बस आप पूरा कीजिए ।

आपका है वास मानस आप में मानस सुना,
भक्ति के उस रूप का दर्शन तनिक तो दीजिए ।

आपकी शरणागति तज गति हमारी हैं कहाँ,
मानकर अपना शरण अब तो शरण में लीजिए ।

।। अनुभव ।।

गुरु थाल की जूठन प्रसादी पाय के अमृत लगा,
गुरु चरण की रज नयन लाकर मानसिक दर्शन हुआ ।
पद में लगाई पादुका कर कमल ज्यों सिर पर पड़ा,

त्रयताप से हो मुक्त जीवन सरित को सागर मिला ।
स्पर्श ज्यों रज का मिला तुलसी का मानस खुल गया,
जिस पात्र ने जो भी कहा तात्पर्य सबका मिल गया ।

हे नाथ हे तुम हो प्राण मेरे तुम ही हमारी आत्मा,
जो हो गया जो हो रहा जो होगा वह सब दिख गया ।
अब जल्द मेरे प्राण को प्राणों में लो गुरुदेव तुम,
न लूँ परीक्षा प्रेम की न प्रेम को मैं कम कहूँ ।

जिसने दिया जितना दिया जो था वो सब कुछ तो दिया,
किसको सरोवर मैं कहूँ सरिता या सागर ही कहूँ,
सबमें तो सागर आप हो जो प्रेम जल छलका रहा ।

।। श्री गुरु चरणकम्लेभ्यो नमः ।।

मधुमास में मधुरुप में श्री राम का दर्शन,
इस प्रतिपदा की पूर्णता श्री राम का दर्शन,
नौ में मिले राजीव लोचन का नयन दर्शन,
प्राची दिशा में सूर्य की किरणों का वह दर्शन,
श्रीकृष्ण में श्रीराम की गरिमा का है दर्शन,
श्रीराम में श्री कृष्ण के माधुर्य का दर्शन,
श्रृंगार की मर्यादा का है श्रीकृष्ण में दर्शन,
श्रीराम में मर्यादा का है श्रृंगार का दर्शन,
एक चन्द्र हैं एक सूर्य हैं दिन रात का दर्शन,
पर मध्य का है संतुलन भगवान का दर्शन,
श्रृंगार भी जीवन में हो जीवन में मर्यादा भी हो,
अतिरेक न दिन रात में गुरुदेव का दर्शन ।

।। अनुभव ।।

नेत्र कर लिए बंद छंद अब तुम्हीं बनाओ,
जय जयवंती गाओ और तुम्ह हमें नचाओ,
हृदय थिरक अब रहा छलकी अँखियाँ अब प्यारे,
कलसी वहती जाये सागर अब तुम बन जाओ ।

खारा पानी देख नहीं तुम तनिक दुराओ,
तुम मिठास की राशि सरस सागर बन जाओ,
मिले तुम्हें तो बहुत हमारे जैसे तैसे,
अपनाओ अपनाय दीनदयालु कहलाओ ।

बालक पन की आश स्वाँस मेरी बन जाओ,
जब रुक जाये कभी तो मेरी आश बुझाओ,
मेरी मन शय्या पर आकर तुम सो जाओ,
मन न जागे और शिशु अब इसे बनाओ ।

अंत समय आ गया लाज थोड़ी है बाकी,
मेरी साँसों में आकर अब तुम बस जाओ,
गुरु चरण को पकड़ बस मैंने यही कहा था,
आप मेरे अब रोम रोम में आ बस जाओ ।

।। अनुभव ।।

हे मेरे प्राणों से प्यारे हो नित प्रकाश में दिखते हो तुम ।
घोर निशा तम घोर बढ़े जब मौन नित्य तुम हो जाते हो ।
एक दीप अधिकार हमारा देने का सब का मन करता ।
नित्य दिवाकर जिसको देता और तुम्हें क्या दे सकते हैं ।
जो है बस वह अर्पण कर दूँ कर्ण रंध्र में मन कहता है ।
स्वर तो नाद वही होता है बाकी तो आवाजें होती ।
उसी मौन को सुनता जाऊँ लीन रहूँ यह मन करता है ।
जो आनंद सभी को देता अर्पण को नित मन करता है ।
जो असंग है संग कोई हो नील गगन तुमको दिखता है ।
न जाने क्यों अब मेरा मन संग किसी के न रहता है ।
नीरज में मल कहाँ रहेगा जलज दिव्यता प्रभु चरणों की ।
प्रभु प्रसाद बन अपना सौरभ सब के हिए को जो भरता है ।
सबका हित और सबका प्रिय तो मात्र वही बस हो सकता है ।

।। आत्म प्रकाश ।।

खोजते ही रह गये हम जो सदा हममें ही था ।
ढूँढ कर खुश हो लिये पर वह छिपा हममें ही था ।
देखते ही रह गये हम न कभी देखा ही था ।
जब किसी ने यह कहा कि वह तेरा दर्पण ही था ।
खूबियाँ जो चाहते थे आसमां न दे सकेगा ।
खूबियाँ तो उसमें थीं पर देखना अपने में था ।
सरफरोशी आज है न ये समझ पाये कभी भी ।
आत्मा को कौन ले और कौन दाता न पता था ।
हम उजाला खोजते थे दीप ले सारे जहाँ में ।
आत्मा ने यूँ कहा कि ज्ञान दीपक तो जला ।
तू शरण क्या खोजता है पड़ शरण गुरु के चरण में ।
वह गुरु तो ज्ञान है पर वह तो तेरे साथ था ।

।। अनुभव ।।

अभ्यंतर में ग्रन्थि नहीं है, बस प्रतीति केवल होती है ।

सर्प रज्जु में भेद तभी है स्थिति संध्या सी होती है ।

आदि अंत को बस तुम देखो, स्थिति मध्य तभी होती है ।

भक्ति ज्ञान और कर्म धर्म की, स्थिति मध्य काल होती है ।

बिन जाने जाने के जैसी, बुद्धि भ्रमित जैसी रहती है ।

हृदय गगन में सूर्य यदी हो, न भ्रम की स्थिति होती है ।

तम में सत्य असत्य नहिं दिखता, कोई प्रतीति नहीं होती है ।

मति जब तत् से बिलग रहे तो, समझो वह संध्या होती है ।

काल एक है प्रकृति एक है, द्वैताद्वैत सुनो अरु जानो ।

बिन गुरु कृपा संत संगत के, ग्रन्थि कभी भी न खुलती है ।

।। अनुभव ।।

हम चले थे जिस डगर पर, उस डगर पर अब बढ़े हैं,
जो समझते आ रहे थे पाठ उसका कर रहे हैं ।
देह हम, संसार हम, संसार है हमने बनाया,
मिथ हुईं सब धारणायें, याद करके सो रहे हैं ।
सोचते थे चल रहे हैं, सूर्य हर दिन ढल रहे हैं,
खे रहे थे नाव प्रतिदिन, खोल अब लंगर रहे हैं ।
धर दिया सब उस धरा पर, धर न पाया है धरा को,
उस धरा पर आ गये हम, अब धरा पर आ धरे हैं ।
बस घरौंदा थे बनाते, तूल तिनकें को उठाते,
उस घरौंदे की दिशा में, अब अकेले चल पड़े हैं ।
ग्रन्थ भी सब देख डाले, पन्थ भी सब देख डाले,
राम के सत् नाम को अब, शुक बने से रट रहे हैं ।
मूल में भी एक ही था, शूल लगता था जगत है,
गुरु कृपा अनुकूल है तो, सब मुसाफिर तर रहे हैं ।

।। राम नाम महिमा ।।

रचना अब तू बंद कर रचा प्रभू का देख ।
मूल रचयिता दिख गया रचनाकार अनेक ।।

रच रच के सब जात हैं रचा न एकउ काम ।
रचना बाकी एक है रटो राम का नाम ।।

रचना तो बस राम की रचा हमें और तोए ।
सोई सीता सोई राम हैं रचनाकार न कोए ।।

बन जा अजगर शरण तू छोड़ जगत के काम ।
पंच तत्त्व में जो बसा सब में बस एक राम ।।

द्वैत हटा सब ओर से भज अद्वैत अपार ।
राम अनंत अनंत हैं बस एक नाम अधार ।।

शरण अंड में था पड़ा तब को पालन हार ।
मुर्गी अंडा मूल में राम तेरा रखवार ।।

जोड़ घटाना जो करे करे गुणा और भाग ।
छोड़ गणित गहि राम को बाकी सब निस्सार ।।

।। रस माधुर्य ।।

ललित मधुर रस से भरे ललित अंग प्रत्यंग ।
ललित भाव और ललित स्वर ललित माधुरी संग ।
ललित बाँसुरी बजत है राग रागिनी संग ।
ध्यान धरूँ मैं ज्यों जरा होत ध्यान है भंग ।
भर नयनन तनि देख लूँ लाल लालि के संग ।
न देखी है न सुनी ध्यान लगो अभंग ।
नील गगन से श्याम हैं राधा स्वर्ण की खान ।
मुदरी राधा बन गई कृष्ण रतन धनु खान ।
नयनन से नयना मिले हृदय मिले जनु आन ।
कौन बजावे बाँसुरी कौन भरे अब तान ।
शरण चरण को गहत है मिले रहो प्रिय प्राण ।
भरि लोचन मुझको मिलो नहिं मेरी कोई माँग ।
शरण राम भगवंत हैं महिमा संत अनंत ।

।। अनुभव ।।

निकली कास आस की जैसी वर्षा विगत हुई तरुनाई ।
विदा हुई बारात द्वार से बजती हो जैसे शहनाई ।
पंच तत्त्व में हो विलीन अब देह गेह की सुधि करवाई ।
बिनु विश्वास भगति हो जैसी राम नाम बिन जीह सुहाई ।
मूरख मृतक विवेक बिना नर पुरुष बिना कहँ नारि सुहाई ।
पुरुषारथ बिन नर कहँ सोहे भाव बिना कहँ वस्तु धराई ।
बिन बिराग के उस ज्ञानी की महिमा है किसने बढ़वाई ।
रघुपति चरण प्रीति हुए बिन परम मोक्ष गति किसने पाई ।
शरण मैथिली धन्य हुआ जब गुरु चरणन की रज सिर लाई ।

।। अनुभव ।।

रे मन शरण राम की धर ले,
धुल जायेंगे पाप ताप सब राम नाम जल भर ले ।

इससे-उससे यहाँ-वहाँ से आस त्रास दिलवाई,
नहिं कछु लेश मात्र भी तेरे काम कबहुँ नहिं आई ।

नयनन में रख त्याग सभी को बंद पलक पट कर ले,
रे मन शरणा मान मेरी अब सियपिय को उर भरले ।

देख पेख मत मिले और मत अभिमत रामहिं कर ले,
तिहुँ पुर काल तीन में तू बस श्री रघुबीर सुमिर ले ।

भरि आये और अबहुँ भरेंगे भर भर पूरण कर ले,
किंकर दास कहाइ भरोसो अब जग को सब तज दे ।

।। भाव राज्य ।।

हे प्रभु! राखियो अब शरण,
जगत बवाल लगत अब मो कहँ निशा भई अब गहन ।
प्राची दिशि अब कृपा उदय कर तम से तारण तरण ।
गर्भ काल से आप पिया नित चाहत हूँ अब मिलन ।
हृदय लगो अब हृदय बसे हो रुप देखिबे नयन ।
अंग अंग स्पर्श चहत हैं भगति रीति निर्वहन ।
ऐसो कौन जगत में नातो जो नहिं चाहे मिलन ।
दास शरण की त्रास हरो अब बाँह पकड़ि जकड़न ।
द्वैत मिटे अद्वैत होए अब बनूँ मैथिलीशरण ।

।। राम-रतन धन ।।

कृपा तिजोरी मिल गई राम रतन धन सार ।
जो लूटे सो नेक है राम देत उपहार ।।
राम देत उपहार चोर नही कहूँ कहावे ।
बन के साहूकार नित्य लूटै लुटवावे ।।
ऐसे धन को छोड़ के जो धन लिया कमाए ।
तन तो सुन्दर है पड़ा प्राण बिना कित जाए ।।
धन्य धन्य है धन्य है धन्य भारण धन पाए ।
सीय पीय को पाय के पर धन कहाँ समाए ।।

।। अनुभव ।।

सो गया हूँ, मत जगाओ, आज मैं पिय से मिला हूँ ।
मैं मेरी, निज आत्मा से, आज आलिंगित हुआ हूँ ।
जो धरा पर भी मिला था, शीश पर कर भी धरा था ।
कर कमल की छांव में, अब चिर चिरंजीवी हुआ हूँ ।
द्वैत न अद्वैत था वह, श्वेत था वह क्षीर सागर ।
मैथिली हूँ उस चरण को, शीश धर सुख ले रहा हूँ ।
न रुलाओ तुम किसी को, न तो है रोना जरूरी ।
मुस्कुराने का हमेशा, मैं तुम्हें गुर दे गया हूँ ।
जीभ से नित राम जपना, नित्य सबसे प्रेम करना ।
न डरो और न डराओ, सीख तुमको दे चुका हूँ ।
तब तो मैं बस एक था, आरोह था अवरोह था ।
अब तराना बनके मैं, सबके हृदय में बस गया हूँ ।
नित्य मैं तुमको मिलुँगा, और वैसा ही दिखुँगा ।
गुरु चरण में प्रेम हो, यह मंत्र सबको दे चुका हूँ ।

।। अनुभव ।।

जो पलकें न होतीं, तो आँखें न होती,
नजाकत भला क्या सलामत ही रहती ।
न औकात अपनी, कहीं कुछ न होती,
सियावर से न अपनी मुलाकात होती ।
न होता पता कुछ भी न अपना कोई भी,
शरण राम की यदि जो पाई न होती ।
न मिलता कोई हमसे, न हम होते काबिल,
इबादत सियावर कि जो की न होती ।
न तुलसी ही मिलते, न मानस ही पढ़ते,
दुआयें अवधनाथ की जो न होतीं ।
न फिर मिलती गंगा, न तो मिलती सरयू,
कृपा कामतानाथ की जो न होती ।
न दो टूक मिलते, नजर सब चुराते,
कृपा रामकिंकर शरण पे न होती ।

।। अनुभव ।।

शून्य भीति पर लिखता हूँ मैं, और भावों से भर देता हूँ ।
भाव भरी आँखों की स्याही, बिना लिखे सब लिख देता हूँ ।
नहीं लिखी है कोई पुस्तक, नहीं कोई भाषा ही सीखी ।
समझ गये भावों के ग्राहक, उनके हिय को भर देता हूँ ।
नहीं कोई घटना है ऐसी, जिसको मैंने लिखा नहीं है ।
नहीं कोई दुनियाँ है ऐसी, जिसको मैंने जिया नहीं है ।
वर्तमान में ही रह करके, मैं अतीत को लिख देता हूँ ।
जो होना है उस भविष्य को, देख देख खुश हो लेता हूँ ।
मेरा अपना निजी देश है, खेत और खलिहानें मेरी ।
कृपा नदी ही सींच रही है, राहें सांसें क्यारी मेरी ।
पुरुषारथ और कृपा धान्य को, प्रभु को नित्य चढ़ा देता हूँ ।
भाव राज्य ही पूजा मेरी, गुरु को भोग लगा देता हूँ ।
गंग तरंग कथा की धारा, नित्य नई राहों पर चलती ।
गोमुख संगम और समागम, भिन्न भिन्न सी करती चलती ।
रंग मंच पर ही पढ़ता हूँ, सुना सुनाया भी करता हूँ ।
जो कहता है मेरा स्वामी, उसको सबको कह देता हूँ ।

।। अनुभव ।।

स्वर यहीं रह जायेंगे बस, भाव का ही है तराना ।
राम का गुण गान कर लो, न कभी कुछ और गाना ।
जो मेरे हर हाल में, प्राणों में रहता और समाया ।
मिलना तो बस था उसी से, संसार था बस एक बहाना ।

हर झरोखे से हुआ, दीदार उसका मैं दीवाना ।
दस दिशा और एक मन में, बस रहा उसका ठिकाना ।
क्यों मैं रोऊँ? क्यों न गाऊँ, भाव तो उससे निभाना ।
और सब नाते तो बस, लहमों का है बस कारखाना ।

अब प्रभु बस लाज रखना, न जुबाँ से भाग जाना ।
जब तलक पलकें खुलीं हैं, रुप अपना नित दिखाना ।
जब तुम्हारी याद भूले, भूल न तुम मुझको जाना ।
मैथिली लोभी मधुप, मकरंद का रस नित पिलाना ।

।। द्वैत का सुख ।।

द्वैत हमें लगता है प्यारा, द्वैत बिना जीवन अँधियारा ।
हम कुछ बोलें कोई सुने न, तुम कुछ बोलो हमें सुने न ।
अमृत की नदियाँ बरसा दो, स्वाद लगेगा खारा खारा ।

नील गगन की आभा ओढ़े, हिमगिर शैल श्वेत दिखता हो ।
उदय दिवाकर होता दीखे, रक्त रेशमी पलक खोलता ।
अनुभव को हम किसे बताऐं, हर्षें भी किसको हर्षायें ।

द्वैत बिना पलकें पुतली में, तुम्हीं बताओ किसे बिठाएँ ।
द्वैत बिना सब सूना लगता, रक्त कमल में पाला लगता ।
द्वैत बिना तो ब्रह्म अकेला, चिंतन भी क्या करता होगा ।
देख प्रेम की भूमि रिक्त है, माया से यूँ कहता होगा ।
चलो करें विस्तार भाव का, प्रेम बिना वह प्यासा होगा ।
इत उत करवट बदल बदल कर, नहीं नींद ले पाता होगा ।

द्वैत नहीं है भेद अभेद का भेद है सारा ।
वह तो नित्य अभेद भेद बिन सब निस्सारा ।।
सब जग एक बिखेरता प्रेम भरा संसार ।
सबमें एक विशिष्ट है, नाम रूप विस्तार ।।

राम सीय भी भेद हैं, एक रूप दो अंग ।
द्वैत किनारों के बिना न बहती है गंग ।।
लोक वेद के बीच मे हम तो बह बह जायें ।
दुइ गोदन के खेल में खुद हरखें हर्षायें ।।
शरण - मैथिली द्वैत है एक पुरुष एक नारि ।
गुरु शरण जब गह लिया क्या फिर नर अरु नारि ।।

।। अद्वैत ।।

जो नहिं करता दीखता, जो भर्ता नहिं भोग ।
जो नहिं दीखे दीखता, जो नहिं योग वियोग ।।
जो ज्ञानी नहिं ज्ञान है, नहिं वादी वह सत्य ।
वादी तो कर्त्ता बने, ज्ञान अमान है तथ्य ।।
न माया का स्वामि है, ना ही सेवक सेव्य ।
न अपने को देखता, नहिं कछु देत न लेत ।।
व्यापक एक अखण्ड है, व्यापकता न लखाय ।
ज्यों मीठे तरु फलन में, नहिं मिठास लखि जाय ।।
सब गुण में जो भाषता, अवगुण नहीं परहेज ।
योगी भोगी सब जगह, ताकी लगी है सेज ।।
जो चोरी में चोर है, श्वेत हृदय साकार ।
निराकार ही रुप है, सबके हिए साकार ।।
जो माया को साथ ले, द्वैत रूप हुइ जात ।
अतिविशिष्ट उप नाम है, अग जग सबहिं लखात ।।
नहिं भोगन को भोगता, भोगी जगत कहाय ।
आयुहीन मरता नहीं, वह अद्वैत कहाय ।।
द्वैता द्वैत दिखाई के, स्वयं रहा अद्वैत ।
सब रंगन में रंग रहा, रहा श्वेत का श्वेत ।।

।। अनुग्रह ।।

आज मोहि अधरन की सुधिआई,
हमरे राम लला मुसुकाए हरी मोर करमाई ।

कोमल चरण कमल ज्यों बिलसत खिलत भक्त हिय लाई,
कर कमलन जब उठन चहत हैं मुख पराग दिखराई ।

नयन कमल जब मोहि निरखत हैं उदित भानु की नाई,
जनम जनम के मिटे पराभव अब मोहि आस धराई ।

गल नासिका कान में छल्ला लल्ला मातु कहाई,
भागत काकभुसुण्डि को निरखत देख भगत अकुलाई ।

शरण पड़े की लाज धरत हो देहु मोहि सेवकाई ।
लिपट रहौं कबहूँ नहिं भागों कर गहि के रघुराई ।।

।। अनुग्रह ।।

सिया जू मोरी करुणा की हैं करुणा,
कमला विमला अरु सरजू की पावनता हैं अयना ।

दशरथ के सुत राजकुँअर संग मिथिला के हैं पहुना,
पहुना को हिय में राखत सिय लाड़ करत हैं नयना ।

पुतलिन में रघुराज दिखत हैं हिय में प्रियतम मैं न,
कर में राम नाम सोहत है मातु को नेह सुनयना ।

जागत सोवत अरु सपने महँ मीन-नीर सम हैं न,
द्वैत दिखत अद्वैत रहत नित द्वेताद्वैत कहूँ न ।

शरण निरख अनुहरत करत नित पल पल के सुख चयना,
मेरे राम प्राण सिय जू के चरण कमल जुग नयना ।

।। अनुभव ।।

दीप शिखा की ज्वाला में नित कीट पतंगे ही जलते है,
देख नही पाते प्रकाश को शिखा देख जलकर मरते है ।
कभी नही वे जलने पाते धन्य धन्य वे सब हो जाते,
कौन सुने और कौन सुनाए ऐसा ही तो सब करते है ।

माखी मरती मधुर स्वाद में चीटे भी उसमें मरते है,
सब का सब हम ही खा जायें और कई जन्मों तक खाएँ ।
सोच सोचकर चिपक चिपक कर जीवन को पूरा करते है,
जो नहिं रहा कभी इस जग में देखो और बताओ सबको ।
नही कोई सृष्टी में बचता यह तो सभी सुना करते है,
कौन सुने और कौन सुनाये ऐसा तो सब ही करते है ।

यश कीरति गति श्रुति प्रशंसा सब अपनी समझा करते है,
ईश्वर की भावना कृपा को निज कृत सब माना करते है ।
कृपा दृष्टि मिल जाये कृपा से भक्त यही माना करते है,
सब है प्रभु का प्रभू हमारे कृपा मान भव से तरते है ।

रघुवर मेरे ताप हरो संताप हरो यह सब कहते है,
दैविक भौतिक और मानसिक ताप न हो यह भी कहते है ।
जनक लली की कृपा दृष्टि को कहाँ पिया हम सब करते है,
बिन सीता की कृपा हुए कब किसको राम मिला करते है ।

।। एक दीन की प्रार्थना ।।

हे !!! पतित पावन प्रभू न हम पतित फिर से बनें,
जिससे तुम्हें संकोच हो वह कार्य अब हम न करें ।
हे !!! कृपा के धाम प्रभु ! दिन रात हम तुममें रहें,
उस पार हो तुम दिख रहे पीछे भी तो तुम ही खड़े,
कस के गहो हे कृपामय न छोड़ना और क्या कहें ।

हम भूत के दृष्टा रहें और आज से पीड़ित रहें,
आगे के जीवन में प्रभु न सामना सबका करें ।
ऐसा हमें वरदान दो एहसान हम पर फिर करो,
हम फिर तुम्हारी गोद को गंदा कभी भी न करें ।

निर्दोष तो हम थे नहीं न हैं न होंगे फिर कभी,
पर आपकी सद्भावना को हम न धूमिल फिर करें ।
कर-कमल से कर कृपा मुख कमल मुझको दिखा,
प्रभु पद कमल जो अमल कर धरके मुझे अब तार दो ।

।। निष्ठा ।।

मेरी स्वाँसें कहीं थोड़ी सी भी थमें,
कान में मेरे संकीर्तन बोलना.
मेरी आँखें कहीं देख जो न सके,
राम का नाम लेकर उसे खोलना.
मेरे हाथों से माला कहीं न चले,
अपने हाथों में ले के उसे फेरना.
मेरी रसना प्रभू को जो न भज सके,
तब सभी लोग कीर्तन का स्वर बोलना.
मेरे हाथों से उपकार न हो सके,
सबके कल्याण की कामना सोचना.
पैर मेरे कहीं तीर्थ न कर सकें,
न ही गंगा अवध कामतानाथ में.
तुम सभी तीर्थ धामों को नित सेवना ।
मेरे प्राणों में जब भी गुरु न मिलें,
बिन विचारे तभी हमको भी छोड़ना.
सीता राम मेरे प्राणाधार मेरे छूटे,
सारा जहाँ इनको न छोड़ना ।

।। समर्पण ।।

रे मन अब भज प्रभु चरणा,
जग में विचर ना व्यर्थ विचर न प्रभु की शरण गह कुछ कर न ।। रे मन...

नयन चहत हैं कुछ लखना, कान चहत हैं कुछ सुनना,
रसना नित रस पान चहत है नहिं चाहत है प्रभु भजना ।। रे मन...

पाये भी चारों फल तूने दसों दिसाओं में चर न,
गुठली छिलका छोड़ मान मन राम रूप रस अब चखना ।। रे मन...

सीय राम दर खड़े कृपा की दृष्टि लिये अब तो उठना,
सिर धर कर अब चरण पकड़ मन तनिक बिलम्ब न अब करना ।। रे मन...

दास मैथिलीशरण पकड़ अब शरण अनत तू न बहना,
रूप रासि में डूब खूब अब न संशय वन में बसना ।। रे मन...

।। आहिल्या भाव ।।

हे प्राणनाथ रघुनाथ मेरे प्राणों के प्राण बने रहना,
अपराध मेरे जो दिख जायें पलकों से जरा सा ढक देना ।।

पाषाण बनी मेरी मति है अब चरणों में तेरे गति है,
मेरे अनुराग भवन को तुम अपना करके अपना लेना ।।

नहिं आँखें हैं देखूँ जो तुम्हें और हाथ नही पकड़ूँ जो तुम्हें ।
अब चरण छुला करके प्रिय तुम गंगा की तरह पावन करना ।।

कर से नित चरण पकड़ तेरा मै नयन गली में तुम्हें मिलूँ,
तुम आ करके मेरे हिए को अपना निज महल बना लेना ।।

अब अनत कही मै न जाऊँ नित चरण कमल में बस जाऊँ,
अब लखन लाल की भाँति प्रभु मेरे भी भाग जगा देना ।।

।। अनुभव ।।

चलन चहत मन, करन कहत मन, कर न भजन मन रे,
कर न भजन मन रे!
अब कर न भजन मन रे!

राम कहत चल, राम कहत चल, राम कहत चल रे.
राम कहत चल रे !
अब राम कहत चल रे !

मन न करत अब, तन न चलत अब, धन न चहत अब रे,
धन न चहत अब रे !
धन न चहत अब रे !

शरण कहत अब, चरण चहत सियराम मिलें कब रे,
सियराम मिलें कब रे !
सियराम मिलें कब रे !

गुरु मिलन चहत, सिर चरण धरत, कर पकड़ कहत अब रे,
कर पकड़ कहत अब रे !
कर पकड़ कहत अब रे !

मैथिलीशरण, चल राम शरण, तू फिरत अनत कस रे,
तू फिरत अनत कस रे !
तू फिरत अनत कस रे !

।। अद्वैत ।।

मैं ऐसा प्रतिबिम्ब, बिम्ब भी मैं ही खुद हूँ ।
छाया तो है वहाँ, खड़ा मैं स्वयं यहीं हूँ ।
न करता मैं कर्म, कर्म का मर्म खुदी हूँ ।
न मैं चलता कभी, पहुँचता सब में मैं हूँ ।
भोगी ऐसा, भोग कभी न करता हूँ मैं ।
हूँ ऐसा सन्यास, त्याग नहिं करता कुछ हूँ ।
कुछ तो बाहर नहीं, जिसे मैं भोग सकूँगा ।
मूल-बीज-शाखा-फल-रस, मैं स्वयं खुदी हूँ ।
न हूँ मैं अज्ञान, ज्ञान भी नहीं मुझे है ।
खुद में खुद का ज्ञान, खुदी में रहता हूँ मैं ।
तत् और त्वम् का मूल, असि तो सिद्ध स्वयं हूँ ।
न गुरु हूँ न शिष्य, तत्त्व मैं एक स्वयं हूँ ।

।। प्रभु और किशोरी जी की कृपा ।।

कनक भवन के द्वार पर शरण पड़ा जब जाय,
जनक लली ने गह लिया निज कर कमल उठाय,
निज कर कमल उठाए प्रेम वे ऐसा माने,
मन तो बस रम जाये लौटने को न माने,
प्रभु ने देखा भाव जब करुणा दी बरसाय,
लखन सरिस हिए लाए के चरण लिया बैठाय,
मोसे कूर कुपूत का भाव लिया अपनाय,
अपने तो श्रीराम जी जनक लली ही भाय ।।

।। भाव पूर्ण पुश्पाञ्जलि ।।

नाथ मैं अनाथ हूँ नाथ मेरे आप हैं,
आप मेरे साथ हैं सारा जग साथ हैं ।
तात हैं न मात हैं सब तो मेरे आप हैं,
आस पास साथ साथ सभी रूप आप हैं ।

गंगा पुलिन देखा हिम की ऊँचाई देखी,
विन्ध्य में भी साथ रहो यही मेरी आस है ।
बल न विवेक मेरे रहूँ साथ सदा तेरे,
आप मेरे जीवन और आप मेरे स्वाँस हैं ।

चार दिशा आप हैं सावन भादों आप हैं,
दिशा और विदिशा में दिशा मेरी आप हैं ।
दास तो अनेक तेरे रूप भी अनेक तेरे,
मोसे कूर पातकी के आधार मात्र आप हैं ।

अंग प्रत्यंगन के स्वामी तो आप ही हो,
जागत और सोवत में सपने भी आप हो ।
अर्थ धर्म काम मोक्ष जीवन में रस देत,
भक्ति और भावना के सूत्रधार आप हो ।

बीत गई रात है थोड़ा बचा प्रात है,
हाथ तेरे हाथ है हार जीत आप हैं ।
शरण के भरण पोषण भी तो आप हैं,
बालक ज्यों शरण पड़त किलकात है ।

।। अनुभव ।।

एक अनोखी शून्य धरा पर, पथिक एक ऐसा सोया था ।
नहीं ढूँढता उसको कोई, वह तो अपने में खोया था ।
विश्व प्रपंच लिए निज उर में, सोकर भी ऐसा जागा था ।
संग सभी को देख स्वयं में, वह असंग सा ही रहता था ।
पैसा कौड़ी रूप रंग में, आत्मा को देखा करता था ।
डुला कोई पाया न पल भर, गुरू शरण में वह रहता था ।
सर्दी गर्मी और सावन में, इधर उधर घूमा करता था ।
प्राण लगे थे उसके गुरु में, देह नहीं माना करता था ।
तीन काल में सदा एकरस, वर्तमान देखा करता था ।
बीत गया सो गया भविष्य की, कभी नहीं चिंता करता था ।
हाड़ मास में गुरू स्वांस में, उनको ही गिनता रहता था ।
रेचक पूरक कुंभक की सब, रीति गुरु को ही कहता था ।
आज शरण ने देखा जाकर, शून्य भीति पर वह सोया था ।
अंक गुरु को मान शरण वह, शून्य शून्य सा वह रहता था ।

।। निवेदन ।।

दीन हौं मैं खीन हौं कृपालु कृपा कीजे,
शरण आये पातकी के पाप हर लीजे ।
लोक परलोक में न जाकी गति होत है,
ऐसो हौं, ऐसे को पार अब कीजे ।

विरद आपका है नाथ विरद याद कीजे,
तारिये कृपानिधान मुक्त मोहि कीजे ।
भाल पे न एक पुन्य हाथ से न कोई करम,
काल की करालता को तुरत मार दीजे ।

नाथ हूँ अनाथ साथ आप मोहि लीजे,
करम को बिसारि आज अभय दान दीजे ।
आप हो कृपा निधान मैं हूँ विधि का विधान,
सब बिधि बन जाये मेरी ऐसी विधि कीजे ।

तात मात भ्रात तुम्हीं आरत के नाथ तुम्हीं,
कृपणता निकाल के उदार दान दीजे ।
चरणन में शरण रहे कर सरोज भाल रहे,
नयनन निहार के निहाल मोहि कीजे ।
दीन हौं मैं खीन हौं कृपालु कृपा कीजे,
शरण आये पातकी के पाप हर लीजे ।

।। अनंत ।।

चित्त की उस भीति पर एक चित्र मैंने आज देखा,
एक बालक आसमां से बात करते आज देखा,
गुनगुनाता सोचता और मुस्कुराता था कभी वह,
काल की गिनती पहाड़ा याद कर लिखते भी देखा ।

मैं जमीं की तुम जीम हो?आसमां भी मैं कि तुम हो,
उस असंभव ग्रन्थि को क्षण भर में सुलझाते ही देखा,
आसमा बोला कि बालक आसमां में आ के देखो,
तुम जहाँ हो वह जहाँ भी आसमां सा ही दिखेगा ।

चित्त मेरा शांत है प्रशांत है यह जान करके,
जो अनंत होगा वही आकाश सा नीला दिखेगा,
विष्णु हों या राम हों कृष्ण या घनश्याम हों,
नील का वह रूप तो अनंत है अनंत होगा ।

जीव वो अनंत है अनंत तो अनंत है,
देखे कोई कैसे कहीं से वह राम या घनश्याम होगा,
चित्त की उस भीति पर एक चित्र मैंने आज देखा,
एक बालक आसमां से बात करते आज देखा ।

।। अनुभव ।।

मरुभूमि है वह चित्त ही, जहँ वृत्ति का नहिं तरु कहीं,
आशा की न कोई किरण, न वासना का है महल,
नितान्त शांत अनंत है, पर्यन्त है आनंद है,
अनहद का बस एक नाद है, जिसकी न हद होती कहीं ।

मन की न चंचलता वहाँ, बुद्धी कि न बहती हवा,
दिखता ही जब कोई नहीं, मैं की भी सत्ता है नहीं,
रमता है प्रतिपल राम में, और राम रमता है जहाँ,
रहने न जाने की कहीं, परवाह कोई है नहीं ।

प्रतिबिम्ब की सत्ता नहीं, आधार ही हो न जहाँ,
बस बिम्ब का ही राज्य, अब राम रमता है यहाँ,
अब तो श्रवण सुनता नहीं, न दीखता नयनों से है,
नहिं नासिका सूँघे किसी को, स्पर्श भी मिलता नहीं ।

वाणी हुई अवरुद्ध है, रसना भी रस लेती नहीं,
न त्याज्य है ना ग्राह्य है, पैरों से अब चलता नहीं,
न कर्म ही कुछ शेष है, अवशेष भी अब न रहा,
नित राम है सत राम है, मैं राम में ही हो गया ।

जो व्याप्त है अखण्ड है, जो अनादि आदि है नहीं,
दिखता वही तो राम है, दिखता तो है वह कृष्ण है,
कैलाश की उस भूमि पर, मरुभूमि सा रहता वही,
वो ही गुरु वह शिष्य है, वह मन अहं और चित्त है,
बुद्धी कि सीमा से परे, वह सत्य है दिखता नहीं ।

।। हृदय पिघल कर जब बहता है ।।

हृदय पिघल कर जब बहता है तब मेरी कविता बनती है ।
मूरति तो अंदर बनती हैं पूजा बाहर तब होती है ।
मूरति की हो प्राण प्रतिष्ठा तब जाकर पूजा होती है ।
साधक साधन को जब भूले साध्य भावना तब होती है ।
करुणा कृपा अनुग्रह सरिता रिस रिस कर जब बह चलती है ।
तब अपने प्रीतम सागर से जा करके वह तब मिलती है ।
कृपा हस्त मस्तक पर होता रोम रोम सिहरन होती है ।
रोम रोम स्पंदन करता उठ-उठ कर वह चल पड़ती है ।
अनहद स्वर जब लगे गूँजने नील गगन सी वह लगती है ।
अंग अंग जब लगे बोलने, लगे देखने, चले खोजने ।
स्वयं शारदा आकर हिय में ममता फिर ऐसी करती है ।
बालक तो बोले न बोले गोद उठाकर स्वर करती है ।
कविता बनकर हृदय उतरती तब मूरति सुंदर बनती है ।

।। अनंत भावराज्य ।।

कुंद कली सी सिया, राम जी नील कमल हैं ।
मुदरी सिय हैं सोन, राम अनमोल रतन हैं ।
जनक लली हैं भूमि, राम जी नील व्योम हैं ।
गंग सरित सी सीय, राम जी रत्नाकर हैं ।
पलकन में हैं द्वैत, पुतलि में प्रिय नागर हैं ।
सौरभमय कैशौर, सिया का दिव्य रूप है ।
लुबुध मधुप हैं राम, सिया पर मंत्र मुग्ध हैं ।
लोचन लोचन डार अंग पर कर कमलनि है ।
अधर अधर पर डार पिया, पिय यों निरखत हैं ।
साधक साधन साध्य एक भए आज मिलत हैं ।
सचराचर में एक नाहिं और कोई मिलति है ।
जल तरंग की भाँति, नित्य खेलत बिलसत हैं ।
झूलत बोलत बोल मधुर, ज्यों फूल झरत हैं ।
सिय पुलकत उर माल-माल मिलि फिर उरझत हैं ।
झरत चुअत करुणाकर की करुणा बरसत है ।
कर से कर को जोड़, चुलूकिता भक्त पियत हैं ।
शोभा देख विशाल, भक्त चरणन पकड़त है ।
शरण मैथिली आज, मैथिली बन निरखत है ।

।। अनुभव ।।

साधुन के संग बैठ के चरणन की रज पाय ।
सब जग साधू दीखता कुचित असाधु लखाय ।।

कुचित शरण ही है भला आशा कृपा लगाय ।
संत पंक्ति में बैठ के कुचित नाहिं कहलाय ।।

भय्या तुम यदि दे सको बनूँ भिखारी आज ।
गुरु चरणन में मति रहे माँगूँ हाथ पसार ।।

माँगूँ हाथ पसार सार मैंने बस पाया ।
केवल नाम अधार काम कोऊ नहिं आया ।।

फूँक फूँक जग में चलो दबे न कोई प्राण ।
सचराचर में एक है नहिं अनेक कोई प्राण ।।

शरण गंग की धार में जलनिधि बस आधार ।
परम पातकी तर गये गुरु है करुणाधार ।।

।। अनुभव ।।

मेरे जीवन के मधुवन में कभी कभी तुम आया करना,
जब जब जन्म धरा पर हो तो चरणों की रज देते रहना ।
मधु तो इसमें भरा पड़ा है न कोई पीने वाला है,
तृप्त करो मेरे इस हिय को थोड़ा थोड़ा मिलते रहना ।
सूख न जाये मेरा मधुवन सु-सुगन्ध चम्पा की जैसी,
कृपा वायु से लेकर सबको थोड़ा थोड़ा लेते रहना ।
सावन के घन भर-भर मेरे रोम-रोम में झलक रहे हैं,
नित्य नहाओ तुम आ करके दर्शन नित्य सुदर्शन देना ।
घन-घन बरसूँ तुम्हें देखकर सूख जाऊँ फिर बूँद न बरसूँ,
नहीं पिये न कोई इसको कभी-कभी तुम आते रहना ।
बृज में गोपी बनकर देखा पुष्प वाटिका में भी देखा,
तुम तो हो रणछोड़ हमें न छोड़ कभी, तुम पूरा देना ।
न तुम वन में फिर से जाना न तुम कभी हमें तरसाना,
मेरे मधुवन में आ करके थोड़ा थोड़ा रहते रहना ।
तुम्हीं बताओ बोलो तो कुछ शरण और मैं किसकी ले लूँ,
मुझे छोड़कर फिर कलंक तुम मुरलीधर न फिर से लेना ।

।। अनुभव ।।

जीवन में अमृत भर दूँगा, नष्ट सभी संताप करूँगा ।
अमृतमय हो तुम यह मानो, नहीं जहर कोई मैं दूँगा ।
मैं हर पल बस वहीं रहुँगा, जहाँ रहो बस वहीं रहूँगा ।
मैं अनिकेत सदा से ऐसा, अब अनंग ही सदा मिलूँगा ।
हृदय तुम्हारा कोप भवन हो, भावों से पूरित कर दूँगा ।
है अनुबन्ध एक बस मेरा, अब न राम वन जाने दूँगा ।
जो चाहो बस वही कहुँगा, जो चाहोगे वह दे दूँगा ।
आवें फिर अक्रूर भले ही, रथ को खाली मैं भेजूँगा ।
प्राणनाथ प्राणों के स्वामी, मथुरा अब नहिं जाने दूँगा ।
बैठे रहो निकट मेरे तुम, और सुनाओ बंसी की धुन ।
प्राणों में मैं तुम्हें मिला लूँ, प्राण नहीं अब जाने दूँगा ।
प्रतिपल राम रहें सिय के संग, कृष्ण किशोरी के संग झूलें ।
मैं नित करूँ चरण की सेवा, और नहीं मैं कुछ चाहूँगा ।

।। अनुभव ।।

हे हरि ! तुम सम और कोउ नाहीं !.

बंधु, पिता, प्रिय मीत प्रीति जिमि मीन जलज विलसाहीं ।

मातु लेत सुत, हृदय मिलत सुख, तिमि प्रिय होहु पल माहीं ।

धन प्रपंच तन सदन वासना बसहिं हृदय जिमि माहीं ।

राम चरण रत रहें निरत नित, छिन छिन जिमि रति माहीं ।

बिरत सकल संसार निरत रत सीयराम पद ऐसे ।

लुबुध मधुप रस लेत अघत नहिं रस बस प्रति पल जैसे ।

योगि परम परमारथ चाहे अंध नेत्र सुख जैसे ।

लखन भरत रिपुदवन हनू सम शरण होहुँ प्रिय ऐसे ।

।। अनहद का स्वर ।।

आकाश को देखा जहाँ अवकाश सा मैं हो गया,
जो कर रहा जो कर चुका सब शून्य जैसा हो गया ।
जब स्वर सुना आकाश का निशब्द सा मैं हो गया,
जो कुछ सुना जो कुछ दिखा अनुवाद सा सब हो गया ।

न आदि हूँ न मध्य हूँ अब अंत सबका हो गया,
चिंतन की चिंता भी मिटी न शोध ही कुछ रह गया ।
जो दीखता वह ब्रह्म है करता भी जो सब ब्रह्म है,
मन भी ऋचाएँ गा चुका वेदांत सा सब हो गया ।

मौन अब भाषा बनी अनुभूति जीवन में स्वतः,
हर पल सुखद अब हो गया प्रति रोम गायक हो गया ।
दुख - सुख की सीमा जानली जाना वियोग - योग भी,
अनहद का स्वर जब सुन लिया अब मौन सा सब हो गया ।

माया का जादू हो गया जड़ता भी जीवन से गई,
पाया न कुछ खोया न कुछ आनंद ही सब हो गया ।
सियराम मय सब जगत है विश्वास अब यह हो गया,
गुरु के चरण की रज लगा पश्चिम से पूरब हो गया ।

।। अनुभव ।।

मो सम अधम अधम कोऊ नाहीं ।
अधमाधम हुइ करत पाप नित पातक मो सम नाहीं ।।१।।

गर्भ जन्म तरुनाई प्रतिपल दीनबन्धु की करुणा पाई ।
मन बुधि चित से करइ अहमता मो सम को अधमाई ।।२।।

मातु पिता गुरु भगति बताई सुन सुन जुगुति बनाई।
मास दिवस महिमा नहिं जानी विद्या सकल गँवाई ।।३।।

देख पवनसुत मोरि दीनता गुरु सन प्रीति कराई ।
जनम जनम के मिटे पराभव सब बिगड़ी बनवाई ।।४।।

कासों कहौं दीनता अपनी जेहि सों होइ मिताई ।
बारक चरण पड़ौ गुरु अपने शरण शरण दिलवाई ।।५।।

।। चरण वंदना ।।

श्रीराम के पद कमल की नित नित करूँ मैं वंदना ।
आनंद और सुखधाम की नित नित करूँ मैं कामना ।।

यह कामना और काम ना यह भावना और भाव ना ।
प्रभू के शयन की आरती कर नित बुहारूँ आंगना ।।
कल फिर प्रभू सिय सहित विचरें सुबह शाम निहारना ।
कब एक दिन आवे कभी सिर कर धरें यह कामना ।।

प्रभु करकमल में कमल दूँ निर्मल करूँ मन आपना ।
श्री श्री किशोरी के चरण में प्राण दूँ मैं आपना ।।
मैथिली कहकर वे पुकारें प्रभु कहें मोहि आपना ।
तब शरण होकर धन्य हो शीतल मेरी हो आतमा ।।

आँखें जब मेरी बरसें तो समझो हमको कोई मिला है,
नयना जब बरसें तो समझो अपना कोई छोड़ गया है ।
हाथ बढ़े जब अपने आगे तब कोई प्रिय खड़ा हुआ है,
कर जब कर को पकड़ मिलालें प्रियतम मेरा आज मिला है ।
छाती जब चौड़ी हो जाये अहंकार उठ खड़ा हुआ है,
हृदय पिघल कर बह बह निकले प्रभु का दर्शन हमें मिला है ।
कान खड़े हो जायें सुनकर वर्णन जग का आज सुना है,
श्रवण थकें न सुनते सुनते रामकथामृत आज पड़ा है ।
नाक बंद करना जब चाहूँ निंदा का नाला निकला है,
सुचि सुगंध जब अंदर आवे प्रभु विग्रह बस यहीं खड़ा है ।
जीभ भोगने को जब तरसे मन अब बाहर निकल चुका है,
जिह्वा प्रभु का गान करे तब गुरु का कोमल परस हुआ है ।
हे मेरे प्रियतम प्राणों में आकर अपना प्रेम दिखाओ,
भीग जाऊँ और डूब जाऊँ मैं मिलने को मन तरस रहा है ।

।। अनुभव ।।

नील सरोरुह पीत पट लोचन में अनुराग ।
देख शरण मिल जात है भगति विरति अनुराग ।।

भगति विरति अनुराग सार संसार दिखावे ।
सार स्वयं मिल जात जगत वह रूप दिखावे ।।
सपना अपना मान के नींद गई अब छूट ।
जोड़ा जिनको मानके छूट गये और टूट ।।

खण्ड खण्ड को देखकर खण्ड हुआ हिय मोर ।
राम अखण्ड मिल जायें तो नहिं कछु मोर न तोर ।।

नित्य दिखें सबमें दिखें सीतापति चहुँ ओर ।
जागत सोवत स्वप्न में संध्या हो चहुँ भोर ।।

।। साक्षात्कार ।।

आज अभी सपनों में मैंने अंत काल को होते देखा,
जग का सब विस्तार पलों में हमने आज सिमटते देखा,
बंधन को खुलते भी देखा बंधन को बंधक हो देखा,
ज्ञान सूर्य की किरणों में तम के अज्ञान अंत को देखा,
बंधन - मुक्ति की डोरी को हमने तो स्वयं सुलझते देखा,
मन की ही आशाएँ मान्यता कर्ता भर्ता को भी देखा,
कारण करण एक तत्त्व है जड़ चेतन में उसको देखा,
कभी विवर्त हो दिखे कभी परिणामी उपादान को देखा,
भिन्न नहीं वो कभी निमित्त और उपादान भी उसमें देखा,
मन गो गोचर जहाँ गया सबको मायामय होते देखा,
माया पति श्रीराम - नाम की दिव्य ज्योति को हमने देखा ।।

।। अनहद का स्वर ।।

रजनी की अंधियारी में गिरधर की मूरत नहीं दिखी जब,
मुरली की धुन सुनकर राधा अधरों तक तो पहुँच गई जब,
श्याम लगे देखन राधा को अमावास्या हो पूनम जब,
उभय तिथी दिख रही एक संग श्याम राधिका एक हुए तब ।

मुरली हुई बेचैन कौन अब मुझे बजाये,
सुर वेसुर हो गये राधिका मान बढ़ाये,
मौन हुआ वो राग रागिनी को समझाये,
मुरली ने धर रूप अधर अधरान धरो जब,
श्याम राधिका गावें राग अनुराग छिड़ो तब ।

अनहद को स्वर आज कान में पड़ो जाये जब ।
रस षडरस बस सरबस लागे, खारे भये तबहिं से सब तब ।
तिथी बार सब भूल गयो मैं अंधियारी पूनम देखी तब ।
कर बिन करम करै सब वह तब, बिना चरण पहुँचो वह मन रथ ।
नयन बिना देखे वह सब जग, घ्राण बिना सूँखे वह सब रस ।
बिना मिले स्पर्श करत है, सचराचर में आई दिखत अब ।
यही रुप श्याम श्यामा को, द्वैत रुप अद्वैत दिखो अब ।

गोप गोपिका देव दनुज सब, शरण देख अब भूल गये सब ।
रोम रोम में बसे श्याम जब, को राधा को श्याम कहत अब ।

।। अनुभव ।।

हे नील कमल अब निशा हुई तुम सो जाओ,
चम्पा के हिय के आँगन में विश्राम करो अब न जाओ ।
हो गया महाभारत नहीं अब राज्य चलाना,
अब मेरे हिय के राजा बन मौन राग को तुम गाओ ।
विरह काल अब बीत गया तुम और मुझे न समझाओ,
ब्रह्माण्ड अखण्ड सब देख लिया अब उसकी सीमा में आओ ।
मुरली भी हमें नहीं सुननी मुरलीधर अब तुम सो जाओ,
अब राग रागिनी बहुत हुए तुम प्रेम राग में खो जाओ ।
जब हाथ हमारा पकड़ लिया जब हृदय तुम्हारा छू करके,
अब भ्रमर बनो इस चम्पा के रसराज सरोवर में आओ ।

।। भाव राज्य ।।

कालिन्दी तट के रज कण में श्यामा के चरणों को देखा,
तप्त हृदय में भाव तैल को हमने खूब खौलते देखा,
श्याम श्याम और श्याम श्याम की अन्तर्ध्वनि को होते देखा,
प्रेम तैल की उस ऊषा को व्याप्त व्योम में मिलते देखा,
सुध बुध भूली उस राधा को प्रेम धार में बहते देखा,
कृष्ण समुद्र ने प्रेम बाँह में श्री राधा को पकड़े देखा,
रजनी के रज कण पूनम में हमने अंगारों को देखा,
सहज नहीं सबको यह मारग हमने तो चलकर के देखा,
साध्य चला जाता है जग से फिर भी साधन करके देखा,
मेरी आराधा हैं राधा हमने खूब पिघल कर देखा,
पिघल पिघल कर फिर श्यामा को कृष्ण मूरती बनते देखा,
हे मेरी भावना तू राधा गुरु में कृष्ण रूप को देखा,
मेरी ही आराधा राधा अनंत अंत में उसको देखा ।।

।। भाव राज्य ।।

मंगल कलश लै सुभग नारी गीत मधुर सुनावहीं,
जय जनक जय अवधेश कहि कहि मंगलायतन साजहीं,
मंगल सुनयना सुनहिं देखहिं हृदय नेह बढ़ावहीं,
चुंबत सुनयना राम सीतहिं हृदय पुनि पुनि लावहीं,
सकुचात सीतहिं राम निरखहिं मोद को सुख पावहीं,
कर देत रामहिं राम सीतहिं नयन अति सुख मानहीं,
सिय राम की मूरति निहारत राम सीय निहारिहहिं,
निज मातु के निज अयन नयन मिलाय के हुलसावहीं,
नहिं करम को नहिं धरम को किंकर कृपा बस मानहीं,
कर कमल लियो उठाय सिर पर मैथिली सुख पावहीं ।।

।। निवेदन ।।

रे मन भज अब पावन नाम.
काल जाल फेंकत है निसिदिन पंछी फंसनो जान ।

सोम भौम बुध गुरु शनि जितने आवत पड़त निशान,
ताहि देखि फांस लै जावत बालक बूढ़ जवान,
मत रुक राम नाम लै उड़जा नहिं भय और फंसान ।

शिव भुशुण्डि नारद गनपति सब राम नाम गुण गाये,
ते सब तीन काल त्रिभुवन में भक्तन के हिय भाये,
रे मनुआ तू मान मेरी अब रहे न ठौर पराए ।

मन जब शांत रहे नित जप तू रटै विपत्ति बढ़ाये,
राम नाम में रमण करे तो सुख अनंत तू पाये,
हिय में निर्गुण रुप नयन में जीव धन्य कहलाये ।

गुरुमुख भयो राम नामहि से पाइ लहेउ विश्राम,
सोवत जागत चलत फिरत है राम नाम कल्यान,
मूरख शरण चरण अब गह ले संतन के सुख राम ।

।। निकुञ्ज ।।

भलो मेरो एकै अवध किशोर ।
भव मन रंजन भव के भंजन भक्तन के चितचोर ।।१।।

रंजन रंजित अंजन खंजन नयन अमिय रस बोर ।
पुलकित तन मन हुलसित जन मन देखि देखि दृग कोर ।।२।।

सिय पिय सिय हिय निकट रहत नित हिय खोजें चहुँ ओर ।
दोऊ जन चाह करत हैं पर की निज हिय देखि न ओर ।।३।।

न गये कबहुँ न मिले कबहुँ कस प्रेम भाव अति भोर ।
नयन नींद में सयन करत पिय सिय-सुधि नहिं कछु और ।।४।।

शरण दास लखि गति जुग हिय की नयन कमल दिये खोल ।
दोऊ जन अंग मिले संग संग सब अलि हरषीं चहुँ ओर ।।५।।

।। असंगता ।।

जब सारा जग सो जाता है तब जग कर सोता रहता हूँ,
गोद मिली प्रभु की मुझको सोते सोते मैं जगता हूँ,
कभी प्रभू कर कमल लगाते जनक लली बस छू देती हैं,
मेरे हिय के संतापों को अपनाकर मन भर देती हैं,
रोम रोम जग जाता मेरा सब समझें मैं सो जाता हूँ,
सीय लली के चरण पकड़ मैं सुख दुख उन्हें सुना देता हूँ,
नाम मैथिलीशरण शरण तू आ जा मेरी वे कहती हैं,
स्वर सुनकर अपनी बहिना के फिर से निकट चला जाता हूँ,
गा करके किंकर की महिमा फिर मैं उन्हें सुनाता हूँ,
साँसों की अपनी गिनती को गिनकर उन्हें बताता हूँ ।

।। वसंत ।।

सिय संग खेलैं रघुवर वसंत,
लाल गुलाल उड़ावत ललना मातन्ह के सुख को न अंत,

सप्त रंग की ओढ़ चूनरी पटका पीत रघुवर के संग,
नील रंग अनंत राम को गौर जनक की लली संग,

शिव डमरू वीणा नारद की हनुमत के गर्दन में मृदंग,
झाँझ मंजीरा झम झम बाजे नूपुर घुंघुरु की तरंग,

रंग अबीर उड़त अकाश में रजनी नाचे सूरज के संग,
भरत लखन हँसि हँसि विलसत हैं हँसे खूब सौमित्रनंद,

मातन्ह सिय उर्मिला माण्डवी श्रुतिकीरति अनुराग रंग,
धन्य भाग जो शरण पड़े को तन मन रंग गये राम रंग ।।

।। अनुभव ।।

हम हृदय की भीतियों में नित लिखा करते हैं तुमको,
तुम हमारी तूलिका में रंग भरते ही रहे हो ।
मैं तुम्हारी भावनाओं के झरोखे खोजता हूँ,
तुम झरोखा छोड़कर दिखते हृदय में रोज हमको ।
देखना मैं दूर से हर रोज तुमको चाहता हूँ,
ताकि चाहत से बिरति हो जाए न तुमसे हमीं को ।
तुम मिलन की लालसा और लोभ में रहने दो मुझको,
मैं तुम्हारे रूप का लोभी कहाना चाहता हूँ ।
न तपस्या की कभी भी त्याग न मैंने किया कुछ,
सब दिया है आपने बस यह कहाना चाहता हूँ ।
हे मेरे प्रियतम मिलो अब काल थोड़ा सा बचा है,
मैथिली बनकर तुम्हारे साथ रहना चाहता हूँ ।

।। अनुभव ।।

यश धन गज धन रतन धन, स्वर्ण रजत बस धन ।
सब धन निर्धन करत हैं भजन राम को धन्य ।
तन धन तिय धन भवन धन ये सब तब हैं धन्य ।
भगति सरिस बह कर मिलें रत्नाकर सम धन्य ।
धरा धन्य है राम से जीवन में सत्संग ।
सब धन धूरि समान है भजन करो निर्द्वन्द ।
राम रूप सागर मिलो शील स्वभाव अनूप ।
रत्नाकर सब धन भरे निर्धन भी हो भूप ।
धन्य धन्य वह काल है धन्य धन्य वह देश ।
चरण कमल जहँ जहँ पड़े राजाराम नरेश ।
शरण धन्य भी तब हुआ जाना राम स्वभाव ।
नहिं अभाव अब कुछ रहा सियपिय देख प्रभाव ।

।। अनुभव ।।

मन जिसमें नित रत रहता हो, पर से बिरति सहज होती है,
रमण प्रभु में जो करता हो, सरिता हिय में तब बहती है ।
शरणागति का मूल मंत्र है, जिधर बहाये बह तुम जाओ,
रस तो सागर में अनंत है, जाकर तुम उस रस को पाओ ।
न मन अपना, बुद्धि समर्पित, चित्त पूर्ण खाली जब होता,
अहंकार सा पर्वत भी हो, गलित प्रेम सागर में होता ।
अति अगाध करुणा सागर का, कृपा रूप दर्शन तब होता,
को मैं और कौन तू तेरा, मेरा तेरा कुछ न होता ।
वह अखण्ड है नहिं विखण्ड है, व्यापकता का अनुभव होता,
एक रूप तब दो हो जाते, तब अद्वैत में मन रत होता ।
नयन दृष्टि को देने वाला, निर्गुण रूप सगुण है होता,
तब चाहे तन गेह जगत हो, सबमें बस प्रियतम ही होता ।

।। याचना ।।

घोर अमावस भी आ जाये, चहुँ दिसि तम तमाम छा जाये,
कृपा दीप की लौ बन करके, कम से कम तुम दिखते रहना ।
जेठ दुपहरी भी तपती हो, तपता हो तन मन सब मेरा,
करुणा की बदली तुम बनकर, करुणामय तुम चलते रहना ।
पूरब यदि है उदय हमारा, पश्चिम तो निश्चित ही होगा,
तुम उदीय हो कल निकलोगे, बस ऐसा तुम कहते रहना ।
प्रलय भले जीवन मे आये, तन्मय हो लय सी बन जाये,
संसाधन का जब अभाव हो, साध्य हमारे तुम ही रहना ।
न मैं कभी स्वयं उठ पाऊँ, निस दिन तेरे ही गुण गाऊँ,
कर कमलों से करुणा करके, कर से कर को पकड़े रहना ।
मन तो करता अभी मिलो तुम, तन से नहीं साधना होती,
अर्जी तो दे दी है मैंने, कभी कभी बस पढ़ते रहना ।
करूँ तुम्हारा अभिनंदन मैं, वंदन करूँ तुम्हारा प्रियवर,
किंकर नंदन शरण तुम्हारी, कभी कभी सुधि करते रहना ।

।। भाव राज्य ।।

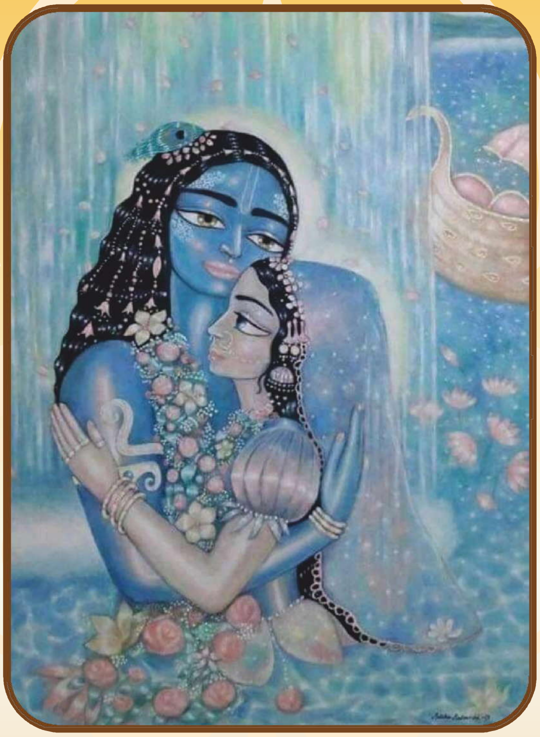

मोर पक्ष को सिर पर रखा, मोर पक्ष को भुला न देना ।
मेरे पक्ष तुम्हीं हो प्यारे, अपना पक्ष भुला न देना ।
भर आईं हैं अब तो नदियाँ, बरस रहे हैं भर भर सावन ।
नयन मेरे गंगा जमना हैं, सागर हो बिसरा न देना ।
अभी बहुत छोटे बालक हो, मेरे भावों के पालक हो ।
लता बनी मैं तरुवर हो तुम, कर कमलों को छुड़ा न लेना ।

।। कैलाश दर्शन का स्वरूप ।।

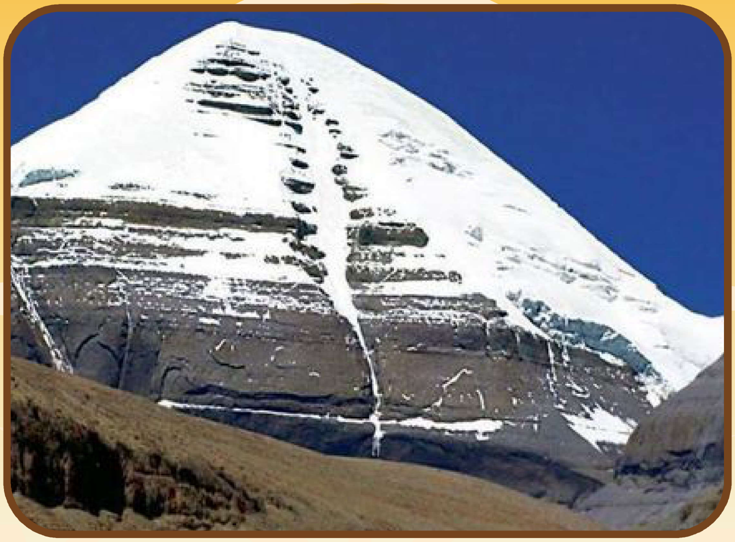

निराकार हो गया आज साकार हृदय में,
अग्नि चन्द्र और सूर्य रूप दृग प्रकट हृदय में ।
पूर्ण चन्द्र की शीतलता तो हमने देखी,
पूर्ण सूर्य की किरण आज बस गई हृदय में ।
दिवस रात्रि संध्या में रूप की छटा बिखेरी,
तुम प्रकाश हो अग्नि सूर्य ओर चन्द्र रूप में ।
व्यापकता अखण्डता कृपामय रूप तुम्हारा,
मुस्कान तुम्हारी आज घर कर गई हृदय में ।

।। प्रभु से सम्बन्ध ।।

वामांग दिया प्रभु ने सिय को, अपना करके सम्मान दिया ।
निज रूप में रूप मिला करके, अनुरूप स्वरूप बना के दिया ।
कर से पकड़े सिय के कर को, सब भक्तों का मन थाम लिया ।
बस नाम मैथिली के नाते, यह दास शरण स्वीकार किया ।

।। श्याम की एक रूपता की भावना ।।

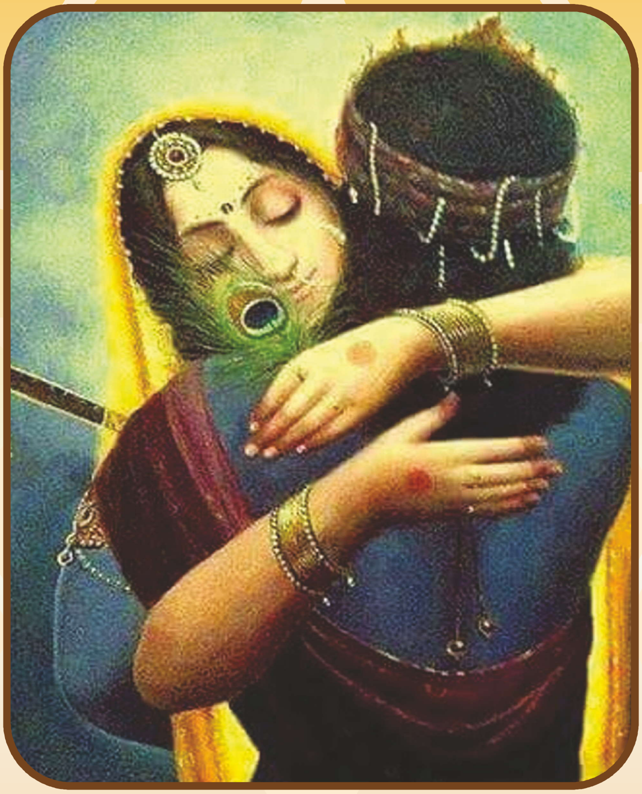

हे गोवर्धन गिरिधारी थक गये गिरि को उठा करके ।
अब पक्ष उतार रही सिर का बस पक्ष एक तू मेरा है ।
कुछ तुम्हें नही करना प्रियवर यह मोर पक्ष भी भारी है ।
विश्राम करो पल भर मुझमें अब केवल मेरी बारी है ।

।। कैलाश स्तुति ।।

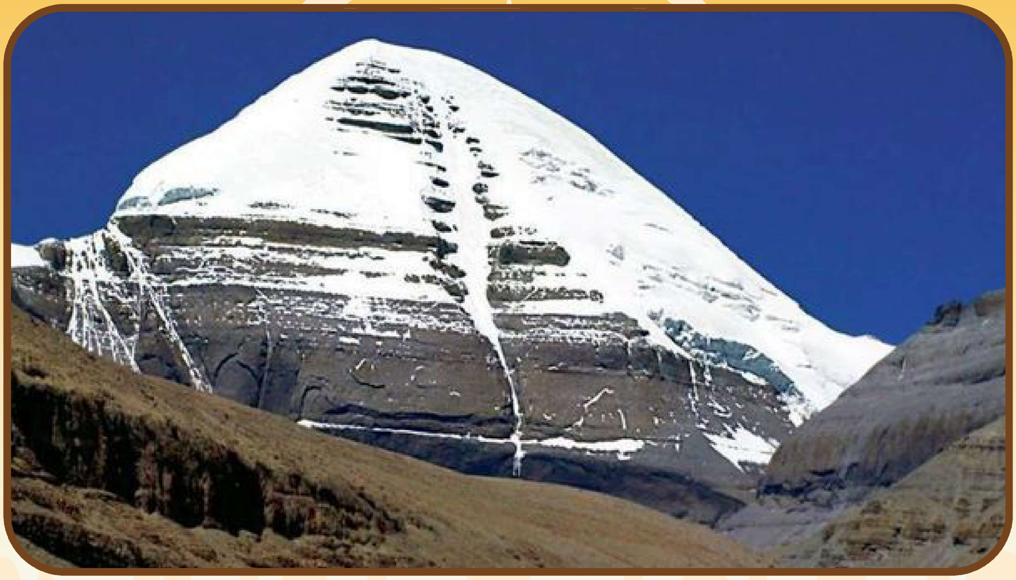

जो त्रिशूल धरें नहिं शूल करें, दुख दारिद्र को निर्मूल करें ।

जो त्रिपुण्ड करें जो त्रिनेत्र धरें जिन्ह एक ही नेत्र से लय को करैं ।

जो दिशा विदिशा को न ध्यान धरैं हिय में नित राम को ध्यान करैं ।

कैलाशपति काशीश भी हैं कण-कण क्षण-क्षण में निवास करैं ।

निर्मूल-समूल हो मूल प्रभो ! हम दास हैं एक ही ध्यान करैं ।

हे-उमा रमण मैं तेरी शरण दो भक्ति हमें हिय में सुमिरैं ।

।। अनुभव ।।

संसार असार में सार कहाँ, व्यवहार को हार गले में पड़ो है ।
सब हार गये अब जीत कहाँ, जग जीत गयो हम हार गये हैं ।
मनुआ अबतो तनि जाग जरा, भव नींद भगा प्रभु द्वार खड़े हैं ।
प्रभु राम के रूप पे हार जरा, जहँ हारेऊ पै सब जीत गये हैं ।

।। धन्य धरा तुमको प्रणाम ।।

हे धन्य धरा तुमको प्रणाम ! मैं धन्य हुआ करके प्रणाम !

गंगा जमुना बद्री केदार, हरि हर का द्वार जहँ हरिद्वार ।
द्वारकाधीश अवधेश राम, ऊषा बद्री नयनाभिराम ।
जय जगन्नाथ हे पाहिमाम, हे रामेश्वर तुम पूर्ण काम ।
हे धन्य धरा तुमको प्रणाम ! मैं धन्य हुआ करके प्रणाम !

जहँ सूर्य चन्द्र हैं राम कृष्ण, जहँ गोवर्धन राधा के कृष्ण ।
आकाश शिवा के चिदाकाश, गणपति विवेक देकर प्रकाश ।
हे विन्ध्य देश कामद स्वरूप, हे बृज प्रदेश शृंगार रूप ।
हे धन्य धरा तुमको प्रणाम ! मैं धन्य हुआ करके प्रणाम!

सचराचर में गुरु का निवास, करते साधक का मोह नाश ।
हे जग निवास हे घटाकाश, तुम घट मठ में करते निवास ।
तुम श्रीनिवास हे उमानाथ, कण क्षण प्रतिपल हो नाथ साथ ।
हे धन्य धरा तुमको प्रणाम ! मैं धन्य हुआ करके प्रणाम !

।। माँ ।।

मैं कल्पना में घूमता अतीत को मैं खोजता,
कोई पराया था न जब वह स्वप्न सा मैं देखता ।

चंदा भी तो मामा हि था सूरज भी न तपता कभी,
सम्बन्ध माता और पिता से आज मैं अब जोड़ता ।

जो मिल गया वह खा लिया जो फट गया सिलवा लिया,
न खाट की परवाह थी न नींद की मुि कल कभी ।

उस ताड़ना में ताड़-न अब भावना मैं खोजता,
उस स्वाद और उस चाह को दिन रात मैं अब खोजता ।

जब याद आती गोद की माँ की शकल मैं खोजता,
रोना यदि मैं चाहता आँचल का साया खोजता ।

तस्वीर माँ की मिट गई साया पिता का न रहा,
यादों की भीती पर जरा अपने को मैं अब खोजता ।

।। अम्मा ।।

अम्मा नित सोया करती थी, अम्मा नित जागा करती थी ।
सोते जगते ध्यान एक ही, बच्चों पर रखा करती थी ।
न मैंने जप करते देखा, न कोई तप करते देखा ।
धन्य साधना उनकी ऐसी, बिन आशा सब कुछ करती थी ।
बिलख बिलख कर रो पड़ता हूँ, तू जीवन्त तपस्या जैसी ।
माफ करो अब अम्मा मेरी, मेरी गति हो तेरी जैसी ।
पाला पोसा और संभाला, छोड़ दिया इच्छा हो जैसी ।
सेवा का फल तुझे मिलेगा, आज मेरी है इच्छा ऐसी ।
न ही दिया कभी तुझको कुछ, माँग-माँग कर रोज थकाता ।
आँचल की छाया देती थी, तरुवर की छाया हो जैसी.
किंकर नंदन तुझे पुकारे, भोर हुआ हो उषा जैसी ।
मेरे जीवन की प्राची बन, उदय बनी रहना रवि जैसी ।

।। पुकार ।।

बस जरा सा काम है तुमसे हमारा ।
नाम का मैं लूँ सहारा यह इरादा ।।

बस जरा सा काम है तुमसे हमारा ।
न कोई संसार में कोई हमारा ।
जब कभी भगवान को तज और जायें ।
तब जरा सा दे के बाँहों का साहारा ।
द्वार उसके छोड़ देना वे सहारा ।

इन्द्रियों ने नात न अपना निभाया ।
नाम बस एक याद था उसको भुलाया ।
जब चलें पग और मग मुझको पकड़ कर ।
मीत से मिलने में देना तुम सहारा ।
आसरा बस एक है वह मीत प्यारा ।

याद न आये सभी को भूल जाऊँ ।
अंत में यदि मैं किसी को फिर बुलाऊँ ।
जोर से झकझोर कर मुझको हिलाना ।
प्रेम और सम्बन्ध की यादें दिलाना ।
बीच में न छोड़ना देना किनारा ।

बस जरा सा काम है तुमसे हमारा ।
साधनों की चाँदनी में भूल न जाऊँ कहीं मैं ।
वासना की आस ना मुझको पकड़ ले ।
खींचकर तुम डाल देना उस शरण में ।
और न कोई बने मेरा सहारा ।

बस जरा सा काम है तुमसे हमारा ।
नाम का मैं लूँ सहारा यह इरादा ।।

।। प्रकृति ।।

चहक उठीं हैं सब चिड़ियाँ भी उषा की किरणों से पहले ।
कुहू कुहू कोयलिया बोले कर्णों में अमृत रस घोले ।
युवती पनघट पर सकुचावें नहीं दिवाकर देखे पहले ।
तन मन की अटपटी विडम्बना मन चाहत है कोई खेले ।
गाय गोमती पिला रही है बालक को थन अपने खोले ।
नीरज का भी मन करता है अब तो सूरज आँखें खोले ।
तनिक निहार सकूँ प्रीतम को कृपा दृष्टि दे तो वह पहले ।
गंगा में स्नान करन को माताएँ बालक ले डोलें ।
रज कण तन में लिपट गये हैं गंगा की डुबकी से पहले ।
शुक निकले हैं नील गगन में तरु रसाल की आशा बोले ।
रस रसराज साज सब चाहें प्रकृति प्रकृति है मौन ह्वै बोले ।
प्रकृति वधू कुछ माँग रही है घूँघट पट खोलन से पहले ।
प्रथम किरण मुझको मिल जाये मिलन मेरा सूरज से पहले ।

।। अनुभव ।।

कभी कभी तो धूप छांव भी मन को मोहित कर लेती है ।
कभी कभी दामिनि की दुति भी कड़क हुई बोला करती है ।
गगन देखकर अमन चैन भी कभी कभी तो मिल जाता है ।
कड़ी धूप भी हरियाली को हरा भरा भी कर देती है ।

कभी मुझे आँसू की धारा हल्का सा हल्का करती है ।
मेरी यादों की खेती को और सुखद वह कर देती है ।
मिलना कभी नहीं है संभव जीवित मिलन भाव रखती है ।
हृदय भीति पर चित्र अनोखा याद कराकर लिख देती है ।

विपदा को विपदा मत मानो सुख तो असली वह देती है ।
विपदा के साथी को लाकर आशा की किरणें भरती है ।
पूरब पश्चिम उत्तर दक्षिण सुबह शाम तो होती ही है ।
नित्य उजाला करने का संदेश निशा ही तो देती है ।

।। हम हैं दीपक भाव हमारा ।।

दीपक सा हो लक्ष्य कहीं भी, हम जल जाएँ जलाए जाएँ ।
सबको तो हम दिखें, रास्ता सबको जरा दिखाते जाएँ ।
इच्छा की बाती हो मेरी, सुन्दर बन सबको हरसाएँ ।
नृत्य करें सब घर के बालक, देख देख पूनम बन जाएँ ।
हृदय दीप में घृत हो ऐसा, भर भर हमको सब हुलसाएँ ।
लक्ष्य हमारा प्रेम बाँटना, चढ़ चढ़ छत पर उसे लुटाएँ ।
प्राणों से प्यारी ये धरती, प्राण मेरे इस जग के बासी ।
चढ़ विमान पुष्पक पर ऐसे, हाथ उठा कर इसे दिखाएँ ।
करें रोशनी सूरज जैसी, शीतलता मुख से फैलाएँ ।
रहे अमावस निशा घनेरी, तारे बन हम शोभा पाएँ ।
नहीं मिटा सकते हम तम को, तनिक भावना तो बरसाएँ ।
राम नाम की ज्योति जलाये, रामराज्य सा देश बनाएँ ।

।। अनुभव ।।

जीवन प्रतिपल चलता जाता, कुछ नित रोज बता जाता है ।
कभी शुक्ल सा दिखता है ये, कभी कृष्ण भी हो जाता है ।
दीप जलाना और बुझाना, रोज सिखा समझा जाता है ।
प्रतिदिन लक्ष्य बदलता जाता, परम लक्ष्य दिखला जाता है ।
जीवन करवट सी लेता है, पूरी रात जगाता जाता ।
रात नहीं सोने देता है, दिन भर कहीं घुमा लाता है ।
यह अनंत सागर है ऐसा, रोज मुझे नहला लाता है ।
जीवन की धारा में जैसे, कटी डाल सा बहता जाता ।
कोई नित्य चलता जाता है, कभी-कभी कुछ कह जाता है ।
कई बार मीठी बातों से, मेरे मन को बहलाता है ।
सूर्य चन्द्र और तारे देखे, पर्वत नदियाँ सारे देखे ।
कोई एक है जो मेरा है, जो मुझमें ही रह जाता है ।
तू-तू मैं-मैं बहुत देख ली, नश्वर-सत्य व्यवस्था देखी ।
शरण - शरण में आ जा अब तो, किंकर ही समझा जाता है ।

।। विजया दशमी ।।

विजया दशमी तभी मोह जब मारा जाये ।
नौमी भी है तभी भक्ति जब नौ आ जाये ।
मधुर कृष्ण अवतार अष्ट सखि धूम मचावें ।
सात आवरण पार सप्तमीं सभी मनावें ।
षठ विकार हों दूर सम्पत्ति षष्ठ ही आवे ।
पंच तत्त्व जड़ रूप तत्त्व बस एक मनावें ।
चौथ तभी शुभ होए दिशा चारों दरसावें ।
दिसि अरु विदिश चहूँ दिसि राम कृष्ण दरसावें ।
तिथि तृतीया तभी राम तिहुँ काल लखावें ।
राम भजन सत्संग भक्ति अमृत बरसावें ।
तिथि द्वितीया धन्य धन्य है धन्य तभी जब ।
वक्र चन्द्रमा शिष्य सदासिव शीश धरावें ।
एकम में अद्वैत द्वैत को भेद मिटावें ।
नित नित बढ़े प्रकाश पूर्णिमा तक पहुँचावें ।
राम राज्य है पूर्ण पूर्ण बस राम एक हैं ।
जनकलली के साथ राम सिंहासन साजें ।
जय जय जय हनुमान अवध आनंद मनावें ।
भरत लखन रिपुदवन शरण को शरण बिठावें ।

।। अनुभव ।।

तनिक कोई आ करके अपना अपनापन दिखला देता है ।
जेठ मास तम मयी अमावस पूनम सी बिखरा देता है ।
कोई आकृति ऐसी होती, ऐश्वर्य दिव्यता सी होती है ।
कोई कभी जीवन में आकर शीतलता सी ला देता है ।

चलना फिरना सभी सिखाते प्रगति दिशा भी सभी बताते ।
कभी कोई मिल जाये राह में तनिक जरा सा रुक जाता है ।
चलने का तो मन न होता और कहाँ हम बढ़के जायें ।
हृदय भवन में हमें बिठा के मंजिल सा वह बन जाता है ।

वाणी तो सबकी होती है भाषा भी सबकी होती है ।
कर्ण रंध्र से आकर कोई अमृत सा छलका जाता है ।
खूब बहाओ खूब लुटाओ डूब डूब कर भर भर जाओ ।
रामकथा सत्संग मिले मन सीयराममय हो जाता है ।

।। बाल गोपाल कविता ।।

चंदा मामा कल जब आना तारों को भी साथ में लाना ।

तितली मेरी मिले कहीं तो उसको जरा पकड़ कर लाना ।

मेरी बगिया के फूलों को देख देख तुम फिर हरषाना ।

बिल्ली कहीं मिले तो कहना चूहे बहुत निकल आये हैं ।

तिथि समय भी उन चूहों को बार बार बतलाकर जाना ।

बिल्ली मौसी आकर पूछे कहाँ गये सब चूहे मेरे ।

पूनम के चंदा बन करके मौसी को तुम खूब हँसाना ।

हे प्यारे तुम चंदा मामा पूनम को ही क्यों आते हो ।

कभी अमावस मामी को भी अपने साथ लिवा कर लाना ।

।। अनुभव ।।

जीवन तो ऐसा सपना है, अपना कभी नहीं होता है ।
बीते कल और आते कल की, हर दम ये सोचा करता है ।
राजा हो या रंक कोई भी, जागा नहीं कभी करता है ।
जाग यदि वह जाये तो फिर, जीवन न सपना होता है ।
कभी जीत भी जीत नहीं, और हार कभी भी हार न होती ।
धैर्य धरो और रहो मध्य में, आदि अंत होता रहता है ।
कृतयुग त्रेता द्वापर बीता, कलियुग भी तो बीत रहा है ।
जो अतीत से कुछ ना सीखे, मानव ऐसा ही होता है ।
गर्व करो मत, और डरो मत, लगे रहो सद् मारग पर तुम ।
जीते का सुख हारे का दुख, केवल एक सपना होता है ।
मध्य मार्ग है मध्य लक्ष्य है, मध्य दिवस है मध्य ईश है ।
राम कृष्ण का आना भी तो, मध्य काल में ही होता है ।
झुक जाना एक ओर, पतन का कारण तो निश्चित बनता है ।
जीवन तो है एक संतुलन, बाकी सब अपना सपना है ।

।। अनुभव ।।

मैं तो हूँ सम में ही रहता और तराना गा चुका हूँ,
आरोह और अवरोह तो रवि चन्द्र का भी नित्य होता,
भव में विभव तो नित्य रहता मैं पराभव देखता हूँ ।

कृष्ण ने यमुना पुलिन पर रास तो एक दिन किया था,
गंग सी उन भावनाओं को तो परिपूरण किया था,
नंद के प्रिय लाल का हर पल महारस चाखता हूँ ।

जान्हवी की वे तरंगें जमुन की वह नील धारा,
ज्ञान की धारा का संगम गुरु वचन में नित्य देखा,
नित्य संगम अरु समागम, वेद सागर में रहा हूँ ।

भव में भी मैंने आदि देखा मध्य भव का देखता हूँ,
अब पराभव में कृपा का रूप भव को देखता हूँ,
मैं त्रिलोचन की कृपा को मध्य में ही देखता हूँ ।

लोचन प्रथम ही आदि है, उद्भव को मैं नित देखता हूँ ,
अंत का लोचन ही पालन, जिसमें खड़ा मैं सोचता हूँ,
मध्य लोचन राम को सियवर सुदर्शन देखता हूँ ।

।। अनुभव ।।

न तो मैं तब और था कुछ, और न ही कुछ अभी हूँ ।
राम का गुणगान करके बन गया बस अब कवि हूँ ।
गंग के पाषाण जैसा मैं लुढ़कता ही रहा हूँ ।
जो है सबमें एक रस रहता सदा और सर्वदा है ।
बस उसी की सृष्टि का मैं एक रज कण सा अभी हूँ ।

गोल पत्थर बन गया तो लोग शंकर ही समझते ।
नाम ले के राम का वे खुद-ब-खुद ही तो हैं तरते ।
भावना तो भक्त की मैं खुद समझता ही रहा हूँ ।
गुरु कृपा अवलंब लेकर गुरु बना मैं पुज रहा हूँ ।

ज्ञान क्या अज्ञान क्या न कर्म की गति जान पाया ।
बह रहा हूँ धार में संसार सोचे चल रहा हूँ ।
मैं तो हँसता और हँसाता जो भी है मिलता मिलाता ।
मातु सिय पितु राम मेरे मैं तो बालक ही अभी हूँ ।

ज्ञान आया जब कभी भी गोद से गिर जाऊंगा मैं ।
बीच धारा से हटा तो बीच में लग जाऊंगा मैं ।
डूबना मैं चाहता हूँ न निकलना चाहता मैं ।
तर गये जब और पापी जायेगा तर यह शरण भी ।

।। अनुभव ।।

अर्जन का मन्तव्य विसर्जन,
तर्जन का भी अंत मौन है ।
कन्या का भी दिव्य समर्पण,
लक्ष्य सभी का एक समर्पण ।

गुरु ने गुर बस एक बताया,
जीवन तो बस सतत साधना ।
मन और बचन कर्म से धन से,
करना है सबका संवर्धन ।
धन्य धन्यता प्राप्त करे तब,
कर्म सभी हों प्रभु को अर्पण ।

प्रियता प्रिय प्रिय को लगती है,
त्याग विषय को कर निर्मल मन ।
प्रति निमेश रज कण वह बसता,
सुख सागर में कर तू मज्जन ।
अघ गंजन दुख भंजन रंजन,
सब कर्मों का कर दे तर्पण ।

दधि का जब होता है मंथन,
सुख या दुख जो भी तुम मानो ।
करना तो पड़ता है घर्षण,
मुदिता मथती खूब दधी को,
माखन का होता संकर्षण।

दुख तो दुखी तभी होता है,
निज तन से दुख देखे पर तन ।
सुख भी तभी सुखी होता है,
रग रग में भरदे सुख कण कण ।
मृत जीवन का लक्ष्य नहीं है,
पल पल है अमृत का वर्षण ।

।। अनुभव ।।

जो भी समय मिला है तुमको,
लोग मिलें हैं तुमको जो भी,
जगह मिली हो तुमको जो भी, कृपा उसी में छिपी हुई है ।

ऋतु अरु कुऋतु दिशा और विदिशा,
द्वितिया अथवा पूर्ण चन्द्रमा,
मस्तक सबको नवा चलो तुम, शिव की कृपा सभी ने ली है ।

सिर हो अथवा हृदय देश हो,
चरण हस्त या नेत्र कर्ण हों,
जाति कुजाति सभी को भूलो, आखिर सबमें तत्त्व वही है ।

ज्वार बाजरा धान और गेहूँ,
प्रकृति सभी में पूर्णमयी है,
जब जो जहाँ मिले सो ले लो, कहा राम ने किया वही है ।

अपनों में अपना न देखा,
सपनों में भी द्वेष भरा है,
तो विनाश को मत तुम कोसो नियति तुम्हारी यही सही है ।

।। अनुभव ।।

अस्त शब्द जब हो जाये तब भाव उदय हो जाता है,
करने की इच्छा हो जाये तो भाग्य उदय हो जाता है ।
दोष दिखाई दे सब में तब मलिन हृदय हो जाता है,
जेठ मास के जाते ही आषाढ़ शुरू हो जाता है ।

समय स्थिति जो मिलती पर कार्य सभी हो जाता है,
करना ही कुछ न आये तब दोष समय को जाता है ।
उपयोग समय का तो सीखो उपयोगी सब हो जाता है,
धर्म बुद्धि बल चिंतन के घटते जीवन में सब घट जाता है ।

अवतार भले ही ईश्वर ले वनवास समय दिलवाता है,
उपयोग समय का जो करता तो रामराज्य बन जाता है ।

जो सहज मिला न उसे मान जो नही मिला उसको पाना,
मारीच भगा ले जाता है जीवन दुखमय कर जाता है ।
यदि पुन: राम को पाना है मुद्रिका राम की ले आओ,
बिन राम नाम हनुमान भी हों नहिं शांति कोई ले पाता है ।

।। अनुभव ।।

काल एक भूमि है काल एक सागर है काल वायु अग्नि है काल महाकाल है ।

शब्द मात्र काल है काल एक वाक्य है काल ही तो अर्थ है काल ग्रन्थ सार है ।

काल एक सीमा है काल ही असीमता है काल ही तो बंधन और काल मुक्ति मार्ग है ।

काल अभिशाप है और काल ही वरदान है तर्क भ्रम संशय का काल समाधान है ।

ईश्वर भी काल है जीव में भी काल है जड़ और चेतन का कर्ता भी काल है ।

सृष्टि सचराचर में मूल मात्र काल है नास्तिक भी काल और आस्तिक भी काल है ।

जीवन और मृत्यु में लाभ और हानि में यश और अपयश का कारक भी काल है ।

ज्ञानी और मूरख में आलस पुरुषारथ में मति और कुमति सुमति सब काल है ।

शरण समझ राम के अधीन सूर्य चन्द्र काल एक राम औ सुकाल एक राम हैं ।

रूप में कुरूपता में जीत और हार में भी राम राम राम और राम राम राम हैं ।

मंगल अमंगल में घर में या जंगल में राम रहें साथ तो श्रम भी विश्राम है ।

धन मेरे राम हैं जीवन भी राम हैं स्वाँस प्रति स्वासन में राम परिधान हैं ।

शरण पकड़ राम, छाड़ सब कामन को, राम के भजे से कर देत माला माल हैं ।

।। अनुभव ।।

जिसको अपना कहीं कोई भी न मिला उसको अपना भी बस एक सपना लगा,
हम तो खुद आपकी राह पर थे खड़े राह में कोई अपना न अपना लगा ।
हम परायों की राहों में चलने लगे वे सभी एक दिन अपने लगने लगे,
जिसको चाहत नहीं प्यार की राह की प्यार का रास्ता उसको सपना लगा ।

हम तो आँखें बिछाये खड़े रह गये वे तो बिस्तर उठाकर कहीं ले गये,
रात पूरी लगी वे बिछाते रहे हम तो आराम की नींद सोते रहे ।
वे तो नफरत की बाँहें समेटे रहे हम तो बाँहें पसारे खड़े रह गये,
देखना है तो देखो यहीं आज ही कल की बातें हमेशा ही करते रहे,
जिसको अब न दिखा उसको कब दीखता जो दिखा न दिखा उसको सपना लगा ।

जब निगाहों में ही नूर बसता नहीं उसको कोहिनूर भी एक सपना लगा,
हम तो आँखों के तारे बनाने चले आँख में नूर उनके नहीं रह गया ।
जिसके दिल में खुदा भी न घर कर सका वो कभी कब्र में भी न खुश रह सका,
अब हमें राम की दासता मिल गई अब तो सारा जहाँ अपना सा दीखता,
बादशाहत नहीं राम की सी कहीं नौकरी चाकरी का मजा आ गया ।
जिसको अपना कहीं कोई भी न मिला उसको अपना भी बस एक सपना लगा ।।

।। अनुभव ।।

रक्त किसलय के दलों में ओस की बूँदें पड़ीं,
भावनाएँ फिर निकलकर नेत्र से बहने लगीं ।
श्रम नहीं हमने किया न कभी भ्रम ही हुआ,
भ्रम हमारा तोड़ने को आज बूँदें बह चलीं ।
अब शरद के इस शशी को कौन देखेगा भला,
सूर्य की आशा लगाकर अब निशा ढलने लगी ।
भावनाएँ पत्थरों को चोट न पहुँचा सकीं,
न वहाँ पर उस व्यथा का मूल्य ही कुछ ले सकीं ।
बूँद ये पानी नहीं जो बरसता ही रहे,
फिर बरस कर सागरों से और जल लेने लगीं ।
हम दिवाकर की उषा को फिर हृदय में थाम लेंगे,
भावनाएँ फिर उफनकर फिर निशा गिनने लगीं ।

।। अनुभव ।।

ज्ञान तो बस आज होगा,
कर्म तो बस आज होगा,
भावना के चरम पर ही ज्ञान का सत्कार होगा ।

कल हमारी कल्पना थी,
कल हमारी कल्पना है,
जब हमें इस सत्य की अनुभूति का अहसास होगा ।

न कभी उत्कर्ष होता,
ह्रास ही होता कभी है,
नित्यता का नित्य ही यूँ ही उदय और अस्त होगा ।

काल के सब खण्ड हैं,
टूटे जुड़े सब अण्ड हैं,
सारे समीकरणों का भी हल तो तभी जीवंत होगा ।

वह बीज भी पहला ही था,
वह फल भी खुद पहला ही है,
रस भरे फल स्वाद का बस तभी अंदाज होगा ।

न भूत है न भविष्य है,
भाषा का मिथ्या सत्य है,
वह आज था वह आज है सदैव ही बना रहेगा ।

।। अनुभव ।।

तुम बख्त को कोसो नहीं कमबख्त तो वो है नहीं,
जब बख्त तो था पास में तब बख्त तुमको था नहीं,
न चल सके जो बख्त से कमबख्त तो होता वही,
जब ईश देता दान है बस बख्त ही देता तुझे,
वह दान ही वरदान है यदि जान ले बस जो कोई,
जन्म का भी बख्त था बचपन जवानी बख्त था,
अब भी बचा जो बख्त है कुछ न गया अब बख्त है,
जो भी मिला वह बख्त था जो हो रहा वह बख्त है,
तो भी न जाना बख्त को तो तू बता तू कौन है ?
कर से न माला ही करी कर से न तू कुछ कर सका,
कर ले अभी भी बख्त है अब न कहो कम बख्त है ।

।। अनुभव ।।

मैं एक ऐसा गीत हूँ जो न कभी गाया गया,
मैं साज का वो तार हूँ जो न कभी छेड़ा गया ।
मैं हर समय का राग हूँ न रागिनी कोई मेरी,
न राग हूँ विराग न अनुराग में खोता गया ।
मैं वह पथिक हूँ राह का मंजिल जिसे पता नहीं,
हर मोड़ पर विश्वास कर मैं बीच में खड़ा रहा ।
मैं साधना का सार हूँ, निस्सार को देखा नहीं,
आराधना और साधना को, साधना सीखा नहीं ।
मैं वो कृपा का पात्र हूँ, भरता रहा बहता रहा,
एक बूँद का भी स्वाद मैं, न ले सका सोता रहा ।
अब एक आशा है बची, जब जाऊँ इस संसार से,
वह बूँद बस आकर गिरे, जो चाहता ही रह गया ।
नीले गगन नीले जलधि, हे नीलधर हे नीलमणि,
बहकर चलो जब राह में, इस बूँद को न छोड़ना ।

।। माली और बीज-वृक्ष के बीच वार्ता ।।

आज हमें कुछ दिखा भूमि में दिव्य कल्पना निकल पड़ी है,
जिसकी तरु छाया ली हमने आज पुन: वह प्रगट हुई है ।
हे मेरे नन्हें से बालक कब से तुम तो दबे पड़े थे,
शांत शुद्ध अद्वैत भाव में निर्गुण रूप सुखी रहते थे ।
ज्येष्ठ मास के तप्त तेज और पौष मास की शीत पड़ी थी,
अवतारों से अब तक ऐसी दिव्य परम्परा बनी हुई है ।

जीवन एक तितिक्षा होता ऋतुओं को तुम अब झेलोगे,
पवन बहेगा कभी कभी जब रिमझिम रिमझिम से खेलोगे ।
मैं तो सहमा सा रहता हूँ कभी कहीं वो दिन न आये,
कहीं किसी की स्वार्थ भावना धार बनी तुम पर चल जाये ।
जो होता सबका हितकारी अजब रीति है जग की न्यारी,
जड़ें उसी की काटी जातीं वंश परम्परा बनी हुई है ।

हम तो कभी निराश न होते बोते उगते फिर बढ़ते हैं,
छाया फल सुन्दरता देते फिर भी हम नित नित कटते हैं ।
जिसमें सबको सुख मिलता है हमतो मात्र वही करते हैं,
सूर्य वंश अवतंस शृंखला बनी रही और बनी हुई है ।

।। अनुभव ।।

शून्य भीति पर प्रेम तूलिका प्रेम मूर्ति को जब गढ़ती है,
बढ़ती है तब प्रीति मिलन की रीति अनोखी सी बनती है ।

न होता अंगुष्ठ अंगुलि भी नहीं क्रिया कोई करती है,
चरण नहीं चलता दिखता है हाथ नहीं कुछ करता दिखता,
प्रेमी प्रेमास्पद हों जैसे सृष्टि प्रक्रिया यूँ चलती है ।

नित्य सुसुप्ति या स्वप्न अवस्था में भी वह शक्ति दिखती है,
करता तो सब मैं दिखता हूँ किया कराया वह करती है ।

नित्य प्रभाकर की किरणों में इंदु कुंद की उस आभा में,
अमित अमिय सी छटा प्रभा नित मेरे चित को हर लेती है ।

करता है सब कौन, प्रकृति में रस को भरता,
प्रतिपल मन में बात आजकल ये आती है ।

लव निमेष हूँ मात्र लेष नहिं कुछ पुरुषारथ,
विधि संचालक संहारक में जो रहती है ।

।। वर्षा में हिमालय का अनुभव ।।

बादलों ने आज आकर हमको थोड़ा छू लिया,
श्याम घन का प्रेम उषा के कणों सा बन गया ।
मन हुआ छुप छुप के देखें कौन मेरे पास है,
व्योम के नीचे सभी को एक में ही कर लिया ।
हम अचल थे चल न पाते बाँह में कैसे पकड़ लें,
एक क्षण में फिर हमें रिम झिम सा नहला ही दिया ।
तप्त किरणों से तपा था आज तो अन्त:करण,
तृप्ति का अहसास देकर फिर यहाँ से चल दिया ।
स्वांस में प्रति रोम में हर अंग पर वह छा गया,
कुछ तो हमको मानता था वह हमें बतला गया ।
फिर से सावन की घटा बन करके प्रिय तुम आओगे,
इंद्रधनुषी चूनरी वह श्याम ही पहना गया ।

।। पुकार ।।

माँ संभालो आज मुझको आज तो मैं थक गया हूँ,
अग्नि की न लो परीक्षा खाक अब तो हो गया हूँ ।
अग्नि की ज्वाला की तेजी और मैं किसको सुनाऊँ,
जो स्वयं ही जल चुका हो आज उससे कह रहा हूँ ।

वर्ण है सन्यास मेरा रक्त में सन्यास ही है,
प्रेमियों के प्रेम में परिवार का सा हो गया हूँ ।
दक्षिणायण उत्तरायण कृष्ण शुक्ल और धूप छाया,
सुख दुखों की नित अनोखी मैं समीक्षा कर रहा हूँ ।

अग्नि में श्रीखण्ड सम तुम चल गईं थीं मैथिली,
माया जली तुम निर्मली वंदित हुईं स्वर्णिम कली ।
प्रतिबिंब लौकिक जल गये वे बिम्ब में सब मिल गये,
बरसत सुमन और दुंदुभी श्रीराम तुमको मिल गये ।

हे-माँ हमारी भी सुनो यह मैथिली तेरी शरण,
चरण रखकर शीश पर कर से कृपा कर दो जरा ।
प्रतिबिंब तो हट जायें अब तुम बिम्ब हो थामो जरा,
मिल जाऊँ अब मैं धार में सागर हृदय में लो जरा ।।

।। अनुभव ।।

एक था वह काल ऐसा आसमां को छू लिया ।
एक था वह काल ऐसा जब जमीं को छू लिया ।
हर निमिष में चार युग के काल को भी छू लिया ।
चार युग के सब सुखों को एक पल में छू लिया ।
छू लिया हर आवरण को ब्रह्म सुख को छू लिया ।
सप्त रंगों को छुआ और सप्त सागर छू लिया ।
हर प्रकृति में एक की सत्ता को मैंने छू लिया ।
स्वाद रस और षडरसों के स्वाद को भी छू लिया ।
आरोह और अवरोह की साँसों को मैंने छू लिया ।
स्थाई के प्रारंभ को अंतरा के मध्य का,
और तराना के विलय को आज मैंने छू लिया ।
छू लिया है इस जहाँ की हस्तियों के भाव को भी ।
आँसुओं के सागरों की थाह को भी छू लिया ।
शरण तूने क्या छुआ और तूने क्या किया ?
गर किशोरी राम जी के चरण को न छू लिया ।

।। अनुभव ।।

हम गीत मीत के ही लिखते, हम फाग राग में ही गाते,
हम रंग बनाकर लाते हैं, वे गाल हमें अब न मिलते,
पर फाग राग भी क्या गावें जो सुनते थे वे न सुनते ।

हम राग उठाते थे जब जब, तब कहीं तराना होता था,
जब दूर चला जाये कोई, तब हृदय लगाना होता था,
लिखते तो गीत अभी भी हैं खो जाने वाले न मिलते ।

तब कलम बाद में चलती थी, स्याही पहले लिख देती थी,
वाणी बोले या न बोले, आँखें ही बातें करती थीं,
अब उस कागज की भाषा को पढ़ने वाले ही न मिलते ।

सपना हम कभी सुनाते थे, वे जग कर सुनते रहते थे,
हम अपनी बात सुनाते थे, अपनी हो ऐसे सुनते थे,
रसना में तो अब भी रस है पर पीने वाले न मिलते ।

जब तार हृदय के छिड़ते थे, तब तार हृदय के मिलते थे,
अब हम ही लिखते पढ़ते हैं, गाते और स्वयं बजाते हैं,
अब ताल बजाते हम रहते न पैर किसी के हिलते हैं ।

वर्जित स्वीकृत स्वर होते थे, जो सुना जाये वह कहते थे,
साहित्य शास्त्र की मर्यादा, सुनने गाने में होती थी,
रागों में सीटी अब सुनते संगीत घराना न मिलते ।

।। अनुभव ।।

हिरना दौड़ा जाये बिना पैरों के ऐसे,
सब पाना है आज देख सपनों में जैसे ।
जो पाना है उसे निकट वह कभी न आये,
मिला हुआ न खाए नीर बिच मीन हो जैसे ।

बुद्धि डोर तो हाथ पकड़ न हिरना आवे,
न जाने क्यों मुझे जोर से वह दौड़ावे ।
तीन प्रहर गये बीत निशा ज्यों हुई अमावस,
न तारे न चन्द्र घटा घनघोर हो जैसे ।

हिरना को है रोकना रुप दिखाओ राम ।
हिरना को रोके बिना बने न कोई काम ।।

राम रूप देखे बिना हिरना रुका न कोय ।
जग से भागा इसलिए सुंदर मिला न कोय ।।

समुझ समुझ जो चले डिगे नहिं हिम के जैसे,
बहे नहीं जल धार टूट तरुवर के जैसे ।
अपने भाव कुभाव को पकड़ मातु पट कोर,
पकड़ै बालक मातु शरण की थाह हो जैसे ।

।। रक्षाबंधन ।।

बाँधना यदि आज राखी खोलना न फिर कभी भी ।
घर में आ जाना कभी भी, और न जाना कभी भी ।
दूर भी जाना पड़े तो, दूर न होना कभी भी ।
याद कर उस बचपने को भूल न जाना कभी भी ।
लाख शिकवे हों दिलों में और लाखों भी गिले हों ।
उन गिलों को याद करके दुख बढ़ाना न कभी भी ।
याद ने केवल तुम्हारी सागरों को भर दिया है ।
आँसुओं की धार को बूँदों से न गिनना कभी भी ।
याद तो रहती नहीं बातें तो केवल बात हैं ।
खाई को भरना है तुम्हीं को, सेतु का निर्माण करना ।
प्रेम की मीठी रसम को भूल जाना न तुम कभी भी ।
हाथ मेरा प्रेमवश पैरों को छूना चाहता है ।
हृदय भी तुमको हृदय से फिर मिलाना चाहता है ।
दुख के सागर में तो जीवन डूब कर भी न मरा है ।
प्रेम के आँसू से नहलाना न भूलना कभी भी ।

।। अनुभव ।।

बनती हैं दिन रात समस्या, कुछ के तो हम हैं निर्माता ।
दोहराते इतिहास उसी को, बार बार जो आता जाता ।
किसको याद करें और भूलें, समझ नहीं क्यों हमको आता ।
विस्मृति भी स्मृति सम गुण है, हमें याद ये न रह जाता ।

याद करो नित वे वे बातें, किसने क्या उपकार किए हैं ।
भूल जाओ सबरी वे बातें, किसने क्या अपराध किए हैं ।
जीवन में सुख से जीना है, पलकों को तो मित्र बना लो ।
पुतली को बस तुम तब खोलो, गुण दर्शन का मार्ग बना लो ।

किस मनुष्य में सम्बन्धों में, गंगा सी निर्मलता होती ?
गंग समझ कर नित्य आचमन, करने का अभ्यास बना लो ।
समय बचा है जितना प्यारे, प्रभु गुण गाकर सब कुछ पा लो ।
गुण अवगुण हममें मत देखो, प्रभु के गुण गन सुनो सुना लो ।

।। अनुभव ।।

न तुमको देखा करता हूँ न खुद को देखा करता हूँ ।
दोनों के अंदर जो रहता मैं उसको देखा करता हूँ ।
न तो मैं ही कुछ करता हूँ न ही तुम ही कुछ करते हो ।
सब कुछ करके जो न दिखता मैं उसकी पूजा करता हूँ ।
उपादान न मेरा कोई समाधान न मेरा कोई ।
सोते जगते जो वह कह दे केवल बस वह ही करता हूँ ।
सुंदरता सुन्दरतम् मेरी प्रियता का आधार एक है ।
सुंदर को जो सुंदर करता मैं उसको देखा करता हूँ ।
मूरति जब इतनी सुंदर है हँसना मिलना इतना सुंदर ।
मूरति के उस निर्माता को मैं छिप कर देखा करता हूँ ।
नित्य दिवाकर से मिलता हूँ और रात्रि में वही सुधाकर ।
हरी भरी इस दिव्य प्रकृति में मैं उससे मिलता रहता हूँ ।
नृत्य मोर सुक-पिक के स्वर मैं जब जब सुन कर मन भरता हूँ ।
बस सरबस मैं पा जाता हूँ परिपूरण सबको दिखता हूँ ।

।। अनुभव ।।

भूल जाओ अब बीती बातें बीता तो सपना होता है ।
जीवन तो बस आज मिला है वही आज अपना होता है ।
राग नदी है, द्वेष अग्नि है, न तुम जलो बहो मर जाओ ।
सलिल अग्नि से सृजन करो कुछ, वह विज्ञान सृजन करता है ।
कर्म धर्म का मर्म यही है ईश्वर तो सबमें रहता है ।
अहंकार का दाह करो अब बच्चों का मन यह कहता है ।
राजनीति तो बहुत सिखा ली नन्हें मुन्ने से बच्चों को ।
प्रेम नदी में अवगाहन का हम सबका अब मन करता है ।
न तो मिट्टी ही बदली है न ही सूरज चंदा बदला ।
भारत की धरती पर अब तो राम राज्य हो मन करता है ।
गुड़ सबका मीठा होता है गन्ना भी मीठा होता है ।
कड़वाहट के बोल-बोलना रास नहीं हमको आता है ।
राम कृष्ण भी सूर्य चन्द्र हैं अयन भिन्न उत्तर दक्षिण हैं ।
शुक्ल कृष्ण में भेद मानना नहीं कभी हमको भाता है ।

।। अनुभव ।।

भारत देश नहीं है केवल, भरत बनो इसको पहचानो,
चरण पादुका सिर पर रखकर, राम मिल गये हैं यह मानो ।

इस धरती पर अवतारों का होता रहना है यह मानो,
ब्रह्म सदा से नर ही बनता, पहचानो या न पहचानो ।

सबका हित तो फिर कर लेना, अपने हित को तो पहचानो?
अवगुण तो सब में होते हैं गुण में गुण हैं यह तो मानो ।

सबका हित करने वाले को, जब हम गाली दे सकते हैं,
कौन करे कल्याण हमारा तुम सब आपस में अब जानो ।

धर्म साधुता और चरित्र है, देश प्रेम को तो अब जानो,
नहीं समझ पाये-पाओगे, स्वयं धार्मिक हो मत मानो ।

मूर्तिमान जब धर्म बनेगा, सबका हित वह ही सोचेगा,
राम पताका को फहराओ, मानव मानव तभी बनेगा ।

तनिक एक पग स्वर्ण लंक में, नहीं गये रघुवंश विभूषण,
नंदिग्राम में भरत रहे थे, राम प्रेम को मूर्तिमान कर ।

भारत भारत तभी रहेगा, राम रहेंगे दिव्य धरा पर,
मानवता के मूल राम हैं, रामदूत को तो पहचानो ।

।। अनुभव ।।

चिड़िया को दाना कोइ दे दे, मछली को पानी मिल जाये,
पानी धान खेत में दे दे, गुरु शिष्य को विद्या दे दे,
वैसा सुख मुझको मिलता है, जब कोई प्रेमी मिलता है ।

रोगी को औषधि मिल जाये, डूबत को तिनका मिल जाये,
भटके को मारग मिल जाये, सूखे को सावन मिल जाये,
वैसा सुख मुझको मिलता है, जब कोई प्रेमी मिलता है ।

साधक को साधन मिल जाये, साधन में ईश्वर दिख जाए,
ईश्वर कृपा सहज मिल जाये, शांत जलधि जीवन हो जाये,
वैसा सुख मुझको मिलता है, जब कोई प्रेमी मिलता है ।

गुरु की सुधी कोई करवाये, भावों में जब मन खो जाये,
वर्तमान में भूत दिखाए, और भविष्य सुखमय दिखलाए,
वैसा सुख मुझको मिलता है, जब कोई प्रेमी मिलता है ।

गुरु चरणों में मुझे लगाये, और आस विश्वास जगाए,
शरण-शरण है दूर नहीं है, बार बार हमको बतलाए,
अधम नहीं तू धन्य धन्य है, स्व स्वरुप स्मृति करवाए,
वैसा सुख मुझको मिलता है, जब कोई प्रेमी मिलता है ।

।। वसंत ।।

अम्मा चिड़िया आ गई तोता भी हर रोज,
नव तरु शिखरन पै दिखे कोयल भी हर रोज ।
हिए शीतल छाया करें शीतलता की छांव,
चित को ज्यों हर लेत हैं नदी छाँव और गाँव ।
कोमल किसलय पेड़ के घने सजे से आज,
जिमि धरती के शीष पर सजा हुआ हो ताज ।
बौर दिखा है पेंड़ पर ज्यों रसाल की आस,
लंगड़ा चौसा दसहरी और खास की आस ।
दद्दा हुक्का पियत हैं आँगन तखत लगाए,
गय्या सानी खात है सिर अरु पूँछ हिलाए ।
गेहूँ तो खलिहान में भूसा चमकत धूप,
दाल धान्य की गाँठ लै ताई चलावें सूप ।.
सब ऋतु साँची और भली गावत हैं सब संत,
मध्य दिवस दशरथ भवन प्रकट भये भगवंत ।
ताते सब कोई कहत हैं ऋतु तो एक बसंत,
शरण राम भगवंत हैं महिमा संत अनंत ।

।। मन का स्वर ।।

स्पन्दन ऐसा होता है और मन्द मन्द सा वह होता है,
यदा-कदा जब कभी सालता, सुख दुख सा मिलकर होता है ।

मन में अरण्यता का अनुभव जब चित्रकूट सा लगता है,
तब हल्का सा कुछ लगता है जीवन में कुछ कुछ चलता है ।

जब धूप कड़ी हो जाती है तब चलना मुश्किल लगता है,
तब कृपा हस्त यदि मिल जाये चलने का फिर मन करता है ।

सबने तो हाथ दिये केवल स्पर्श नहीं वो मिलता है,
गुरुवर के साथ चले जैसे मन वैसा चलना कहता है ।

वह रूप नहीं बस अनुभव था मिलना जुलना कुछ ऐसा था,
मन बार बार उस वाणी का रसपान कराने कहता है ।

मन का भी पूरा दोष नहीं वह और नहीं कुछ कहता है.
चख चुका जिसे वह चरणामृत उसको चखने को कहता है ।

जब तक मैं धरती पर जीवित बस उतनी आशा करता है,
उस रूप सुधा वचनामृत को पीने को मन बस करता है ।

।। अनुभव ।।

बस काल होता एक है वह फिर नहीं आता,
कर जो चला वह लौटकर फिर से नहीं आता,
कर से करो जो कर सको कल फिर नहीं आता,
न कर सका वो सोचकर बस मात्र पछताता ।

एक बूँद गंगाजल कभी फिर लौट न पाता,
आनंद का झोंका हमेशा शीत न लाता,
जो मिल गये हैं आज न उनको समझ पाता,
सिर पीटकर धुनकर वो रिश्ते ना बना पाता ।

गुरु रुप में भगवान थे जो न समझ पाता,
माता पिता की भावना जो न समझ पाता,
वह चित्र को और मूर्ति को भी न समझ पाता,
गुरु रुप में भगवान हैं यह सबको बतलाता ।

कहता शरण कर जोड़कर मैं हार तो जाता,
एक बात न कहने पे मेरा हिय भरा जाता,
गुरु रुप में पितु मातु में और भाई तुममें भी,
सियाराम का ही रुप तो सबमें नजर आता ।।

।। वसंत ।।

!! जब कुहू कुहू पिक नित बोले,
!! हिए में मधुरस अमृत घोले,
!! शीतल सुगंध बयार आई,
!! तरु पर रसाल मंजर डोले,
!! मन पिय की सूरत से बोले,
!! हिय कोडर को सम्मुख खोले,
!! मन की बयार हौले हौले,
!! मन झूल रहा हौले हौले,
!! मन थाम रहा मन तो डोले,
!! मन की गति को मन क्यों तोले,
!! नासिका बौर मादकता को,
!! मन्मत्त मंद सुगंध घोले,
!! प्रति रोम भरा मादकता से,
!! जब खाली हो तब तो बोले,
!! नयना देखत उस सपने को,
!! अब समय कहाँ है सोने को,
!! हे प्राणनाथ हे प्राण मेरे,
!! मन नहीं रहा कुछ कहने को,
!! मेरे बसन्त तुम फिर आना,
!! कुछ नया हमें सिखला जाना,
!! मन फिर है तुमसे मिलने को,
!! न हिलने को न डुलने को

।। नौ की महिमा ।।

नौ है अंकों का पूर्ण अंक, सब अंक रहें नौ के ही अंक ।
न घटे बढ़े रहता असंक, नौ एकम नौ यह पूर्ण अंक ।
नौ दुगना एक -आठ नौ अंक, सत्ताइस सात - दो नौ का अंक ।
छत्तिस से तीन - छः पूर्ण अंक, है चार -पाँच पैंतालिस में ।
हो गया पाँचगुन पूर्ण अंक, छः गुना बनाना यदि चाहो ।
ये पाँच - चार मिल पूर्ण अंक, सप्ताह दिनों के सात नाम ।
तीन-छः मिलाकर पूर्ण अंक, ये अष्ट कोण भी बन जाता ।
तब सात बैठ दो को लाता, नौ गुना बनाना हो इसको ।
तब आठ - एक मिल पूर्ण अंक, दस गुना बने तब भी देखो ।
नौ नौ ही रहता पूर्ण अंक, सम्मान शून्य को भी देता है ।
वह महान यह पूर्ण अंक, तुलसी की नवधा भक्ति यही ।

।। अनुभव ।।

है धन्य धरा इस भारत की जहँ कल कल गंगा बहती है,
घर घर में भगीरथ हो जायें बस इसी लिए सब सहती है ।
हिम सा मस्तक हम सबका हो वर्षा गर्मी हम शरद सहें,
अपने बच्चों को मुक्त करूँ भारत की धरती कहती है ।

हर शिखर शिखा शिव और विष्णु हर कंकण में शंकर बसता,
कुछ हमें नहीं चहिए तुमसे तुम माँगों केवल ही हमसे ।
मत काटो हरी भरी धरती मत चीरो हमें कहीं लाकर,
हम अपने लिए नहीं कहते सबकी साँसे हममें रहतीं ।

ये धन्य धरा और संस्कृति है ईश्वर की अनोखी यह कृति है,
अब विकृत मत करो इस कृति को सिंदूर बचाने को कहती ।
माता की गोदी भरी रहे बच्चों को रोज यही कहती,
बच्चे ही न जब गोद भरे तब तक कोई माता न बनती ।

जब पिता सभी का ईश्वर है धरती माता भी एक ही है,
जब सूरज चंदा सबके हैं और बादल भी सबको भरता ।
चप्पा चप्पा इस धरती का फल फूल धान्य सब देता है,
सब प्रेम करें सब मिल जायें हिए फाड़ फाड़ माँ कहती है ।

।। अनुभव ।।

न हवाएँ रुकी न ही सूरज रुका,
न तो चंदा भी पूनम में ही रह सका ।
न उतरना या चढ़ना समय का रुका,
न ही सागर का चढ़ना उतरना रुका ।
न रुका सोचना जिसका जो सोच था,
त्रेता सतयुग औ द्वापर भी चलता रहा ।
न रुको तुम चलो और चलते रहो,
जो रुका वह जहाँ का तहाँ रह गया ।
हरेक पल हरेक दिन साल और महीना,
नित्य चलता रहा युग बदलता रहा ।
सोच कुछ और था सोच कुछ और है,
वो बदलता रहा ये बदल जायेगा ।
कभी नरसिंह था कभी वह राम था,
कृष्ण बन करके मुरली पे धुन गायेगा ।
जो मिला है आनंद बस उसमें लो,
ये समय लौटकर के नहीं आयेगा ।

।। अनुभव ।।

स्तब्ध हूँ यह देख कर मैं कौन हूँ,
मैं पुत्र हूँ मैं शिष्य हूँ मैं गुरु या मित्र हूँ,
मैं जीव हूँ या ब्रह्म हूँ या मुक्ति हूँ बंधन स्वयं,
मैं क्यों चला मैं क्यों रुका मैं आँख मूँदें सो गया,
आँखें खुलीं रोने लगा हर बूँद को गिनने लगा,
न गिन सका तो बह गया अनंत में मैं मिल गया,
फिर मेरी आँखें खुली मैं देखकर हँसने लगा,
न शिष्य मैं, गुरु भी नहीं, दुख और सुख भी मैं नहीं,
भोगी न मैं न भोग हूँ न स्वस्थता न रोग हूँ,
न भूत न भविष्य हूँ मैं आज हूँ मैं आज हूँ,
बस रात दिन तो कल्पना न शुक्ल हूँ न कृष्ण हूँ,
सूरज औ चंदा की तरह हर रोज हूँ मैं आज हूँ,
न त्याज्य हूँ न ग्राह्य हूँ न बोलता सुनता न मैं,
हर काल मेरा आज है मैं एक भी अनेक हूँ,
न झूठ हूँ न सत्य हूँ दोनों की सीमा जानता,
मैं सत् हूँ मैं चित् हूँ आनंद हूँ आनंद हूँ,
गुरु रुप मेरा हो गया गुरु रूप में मैं खो गया,
आनंद हूँ आनंद हूँ आनंद हूँ आनंद हूँ,
स्तब्ध था मैं देखकर मैं कौन हूँ मैं कौन हूँ,
आनंद हूँ आनंद हूँ आनंद हूँ आनंद हूँ ।

।। बूँद ।।

बूँद बूँद ही आँसू टपके कौन नहीं पोछा करता है,
बूँद बूँद जब अमृत टपके कौन नहीं उसको पीता है,
बूँद बूँद ही छत से टपके कौन नहीं रोका करता है,
बूँद बूँद ही नल से टपके किसको यह अच्छा लगता है,

बूँद बूँद से घट भर जाता घट को कौन नहीं भरता है,
बूँद बूँद से ज्योति आँख की कौन नहीं डाला करता है,
बूँद बूँद बादल की बूँदें कौन चाह नहीं करता है,
बूँद बूँद की महिमा जाने सागर तो बस वह बनता है,
बूँद बूँद को न कोई जाने सागर उसका ही बहता है ।

बूँद लहर हैं बूँद मेघ है बूँद सृष्टि का ही कारण है,
उद्भव स्थिति और प्रलय में बूँद मूल ही तो कारण है,
बूँद कृपा का सागर बनती कौन नहीं चाहा करता है,
भक्ति बूँद यदि बह जाये आधार कृपा का तब बनता है ।

।। नदियों की समुद्र से आशा ।।

तृप्त होने को चली हैं हिम शिखर से आज नदियाँ,
एक को पाने चली हैं देखती आई हैं सदियाँ ।
भावनाएँ हैं अनेकों सब समर्पण चाहती हैं,
वारिधि पयोधि जलनिधि जलधि, अर्णव में जाती हैं ये नदियाँ ।
शैलेशजा हैं दिव्य सुन्दर मधुर सलिल बहा रही हैं,
हम भगिनि बह जायें और मिल जायें अपने प्राण पति से ।
नदीश में भी सब मधुरता का विरद सब चाहती हैं,
हे मेरे प्राणों से प्यारे तुम अनोखे एक काफी ।
नीलिमा है व्योम सी लहरें भी कुछ तो चाहती हैं,
बस कसैलापन तुम्हारा हम मिटाना चाहती हैं ।
हम तुम्हें जब भी मिलें या तुम हमें जब भी मिलो प्रिय,
अधरों में टपके बस मधुरता हम सभी ये चाहती हैं ।

।। अनुभव ।।

दोष नहीं दो कभी किसी को धारों पर चलना होता है ।
कारण कभी कोई होता है, निर्णय तो अपना होता है ।
दिशा कोई भी बुरी नहीं है विदिशा भी तो कहीं रहेगी ।
उदय यदि है लक्ष्य हमारा पूरब मुख करना पड़ता है ।
राम राज्य हो लक्ष्य भले ही लंका तक चलना पड़ता है ।
गुरु पितु मातु प्रजा मंत्री गण सबकी सब सुनना पड़ता है ।
रामराज्य तो तभी बनेगा भरत लखन बनना पड़ता है ।
किसको कितनी मिली संपदा ये कायर देखा करता है ।
सीता की अनमोल धरोहर केवट अस्वीकृत करता है ।
खारा जल सागर का जैसा मीठा तो तब ही होता है ।
बादल बन ऊपर उठ करके जब अमृत वर्षा करता है ।
शरण पड़े बिन राम चरण में पार नहीं कोई होता है ।

।। अनुभव ।।

हम तुम्हारे आँसुओं की बस गवाही दे सकेंगे ।
कारणों की तुम कहो तो हम सफाई दे सकेंगे ।
प्रेम की उस रीति को जाना है न ही जान पाये ।
हम तुम्हारे प्रेम की अर्जी लगाते ही रहेंगे ।
यदि पहुँचना सागरों में बूँद एक भी न बहाओ ।
इन दृगों की कल्सियों को व्यर्थ न ऐसे बहाओ ।
हम तुम्हारी भावनाओं की व्यथा को कह सकेंगे ।
कोई भी दरबार हो या निपट संसार हो ।
भावना का भाव करते हर गली में सब मिलेंगे ।
तौलते और नापते सब लोग इस जग में मिलेंगे ।
न कोई सीमा हो जिसकी न कोई ही तौल पाया ।
हम तुम्हें उस प्रेम सागर में बहाकर ले चलेंगे ।

।। पृथ्वी - सूर्य ।।

रसाल पात बीच से थोड़ी आँख मींच के ।
दिवाकर ने आ करके दस्तक सी दी अभी ।
देखते थे वे मुझे, मैं देखती थी बस उसे ।
मैं देखती ही रह गई, न जाने वे कहाँ छुपे ।
प्रत्येक अंग अंग पे, अनंग थे अनंद वे ।
मैं सोचती सी रह गई वे देख कर चले गये ।
सूर्य क्यों बने प्रिय चन्द्रमा बनो जरा ।
जरा सा एक रात तो तुम्हें भी मैं निहार लूँ ।
निहार लूँ सँवार लूँ दृगों से एक हार दूँ ।
बस दिलासा दे गये अरमान मान रह गये ।
मैं बालकों से खेलती न बोलती न चालती ।
मेरे प्रिया चले गये निशा निशान दे गये ।
आशा के आँसू भर गये नदियाँ बने से बह गये ।
सागर बिना आँसू सभी मेहमान से चले गये ।

।। बच्चे हैं आँखों के तारे ।।

हमको तो बच्चे हैं प्यारे, लगते हैं आँखों के तारे ।
सबका सच्चा मन लगता है, सबका सच्चा दिल लगता है ।
प्रभु का रूप मुझे दिखता है, नन्हें मुन्ने प्यारे प्यारे ।
हमको तो बच्चे हैं प्यारे, लगते हैं आँखों के तारे ।

जो बोलें सच्चे दिखते हैं, जो पूछो वह कह देते है ।
कुछ भी नहीं बना के कहते, बुरा किसी का न वे करते ।
भाव परम कोमल हैं इनके, अंग अंग हैं न्यारे न्यारे ।
हमको तो बच्चे हैं प्यारे, लगते हैं आँखों के तारे ।

राम रूप इनका दिखता है, कृष्ण रूप भी कभी दिखाते ।
पशु पक्षी भी इन्हें देख कर, कुछ ऐसे घुल मिल जाते हैं ।
जैसे उनके ही हों प्यारे, सारे जग को बच्चे प्यारे ।
हमको तो बच्चे हैं प्यारे, लगते हैं आँखों के तारे ।

जैसे ये तुतला कर बोलें, हम सब बैसे बन जाते हैं ।
अंगुली पेट लगा जरा दो, खिल खिल करके हँस जाते हैं ।
जेब खोलकर ले जाते हैं, पापा के पैसे ये सारे ।
हमको तो बच्चे हैं प्यारे, लगते हैं आँखों के तारे ।

।। तिरंगे की व्याख्या ।।

श्वेत रंग है शांत और अंतर्दर्पण का,
तन मन धन का भाव सर्वस्व समर्पण का,
हरी प्रकृति है हरा भरा और हृदय देश है,
रक्त शौर्य और अथक पराक्रम को दर्शाता है ।

तीनों मिलकर धीर वीर गंभीर बनाते,
चलते ही रहना बस इसका मध्य चक्र है,
श्रुति के सूत्र चरैवेति को ही दर्शाता,
आदि मध्य और अंत त्रिदेवों को दर्शाता ।

लहराता फहराता वायु के अनुशासन पर,
मुक्त और उन्मुक्त छत्र है नील गगन का,
पृथ्वी का है क्षमा भाव पवित्रता गंगा जैसी है,
दीप जलाकर अग्नि तत्त्व को भी दर्शाता ।

सबको देख खुशी से लहराता फिरता है,
ऋतुओं की विपरीत परिस्थिति को सहता है,
श्रद्धा भक्ति और विश्वास के रंग तिरंगे,
जय हो भारत देश देश की जय हो गंगे ।

।। उत्साह प्रेरणा गीत ।।

नदी निरन्तर चलती रहती अपने प्रियतम से मिलने को,
पूर्ण समर्पण कर देती है नाम रूप अपना सागर को ।
सुख पाती है मिल जाती है अपने प्रिय अनंत के तन से,
संग्रह नहीं प्रकृति भावना भाव निरन्तर चलते रहना ।
सूर्य चन्द्र और वायु निरंतर सरिता बन चलते रहते हैं,
वृक्षों में फल आते जाते पत्ते नित्य बदल देते हैं ।
कर्म योग और पर सेवा को मूक रहें पर हमें सिखाते.
काल निरन्तर चलते रहता बच्चों तुम क्यों ठहर गऐ हो ।
चलते रहना बढ़ते रहना बेटा तुम क्या सोच रहे हो,
विश्व शांति की क्रान्ति भावना को तुम आगे रोज बढ़ाओ ।
रामराज्य की व्यापकता और वंशज भारत के कहलाओ,
हिंसा और प्रतिस्पर्धा का लेश नहीं है हममें तुममें ।
चलते जाओ बढ़ते जाओ नहीं ठहरना है जीवन में,
मेरे प्यार दुलारे बच्चों ममता बस है मेरी तुममें,
मातु पिता परिवार देश सब गर्व करें तुम बढ़ते जाओ ।